संपर्क भाषा भारती

वर्ष 1990 से प्रकाशित कथा साहित्य-समाज को समर्पित राष्ट्रीय मासिकी, अप्रैल—2023, RNI-50756

वर्ष-33, अंक-390

इस अंक में :

- राम सौं बड़ौ है कौन : डॉ रामशंकर भारती
- राम मेरे आराध्य : पद्मा अग्रवाल
- गण्डकी की शिलाओं से राम लला : सोनम लववंशी
- गांधी जी की हमसफर कस्तूरबा : आकांक्षा यादव
- योग (तमिल कथा) : आरा।चूड़ामणी अनुवाद एस भाग्यम शर्मा
- कसरत वाला घोड़ा : कथा-श्यामल बिहारी महतो
- बाणशैय्या (बंगाली कथा) : गिरिमा घारेखान अनुवाद: रजनीकान्त एस. शाह
- दीनू काका की हँसी : कथा-रामानुज अनुज
- ज़माना मुझे सुने : सुरेन्द्र सुकुमार

60/-

आवरण कथा : राम सौं बड़ौ है कौन ...?

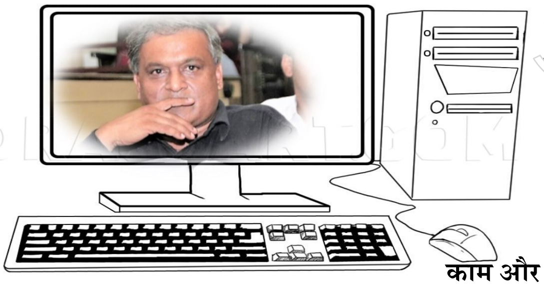

अपनी बात...

प्रिय पाठकगण,

सुरेंद्र सुकुमार और अलीगढ़ यात्रा...

2005 से 2007 के बीच अलीगढ़ कई बार आना हुआ। नीरज जी से जनकपुरी में उनके निवास पर कई दिनों तक लंबी बातचीत की। काफी लंबी अवधि के वीडियो रिकॉर्ड हुए। इन्हें आप मेरे यूट्यूब चैनल पर देख सकते हैं। ऐसा नहीं कि सुरेंद्र फेसबुक पर सब कुछ पसंदीदा ही लिखते हैं।

उनके आलेख/पोस्ट में आपको विविध रंग मिलेंगे। कहीं साधारण सा कथन होगा तो कहीं ओशो के शब्दों का सहज सरल संदेश तो कहीं आप को कोई कथन बेहद बचकाना भी लग सकता है। सुरेंद्र, आपके हिसाब से पोस्ट नहीं लिखते वे अपनी मिसाइल की दिशा खुद तय करते हैं।

बानगी देखिए :

कामातुर मादा से एक गंध आती है
जिसे फ़्यूरोमोन्स कहते हैं
पशु इसको पहचानते हैं पर पुरूष एक प्रतिशत भी नहीं पहचान पाते हैं

हिन्द्वत इक भोला कबूतर है
सैकयुरिलिज़्म इसका शूटर है
इस्लाम क्या बिगाड़ेगा भला इसका
इसका दुश्मन इसके भीतर है

मकर संक्रांति को जो नहाएगा
वो नर्क में स्थान पाएगा

स्त्री और पुरूष के बीच केवल काम सम्बंध होते हैं
संस्कारित मर्यादा ही उनको पावन सम्बंधों में बांधती है

औरत को पैर की जूती समझने वालो
औरत आपको जूती का पैर समझती है

शहरों में जिस व्यक्ति को वूमैनाइज़र कहते हैं
गाँवों में उसे छिनरा कहते हैं

काम और कामुकता
दोनों में ज़मीन आसमान का अंतर है
काम जीवन का सृजन है
कामुकता जीवन का विनाश है

भारत की 80 प्रतिशत स्त्रियाँ माँ बनने के बाद
शरीर के प्रति अनासक्त हो जाती हैं

भारत की पचास प्रतिशत महिलाएँ आर्थिक रूप से स्वतंत्र न होने के कारण पति से बंधी रहती हैं

आज विश्व साड़ी दिवस है
प्रभु करें कभी निर्वसन दिवस भी आए

मर्यादित स्त्री के साथ
समागम का सुख नहीं आता है

शास्त्रों ने संभोग के आनंद को
ब्रह्मानंद सहोदरः
कहा है
यानिकि ब्रह्मप्राप्ति का जो आनंद है उसका उदर जाया
यह सच भी है

किंतु, इसके उलट, उनकी पोस्ट तत्व, मीमांसा और गहन रहस्यवाद को भी लिए हुए होती है।

22 फरवरी को सुबह साढ़े तीन बजे ही उठ गया। जाती हुई फरवरी की सुबह ठंडी थी।

मुझे यात्रा का सामान ले कर नहीं जाना था। पर दिल्ली की सर्दी के चलते एक जैकेट अवश्य पहन ली। एक छोटा सा लगेज बैग रख लिया ताकि सुरेंद्र सुकुमार से प्राप्त सामग्री को लाया जा सके।

पांच बजे नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के लिए निकला।

सुबह सुबह बीस मिनट का सफर था।

प्लेटफार्म नंबर नौ पर लखनऊ शताब्दी छह बजने में दस मिनट पर लगी और छह बज के दस मिनट पर अपने निर्धारित समय पर रवाना हो गई।

अलीगढ़ आने से पहले सुरेंद्र जी का दो बार फोन आ गया, पूछा कि कहां तक पहुंचे।

सुरेंद्र सुकुमार के बारे में मुझे मित्रों ने आगाह किया था।

"फक्कड़ इंसान हैं, नशे में जाने क्या क्या पोस्ट कर देते हैं।”

फोन पर बात हुई थी और जब मैने उन्हें अलीगढ़ आने की बात बताई थी तो मेहमानबाजी के लिए उन्हों ने मुझ से पूछा भी था "कुछ लेते भी हैं क्या?" वे संभवतः इंतजाम करके रखना चाहते थे।

"नहीं! मैं लेता नहीं हूं। धन्यवाद।"

"अरे! कभी तो शुरू करोगे?"

"अब जिंदगी के इस दौर में क्या शुरू करूंगा?"

"अच्छा! मीट चलेगा?"

"नहीं! बस दो रोटी।"

वो मुस्कुरा दिए थे।

सुरेंद्र सुकुमार के "कुछ लेते हो?" पर एक घटना याद आगई।

1985 में जुलाई के अंतिम सप्ताह में मेरे दो प्रमुख आलेख देश के अति प्रतिष्ठित पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए थे।

पहला था नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली से रविवासरी अंक में ड्रग्स पर पूरे पृष्ठ का आलेख। इसे प्रयाग शुक्ल जी ने प्रकाशित किया था।

इसके प्रकाशन के अगले ही सप्ताह साप्ताहिक हिंदुस्तान में शीला झुनझुनवाला जी ने "सरकारी जुआ लॉटरी" पर मेरी आवरण कथा प्रकाशित कर दी।

चूंकि, उस दौर में प्रकाशन ही मीडिया था। और हिंदी क्षेत्र का हर पढ़ा–लिखा कहलाने वाला इन पत्र–पत्रिकाओं को दिल से लगा कर रखता था। इन्हें नजरंदाज नहीं कर सकता था।

उसी समय में श्री विष्णु राजौरिया, जो अर्जुन सिंह के अति विश्वसनीय थे "शिखरवार्ता" पत्रिका निकालने की सोच रहे थे।

(क्रमशः)

सादर,

सुधेन्दु ओझा

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा।

अनुक्रमणिका अप्रैल—2023

क्रम सं:	शीर्षक :	लेखक :	पृष्ठ संख्या :
1	संपादकीय		2
2	पाठकनामा/सभा समाचार		4
3	महिला विमर्श : आज़ाद ख़याली पर मजहब भारी	सोनम लववंशी	5-7
4	कविता	गिरेन्द्र सिंह भदौरिया 'प्राण'	7
5	मातृत्व	पद्मा अग्रवाल	8
6	लघुकथा : गरीब	मनीषा जोशी मनी	9-10
7	कविता	अर्चना गौतम मीरा	10
8	कविता	आलोक रंजन	10
9	गांधी जी की हमसफर कस्तूरबा...	आकांक्षा यादव	11-15
10	लघुकथा : हक़दार	नीना सिन्हा	16
11	गोदना : एक कला	प्रतिमा पुष्प	17-18
12	तमिल कथा : योग (आर चूड़ामणि)	अनुवाद : एस भाग्यम शर्मा	19-24
13	कविता	इन्दु सिन्हा 'इन्दु'	24
14	कविता	संदीप मिश्रा 'सरस'	24
15	आवरण कथा : राम सौं बड़ौ है कौन ?	डॉ रामशंकर भारती	25-28
16	आवरण कथा : राम मेरे आराध्य	पद्मा अग्रवाल	29-30
17	आवरण कथा : गण्डकी नदी की शिलाओं...	सोनम लववंशी	31-32
18	बंगाली कथा : बाणशैय्या (गिरिमा घारेखान)	रजनीकान्त एम शाह	33-38
19	कविता	संजय कुमार सिंह	38
20	कविता	संघमित्रा रायगुरु	38
21	पुस्तक समीक्षा : अनुभूतियों का ककहरा	कल्पना दीक्षित	39-41
22	लघुकथा : मीरा	अनीता शरद झा	41
23	आधी दिहाड़ी	ब्रजेश श्रीवास्तव	42
24	कथा : कसरत वाला घोड़ा	श्यामल बिहारी महतो	43-45
25	कविता	चन्द्र काँटा सिवाल	45
26	कथा : साहब का मास्क	डॉ गोपाल राजगोपाल	46-48
27	ज़माना मुझे सुने...	सुरेन्द्र कुमार सुकुमार	49-50
28	कथा : दीपू काका की हंसी	रामानुज अनुज	51-53
29	कविता	योगेंद्र पाण्डेय	54
30	कविता	अशोक जैन	54
31	कविता	सूर्य प्रकाश मिश्र	54

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक, मुद्रक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली-110092

फोन : 9868108713

पाठकनामा

आदरणीय श्री

सादर अभिवादन !

स्त्रियों की दशा और दिशा, रुकावटें और प्रगति पर सुश्री प्रतिभा शर्मा पुष्प के साथ नारी विषयक अन्य आलेख, कविताएँ और लघुकथाएँ नारी-यथार्थ के विभिन्न पहलुओं को सच्चाई और संवेदना से व्यक्त करते हैं। आकांक्षा यादव जी का लेख " भाषाओं पर बढ़ता ख़तरा " हमें सचेत-सावधान और सही क़दम उठाने का आह्वान करता है। हमेशा की तरह पाठकों की समझ और संवेदनाओं को बढ़ाता एक उपयोगी अंक जिसके लिए मेरी आत्मीय बधाई !

आपका /

केशव शरण

□□□

संपर्क भाषा भारती के जनवरी अंक के कवर पेज पर गाय को केंद्र में लेकर बनाई श्री कृष्ण की पेंटिंग ने मनमोह लिया। पत्रिका का 387 वां अंक सुंदर साज-सज्जा के साथ प्रस्तुत किया गया है। आज़ादी के अमृत महोत्सव और शहीद -ए-आज़म उधम सिंह पर लिखा आकांक्षा यादव का लेख पठनीय और संग्रहणीय है। अरुण तिवारी का अनुपम मिश्र पर लिखा लेख 'जब देह थी तब अनुपम नहीं, अब देह नहीं पर अनुपम है' बहुत ही अनुपम है और पढ़ कर अनुपम जी के बारे में बहुत कुछ जानने को मिलता है। डॉक्टर सरला सिंह की कहानी 'कटहल' का कथानक सरल और आम जीवन से जुड़ा है। डॉ रमाशंकर भारती लिखित 'लोक परंपरा में फागुन' भारतीय संस्कृति, लोक, सौंदर्य और ऋतुराज के बासंती रंगों से सरोबार है। विनोद क्वात्रा, रामानुज अनुज की कहानियां पाठक को बांधे रखने में सक्षम हैं। कुल मिलाकर जनवरी अंक पठनीय और संग्रहणीय है।

नीरू मित्तल 'नीर', कोठी नं।40 सेक्टर 15, पंचकूला 134113, 9878 779743

सभा समाचार

अनिल विज को पत्रिका का 'स्वर्ण जयंती विशेषांक' भेंट

हरियाणा गृह एवं स्वास्थ्य मंत्री अनिल विज को जन्मदिन पर 51 वर्षों से नियमित प्रकाशित होने वाली पत्रिका का 'स्वर्ण जयंती विशेषांक' भेंट किया...

अंबाला :

'शुभ तारिका' एवं 'कहानी लेखन महाविद्यालय' संस्थान से जुड़े अंबाला छावनी के साहित्यकार विजय कुमार ने माननीय श्री अनिल विज (गृह एवं स्वास्थ्य मंत्री, हरियाणा सरकार) के जन्मदिन पर शुभकामनाओं के साथ पिछले 51 वर्षों से नियमित प्रकाशित हो रही पत्रिका का 'स्वर्ण जयंती विशेषांक' भेंट किया। पत्रिका की संपादक श्रीमती उर्मि कृष्ण हैं तथा विजय कुमार सह-संपादक। इसी अवसर पर विजय कुमार ने अपनी पुस्तक 'जन्मदिन' भी श्री अनिल विज को भेंट की।

बता दें कि 'शुभ तारिका' के संस्थापक डॉ।महाराज कृष्ण जैन ने यह पत्रिका 50 वर्ष पूर्व एक पृष्ठ से आरंभ की थी। 5 जून 2001 को डॉक्टर महाराज कृष्ण जैन के स्वर्गवास के बाद से उनकी धर्मपत्नी श्रीमती उर्मि कृष्ण इस पत्रिका को निकाल रही हैं। इसके वर्ष में दो-तीन विशेषांक प्रकाशित हो रहे हैं। अब तक इस पत्रिका ने 'कहानी विशेषांक', 'लघुकथा विशेषांक', 'हास्य व्यंग्य विशेषांक', 'डॉ।कृष्णांक', 'मीडिया विशेषांक', 'हरियाणा विशेषांक', चंडीगढ़ विशेषांक, 'मध्य प्रदेश विशेषांक', 'हिमाचल प्रदेश विशेषांक' आदि निकल चुके हैं। इस समय पत्रिका 32-40 पृष्ठों की नियमित प्रकाशित हो रही है। विशेषांक 100 से 150 पृष्ठों तक के होते हैं। पत्रिका के विषय में अधिक जानकारी के लिए विजय कुमार (9813130512) से संपर्क किया जा सकता है।

□□□

सोनम लववंशी

आज़ाद ख़्याली पर मज़हब भारी

किसी भी समाज की वास्तविक स्थिति उस समाज में रहने वाली स्त्रियों की दशा देखकर ज्ञात की जा सकती है। तभी तो स्वामी विवेकानंद जी ने कहा है कि, "जो जाति नारियों का सम्मान करना नहीं जानती, वह न तो अतीत में उन्नति कर सकी और न आगे उन्नति कर सकेगी।" वास्तव में स्त्री, इस धरा पर सृजनात्मकता की प्रतीक है। स्त्री ही है, जो समाज की खेवनहार है। विज्ञान की देन ने स्त्री और स्त्रीत्व की जगह लेने की भले ही कोशिश की हो, लेकिन इसकी भी अपनी एक सीमा है। वंशवृद्धि और वंश को आगे ले जाने में आज भी महिलाओं की महिती भूमिका है। स्त्री ही है, जो कई रूपों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराती है। जन्म के समय वो किसी की बेटी होती है, थोड़ी बड़ी होती है तो बहन, युवावस्था में प्रेमिका या किसी की पत्नी और एक समय बाद माँ

बनकर स्वयं बच्चें का पालन-पोषण करती है। सच पूछिए तो एक स्त्री एक ही जीवन में कई जीवन जीती है। फिर इस दौरान आने वाले सुख -दुःख उसके लिए विशेष मायने नहीं रखते हैं। स्त्री की बस एक ही इच्छा होती है कि उसका घर-परिवार सुखी रहे। ऐसे में एक व्यक्ति के नाते, एक सामाजिक प्राणी की बदौलत हमारी भी ये जिम्मेदारी बनती है कि हम उसे अबला नहीं, बल्कि सबला के रूप में स्वीकार करें। स्त्री -पुरुष दोनों एक-दूसरे के सहभागी है और जब हम पुरुष-स्त्री सामान्य रूप में न लिखकर अक्सर 'स्त्री-पुरुष' ही लिखते हैं। जिसमें स्त्री पहले आ रहा है। फिर हम उस स्त्री को अबला क्यों मान लेते हैं? क्यों हम यह मनाने पर विवश हो जाते हैं, कि -"अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी, आँचल में है दूध और आँखों में पानी।"

अब यह स्थिति बदलनी चाहिए और इसकी शुरुआत कहीं न कहीं हो चुकी है। महिलाओं ने मोर्चा खोल दिया है। हिंदू समाज में महिलाओं

को अधिकतर अधिकार पुरुषों की भांति वैदिक काल से ही मिले हुए थे, लेकिन समय, काल औऱ परिस्थितियों के आवेग में आकर कई बार हिंदू समाज की महिलाओं के अधिकारों पर भी कुठाराघात हुआ। प्राचीन काल में भारतीय नारी को लक्ष्मी का स्वरूप माना जाता था, धीरे -धीरे परिस्थितियों में बदलाव हुआ और मुग़लकाल में स्त्रियों की दशा बिगड़ती चली गई। फिर अंग्रेजी हुकूमत के आगमन और देश की आज़ादी के बाद स्वतंत्र भारत में शनैः शनैः महिलाओं को पुनः स्वतंत्रता और समानता का हक मिला। जिसकी बदौलत आज स्त्री समाज धरती से लेकर आकाश तक बुलंदी छू रही हैं। दूसरी तरफ मुस्लिम समाज में आज भी महिलाएं कई तरीक़े से मजहबी बंदिशों से घिरी हुई हैं। जिससे आज़ादी वक्त की मांग है और हालिया दौर के घटनाक्रम देखकर यह सहज अन्दाज़ा लगाया जा रहा है कि इसके लिए महिलाएं अब आगे भी बढ़कर आ रही हैं। मुस्लिम समाज की महिलाएं बुर्क़े का विरोध कर रही हैं। ईरान में लंबे समय से चल रहे विरोध को दुनिया ने बड़े नज़दीकी से अनुभव किया।

ईरान को छोड़ हम अपने देश की ही बात करें तो मुस्लिम देश के भीतर सबसे बड़ा अल्पसंख्यक समुदाय है और सबसे बड़ी बात

ईरान को छोड़ हम अपने देश की ही बात करें तो मुस्लिम देश के भीतर सबसे बड़ा अल्पसंख्यक समुदाय है और सबसे बड़ी बात यह है कि आज भी इक्कीसवीं सदी के भारत में इस समुदाय की महिलाएं अपेक्षाकृत अधिक पिछड़ी हुई है। मुस्लिम समुदाय की महिलाओं की स्थिति और वेदना की समझ विकसित करना है, तो सच्चर कमेटी की रिपोर्ट इस विषय में विशेष जानकारी देती है। सच्चर कमेटी के अनुसार मुस्लिम समाज विशेषकर मुस्लिम स्त्रियां काफ़ी पिछड़ी हुई हैं और जब हम इस पिछड़ेपन का कारण ढूढ़ते हैं, तो इसमें धर्म और पर्दाप्रथा यानी बुर्क़े का अहम योगदान झलकता है। ऐसे में अगर मुस्लिम महिलाओं ने इस्लामिक राष्ट्रों में बदलाव के लिए मुहिम छेड़ दी है और उन्हें सफलता भी मिल रही है तो भारत की मुस्लिम महिलाओं को भी अपने हक की आवाज बुलंद करनी होगी, क्योंकि हमारा संविधान समानता की बात करता है।

स्त्रियां किसी भी समाज से जुड़ी हो। अक्सर वो परम्पराओं, सिद्धान्तों और नियमों की बेड़ी में बंधी होती हैं और जब यही परंपरा तोड़कर आधी आबादी पूरी सांस लेने की कोशिश करती है। फिर उसके ऊपर कई प्रकार के लांछन लगाए जाते हैं। कई बार तो होता यह है कि पूरा समाज स्त्रियों के विरोध में खड़ा हो जाता है। वर्तमान समय में देखें तो मुस्लिम परिवारों में स्त्री की स्थिति अत्यंत पिछड़ी और दयनीय है, लेकिन इसी बीच कुछ बदलाव की बयार वैश्विक स्तर पर देखने को मिली है। जो एहसास दिलाती है कि जल्द ही मुस्लिम समुदाय की महिलाएं भी स्वतंत्र और निर्भीक होकर अपना जीवन जी पाएंगी। आज के दौर की बात करें, तो मुस्लिम समाज की स्त्रियां तलाक संबंधी अधिकार, धार्मिक कट्टरता, बहु -पत्नी विवाह, पर्दा प्रथा और कई अन्य मसलों पर अपने को निम्न दर्ज़े का पाती हैं। कई बार स्थिति ऐसी हो जाती हैं कि उन्हें पढ़ने, लिखने, संगीत और टीवी देखने तक की आज़ादी नहीं होती। जो कहीं न कहीं एक विकसित होती सभ्यता पर सवाल खड़े करती है।

इसी बीच ईरान में धर्म की नाजायज बन्दिशें तोडऩे के लिए मुस्लिम महिलाएं सड़कों पर उतरने में गुरेज नहीं की। जिसका नतीजा यह

बनाने का काम करता है।

हुआ कि ईरान जैसे इस्लामिक कट्टरपंथी देश को भी झुकना पड़ा। इतना ही नहीं सदियों से हम सुनते आ रहें हैं कि धार्मिक न्यायाधिकारी के रूप में काम करने वाले काजी के पद पर पुरुषों का ही वर्चस्व रहा है लेकिन अब मुस्लिम महिलाएं भी काजी बन रही हैं। अफरोज बेगम और जहांआरा ने बाकायदा महिला काजी की ट्रेनिंग ली है।

नादिरा बब्बर, शबाना आजमी, नजमा हेपतुल्लाह, मोहसिना किदवई जैसी कई ऐसी मुस्लिम महिलाएं भी हैं जिन्होंने अपने बूते कामयाबी हासिल कर अपना अलग मुकाम बनाया है। इसी बीच सऊदी अरब सरकार का उदारवादी चेहरा भी दुनिया के सामने आया है।

एक समय तक सऊदी अरब कड़े प्रतिबंधों वाला इस्लामिक देश रहा है, लेकिन कुछ वर्षो से स्त्रियों को अधिकार देने के मामले में भी यह देश उदार बना है। यहां महिलाओं से जुड़े कई नियमों में बदलाव किए जा रहे हैं ताकि दुनिया की नजरों में सऊदी अरब 'खुले विचारों वाले मुल्क' के रूप में पहचान बना सके। हाल ही में मशहूर फुटबॉलर क्रिस्टियानो रोनाल्डो को लेकर सऊदी अरब का एक कानून चर्चा में रहा। गौरतलब हो कि कोई भी पुरूष बिना शादी के सऊदी अरब में नहीं रह सकता, लेकिन रोनाल्डो और उनकी गर्लफ्रेंड जॉर्जीना के लिए सऊदी अरब ने छूट प्रदान की।

जो यह दर्शाता है कि वक्त के साथ बदलाव अवश्यम्भावी हो जाता है और दुनिया अब इसी दिशा में बढ़ चली है। जहां से स्त्री समाज की प्रगति के नए रास्ते खुलते हैं और यह एक सभ्य समाज के लिए आवश्यक है।

□□□

लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092

दैवीय रूप नारी

जो प्रेमशक्ति की मायावी,
जाया बनकर उतरी जग में।
आह्लाद बढ़ाती हुई बढ़ी,
बनकर छाया छतरी मग में।।

बलिदान त्याग की महामूर्ति ,
ममता की सागर धैर्यव्रता।
करुणाकरिणी दैवीय दीप्ति,
साहस की जननी शान्ति सुता।।

हे विनयशालिनी युगमुग्धा,
भू भुवनमोहिनी प्रियंवदा।
रागानुरागिणी कनक काय,
परपोषी तोषी अलंवदा।।

नारी के मन की कोमलता,
कमनीय देह के आकर्षण।
मधुरिम सुर नयनों के कटाक्ष,
लज्जा के मृदु हर्षण-वर्षण।।

उद्दाम - काम उन्मत्त - प्रेम,
दुर्दम्य ललक का विकट जाल।
उस पर प्रजनन का दिव्य कोष,
पौरुष को कर देता निढाल।।

इस तन का मादा रूप देख,
दुनिया ने नारी नाम दिया।
नर ने भी जीवन शक्ति समझ,
अर्द्धांग मान कर थाम लिया।।

नारी के गुण ही नारी को,
दुर्बल या सबल बनाते हैं।
इनके कारण ही नर - नारी,
दोनों सम्बल बन जाते हैं।।

नारी के गुण के कारण ही,
नर नरपिशाच बन जाता है।
नारी के गुण के कारण ही,
नर नारिदास बन जाता है।।

नारी के गुण के कारण ही,
रण भीषण हुए जमाने में।
नारी के गुण के कारण ही,
टल गये युद्ध अनजाने में।।

नारी नर की है प्राण शक्ति,
दोनों की प्रेम पगी डोरी।
नारी नर की है शक्ति भक्ति,
नारी ही नर की कमजोरी।।

दोनों दोनों के हैं पूरक ,
दोनों दोनों के हितकारी।
कोई भी छोटा बड़ा नहीं,
नारी भारी नर भी भारी।।

गिरेन्द्र सिंह भदौरिया "प्राण"

मातृत्व

पद्मा अग्रवाल

निम्न मध्यवर्गीय प्राइमरी स्कूल की अध्यापिका सुषमा जी आज पहली बार ट्रेन के ए।सी।कूपे में बैठने के लिये छोटे बच्चे की तरह उत्साहित थीं। उन्होंने सदा कल्पना लोक में विचरण करते हुये ए.सी।कूपे की ठंडक का अनुभव किया था। बेटी की जिद और उसी की अनुकंपा से उन्हें आज यह सौभाग्य मिलने वाला था। वह अपने जीवन की इस उपलब्धि पर गौरवान्वित महसूस कर रही थीं। उनके मन में अभिजात्य वर्ग के साथ कदम मिलाकर चलने में अपार संकोच का अनुभव हो रहा था। अपनी बर्थ पर पहुंचते ही उन्होंने अपने चारों ओर नजरें घुमाई, वहाँ सभी यात्री अपनी दुनिया में खोये हुये थे। उनके साथ उनकी बेटी मिनी और उसके बच्चे सनी मनी थे, जिनकी उम्र 4 और 6 वर्ष थी।

बच्चे तो आखिर बच्चे थे बस शुरू हो गई धमाचौकड़ी, कभी भूख लगी है तो कभी पानी की प्यास। कभी इधर भाग तो कभी उधर, सन्नाटे को चीरते हुये बच्चों के कोलाहल के कारण वह लज्जा का अनुभव कर रहीं थीं।

उन्होंने बच्चों को डॉटने के अंदाज में इशारे से चुप बैठने को कहा। आंखों ही आंखों के इशारे से उन्होंने अपनी बेटी से भी बच्चों को शांत रखने को कहा था। वैसे तो इन बच्चों की बाल सुलभ क्रीड़ायें सभी यात्रियों को मुस्कराने पर मजबूर कर रहीं थीं। फिर भी शांत वातावरण में बच्चों का शोरगुल उन्हें अटपटा लग रहा था। सामने की बर्थ पर एक अभिजात्य वर्ग की दक्षिण भारतीय महिला बैठी हुई थीं, उनकी उम्र लगभग 45 वर्ष ,पक्का सांवला रंग, गोल्डेन फ्रेम के चश्मे के अंदर से झांकती बड़ी-बड़ी आंखें, नुकीली नाक के बांई ओर डायमंड की दमकती लौंग, लिपिस्टिक से रंगे हुये होंठ ,घने काले घुँघराले केश ,गले में लगभग 15 तोले की मोटी लंबी सोने की चेन,और साथ में उतना ही लंबा भारी मंगलसूत्र, कलाई में डायमंड के चमचमाते कंगन, लाल चौड़े बार्डर वाली प्योर सिल्क की साड़ी उनके धनी होने की कहानी कह रही थी। वह फर्राटेदार इंग्लिश में अपने पड़ोसी यात्री के साथ धीरे धीरे बात कर रहीं थीं।

उनके व्यक्तित्व से आतंकित होकर वह स्वयं में ही सिमट कर बैठ हुईं थीं। अनायास उन्होंने उनके साथ अपनी टूटी फूटी हिन्दी में वार्तालाप आरंभ किया। बातचीत का कारण सनी था। बातों ही बातों में वह सुषमा जी से घुलमिल गईं। वह हिन्दी भाषा समझ लेतीं थीं लेकिन बोलने में कच्ची थीं।

लक्ष्मी अयंगर ने अपना परिचय देते हुये बताया कि वह आई।ए।एस ।अधिकारी की पत्नी हैं। वह अपने भाई के पास बेंगलुरु जा रही हैं। वह बार बार अपने पति व्यंकटेश की बातें कर रहीं थीं। उनकी पसंद नापसंद का जिक्र कर रहीं थीं। वह सनी और मनी के आकर्षण में बंध गई थीं। वह बच्चों के साथ उन्मुक्त होकर बच्चों की तरह उत्साहित होकर खेल रहीं थीं। कभी उनके साथ तुतला कर बात करतीं, कभी बॉल खेलतीं। उनके संग वह स्वयं बच्चा बनी हुई थीं।

दोनों बच्चों के साथ खेलते हुये उनकी खुशी और उल्लास देखने योग्य था। सुषमा जी के मन में उत्कंठा हुई और वह लक्ष्मी जी से पूछ बैठीं थीं,'' आपके बच्चे?''

उनके इन दो शब्दों को सुनते ही उनकी खुशी काफूर हो गई थी, उनका चेहरा विवर्ण होकर सफेद पड़ गया था। ओर वह एकदम गंभीर हो उठी थीं। वह घबरा गईं कि उन्होंने कोई बड़ी गलती कर दी है।

वह स्वयं अपराध बोध से पीड़ित हो उठीं थीं, संभवतः उन्होंने उनकी कोई दुखती हुई रग छेड़ दी थी। कुछ लम्हों के लिये वह एकदम चुप हो गईं थीं। उनकी आंखें भीग उठीं थीं, थोड़े अंतराल के बाद सामान्य होने की कोशिश करते हुये बोलीं,'' वह उच्च शिक्षा प्राप्त गोल्ड मेडलिस्ट धनी महिला हैं।

उनके पास कोठी, बंगला, कार, इज्जत, शोहरत, नौकर चाकर सब कुछ है। नहीं है तो एक अदद अपना बच्चा...।एक बार कुछ उम्मीद हुई थी लेकिन एक हादसे में सब कुछ समाप्त हो गया।

ससुराल पक्ष के दबाव में पति बच्चा गोद लेने के लिये राजी नहीं हुये। उनका कहना है कि पराया खून पराया ही होता है। वह कभी अपना नहीं हो सकता। इसलिये मन के किसी कोने में मां न बन पाने का दर्द कचोटता कहता है। धन,पद प्रतिष्ठा सब कुछ होते हुये भी मातृत्व के बिना अपने को अधूरा समझतीं हूँ। अपने अधूरेपन से निराश होकर समाजसेविका बन गई हूँ। गरीब बच्चों को पढा कर उनकी सेवा के माध्यम से अपनी कुंठा और अपने अधूरे पन को भूलने का प्रयास करती रहती हूँ।''

उनकी बातें सुषमा जी के दिल की गहराई में उतर गईं थी। वह स्तंभित होकर सोचने को विवश हो गईं थीं कि क्या स्त्री की पूर्णता मातृत्व में ही है।

□□□

लघुकथा मनीषा जोशी मनी

गरीब

शहर की चकाचौंध देखकर अकसर सोचती हूं कितना अजीब है न ये शहर अमीर गरीब सब को समा लिया है इसने अपने मे।कितना बड़ा दिल है इस शहर का। एक तरफ़ बड़ी बड़ी गाड़ियां, पैसा बिजलियों की चकाचौंध आलीशान बगलों की कतारें ऐसा लगता है, जैसे सब कुछ तो है इसके पास जो एक विकसित शहर कहलाने के लिये होना चाहिए। और दूसरी तरफ़ राजपुरा की वो बस्ती जिसे देखते ही सारी सोच धरी की धरी रह जाती है गन्दगी, गरीबी, झोपड़ियाँ, बिमारी, अँधेरा बदबू उफ़ क्या क्या बताऊ। हमारे देश के हर शहर का एक कोना, जिसका यही हाल होता है। ये असमानता ही तो चुभती है मुझे, जब भी मैं शहर मे घुमने निकालती हूं । परेशान सी घर लौटती हूं कल ही की बात है लाल बत्ती होने वाली थी। लम्बा सा घाघरा पहने एक लड़की यही कोई दस बारह साल की होगी दो बैसाखी लेकर खड़ी थी। अचानक मेरी नज़र उस पर जाकर रुक गई वो अपने दोनों पैरों पर आराम से चल रही थी जैसे ही लाल बत्ती हुई उसने जल्दी से हाथों मे बैसाखियाँ ठीक से फँसाई और तेजी से रुकी हुई गाड़ियों के बीच घुस गई। सभी गाड़ियों की खिड़कियों मे जोर जोर से हथेली मारती हुई ना जाने वो कुछ ही देर मे कहाँ खो गई। हरी बत्ती हुई और मैं आगे बढ़ गई। मैं थोड़ी देर तक सोचती रह गई कि इतनी छोटी उम्र मे इतनी चालाकी, क्या करेगी जब ये बड़ी होगी।

अचानक मेरे दिल मे ख़्याल आया काश की वो लड़की स्कूल जा पाती, मैंने तुरंत गाडी घुमाई और वही चौराहे मे पहुँच गई। मगर वो लड़की मुझे कही नही मिली, मैंने कुछ लोगों से पूछा तो पता लगा वो पास ही की गली मे रहती है।मैं उसको ढूँढते हुए उसकी चौल तक पहुँच गई गन्दगी, बदबू से मेरी नाक सड़ रही थी, पर नेक काम की धुन सँवार थी मुझ पर ।खैर वो लड़की ने जैसे ही मुझे देखा वो झिझकते हुए बोली क्या पूछना है मेमसाब, मैंने बोला तुम तो बिल्कुल ठीक हो फिर क्यों बैसाखी लेकर भीख मांगती हो तुमको झूठ बोलते शर्म नहीं आती वह थोड़ी देर सकपकाई फिर बोली पेट के लिए सब कुछ करती हूँ बहुत गरीब हूं मेमसाहब, वह बहुत डर गई।मैंने बोला चलो छोडो, तुम तो मुझे ये बताओ की क्या तुम स्कूल जाना चाहती हो मैं तुम्हारी मदद करना चाहती हू। स्कूल का नाम सुनकर उसने ऐसे मुँह बनाया जैसे मैं उसको जेल भेज रही हूं। उसने साफ़ इनकार कर दिया। मैंने उसे मनाने की बहुत कोशिश करी, बहुत प्रलोभन दिये, मगर वो न मानी, मैंने उससे कहा मैं तुम्हें खुद पढ़ाने आउंगी उसने इधर उधर देखा और फिर बोली मुझे नहीं पढ़ना, मैंने कारण जानना चाहा तो वो नहीं, नहीं करती रही मैंने उससे फिर कहा पढ़ाई का महत्व बताया मगर वह टस से मस न हुई उसने जैसे ठान ली थी कि उसे पढ़ाई नहीं करनी है। और मैं उसके जवाब से उदास होकर हारकर उसकी खोली से बाहर निकल आयी। एक पल को मेरी मानसिकता गरीबों के बच्चों के लिए भी बिलकुल बदल गई मैं यह सोच रही थी कि ये गरीब के बच्चे इन्हें कुछ अच्छा सीखने का कोई चाव नहीं न

यह पढ़ना लिखना चाहते हैं, ऐसे में कौन इनको सुधार सकता है । और मुझे वहाँ आने पर अफ़सोस हुआ। अपनी गाडी की तरफ़ धीरे धीरे बढते हुए मेरी नज़र रोड़ के किनारे बैठे एक आठ साल के बच्चे पर गई।वो बड़ा मैला कुचैला था उसके पैर बिलकुल काले हो रहे थे और उसने अपने पैरों से हँवा भरने वाली मशीन दबा रखी थी जिससे वो रंग बिरंगे गुब्बारों में हवा भर रहा था बड़े लगन के साथ वह अपना कार्य कर रहा था।मुझे बहुत आश्चर्य हुआ मैं उसके पास गई मैंने पूछा बेटा ये गुब्बारा कितने का दे रहे हो उसने बोला पांच रूपया मैम साहब मैंने उससे दो गुब्बारे खरीद लिए फिर मैंने उससे पूछा तुम कहाँ रहते हो बेटा वह बोला पास ही के झोपड़पट्टी में रहता हूँ मैंने झिझकते हुए पूछा स्कूल भी जाते हो या बस गुब्बारे ही बेचते हो, उसने बडे गर्व से कहा- जाता हूँ न मैम साहब सुबह सात बजे स्कूल जाता हूं एक बजे छुट्टी हो जाती है दो बजे से यहाँ पे आकर शाम छह: बजे तक यही रहता हूं। मेरी आखों मे उस नन्हे से बच्चे के लिय स्नेह उमड़ आया उसकी लगन वाकई तारीफ के काबिल थी मुझे संतोष की जो अनुभूति उस समय हुई थी।वो मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकती ।एक पल को मैं उस लड़की को भूल गई और इस लड़के से बेहद प्रभावित हो गई ।कुछ देर उससे बातें कर के मैं दो गुब्बारे लेकर अपनी गाडी की तरफ बढ़ गई उस समय मुझे ऐसे लग रहा था जैसे देश का भविष्य इस नन्हें से बालक के ही हाथों में ही सुरक्षित है ।

आश्वासन

उसके प्रवेश से
शिथिल हुआ
तंतुओं का तनाव
शिराएं भग्न होते - होते
बच गईं
उफनते आक्रोश का खदकना
बैठ गया तले पर
ढक्कन से
प्रयासों के गिरते तने को
थुंबी लग गई
अध्यवसाय की प्रत्यंचा
दम साधे तनी रही
जब धरा उसने
कंधे पर हाथ
पुनश्च प्रतिध्वनित हुआ
'देर कभी नहीं होती'
यद्यपि आश्वासन की
दृष्टि में थी
हेयपूर्ण स्मिता
कितनी निर्द्वंद्व हुई
मेरी कातरता
साक्षी समय होगा.

अर्चना गौतम मीरा

सड़क

सड़कें सिर्फ गांवों को नहीं जोड़ती
वह जोड़ती है शिक्षा को
एक आम आदमी के झोपड़ी से
ठीक शैक्षणिक संस्थानों के
मुख्य द्वार तक।
आजकल की सड़कें
हिन्दी के साथ विलायती भाषा भी
बोलती है बिलकुल स्पष्ट
जब सड़कें अक्सर खराब जाती है
करती हैं विरोध अपने धुल गर्दा कंकड़ से।

सड़कों ने गांव को शहर का रास्ता दिखाया
दिखाया रोजगार, स्वास्थ, जनसुविधाएं
सड़कों ने समझाया है रिश्ता
बताया है शहर से लौटने के बाद की
लोगों की कहानी

आलोक रंजन

जयंती (11 अप्रैल) पर विशेष

गाँधी जी की हमसफर रहीं कस्तूरबा

आकांक्षा यादव

कहते हैं हर पुरुष की सफलता के पीछे एक नारी का हाथ होता है। एक तरफ वह घर की जिम्मेदारियां उठाकर पुरुष को छोटी-छोटी बातों से मुक्त रखती है, वहीं वह एक निष्पक्ष सलाहकार के साथ-साथ हर गतिविधि को संबल देती है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के नाम से भला कौन अपरिचित होगा। पर जिस महिला ने उन्हें जीवन भर संबल दिया और यहाँ तक पहुँचाने में अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया, वह गाँधी जी की धर्मपत्नी कस्तूरबा गाँधी थीं। महात्मा गांधी की पत्नी होने के अलावा कस्तूरबा गांधी की अपनी पहचान भी थी। वो एक समाज सेविका भी थीं। कस्तूरबा को पढ़ना और लिखना नहीं सिखाया गया था, लेकिन युवा अवस्था में ही उन्होंने पारिवारिक बंधनों को छोड़कर अपना सारा ध्यान व पूरा जोर देश की आज़ादी के लिए लगा दिया था।

गुजरात में 11 अप्रैल, 1869 को जन्मीं कस्तूरबा का 14 साल की आयु में ही मोहनदास करमचंद गाँधी जी के साथ बाल विवाह हो गया था। वे आयु में गांधी जी से 6 मास बड़ी थीं। वास्तव में 7 साल की अवस्था में 6 साल के मोहनदास के साथ उनकी सगाई कर दी गई और 13 साल की आयु में उन दोनों का विवाह हो गया। जिस उम्र में बच्चे शरारतें करते और दूसरों पर निर्भर रहते हैं, उस उम्र में कस्तूरबा ने पारिवारिक जिम्मेदारियों का निर्वहन आरंभ कर दिया। कस्तूरबा गांधी ने अपने जीवन में कभी औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं की, लेकिन वे ज़िंदगी

भर शिक्षा के लिए जिज्ञासु रही और चीजों को तेजी से समझ लेती थीं। वह गाँधी जी के धार्मिक एवं देशसेवा के महाव्रतों में सदैव उनके साथ रहीं। उनके गंभीर और स्थिर स्वभाव के चलते उन्हें सभी 'बा' कहकर पुकारने लगे। गाँधी जी के अनेक उपवासों में बा प्राय: उनके साथ रहीं और उनकी जिम्मेदारियों का निर्वाह करती रहीं। गाँधी जी के उपवास के समय कस्तूरबा गाँधी भी एक समय का ही भोजन करती थीं। आजादी की जंग में जब भी गाँधी जी गिरफ्तार हुए, सारा दारोमदार कस्तूरबा बा के कन्धों पर ही पड़ा। यदि इतने सब के बीच गाँधी जी स्वस्थ रहे और नियमित दिनचर्या का पालन करते रहे तो इसके पीछे कस्तूरबा बा थीं, जो उनकी हर छोटी-छोटी बात का ध्यान रखतीं और हर तकलीफ अपने ऊपर लेतीं। तभी तो गाँधी जी ने कस्तूरबा बा को अपनी माँ समान बताया था, जो उनका बच्चों जैसा ख्याल रखतीं।

विवाह के बाद कस्तूरबा और

मोहनदास 1888 ई।तक लगभग साथ-साथ ही रहे किंतु गाँधी जी के इंग्लैंड प्रवास के बाद से लगभग अगले 12 वर्ष तक दोनों प्राय: अलग-अलग से रहे। कस्तूरबा ने जब पहली बार साल 1888 में बेटे को जन्म दिया तब महात्मा गांधी देश में नहीं थे। वो इंग्लैंड में पढ़ाई कर रहे थे। कस्तूरबा ने अकेले ही अपने बेटे हीरालाल को पालपोस कर बड़ा किया। इंग्लैंड प्रवास से लौटने के बाद शीघ्र ही गाँधी जी को अफ्रीका चला जाना पड़ा। जब 1896 में वे भारत आए तब कस्तूरबा बा को अपने साथ ले गए। तब से बा गाँधी जी के पद का अनुगमन करती रहीं। उन्होंने उनकी तरह ही अपने जीवन को सादा बना लिया था। 1904-1911 तक वह डरबन स्थित गाँधी जी के फिनिक्स आश्रम में काफी सक्रिय रहीं।

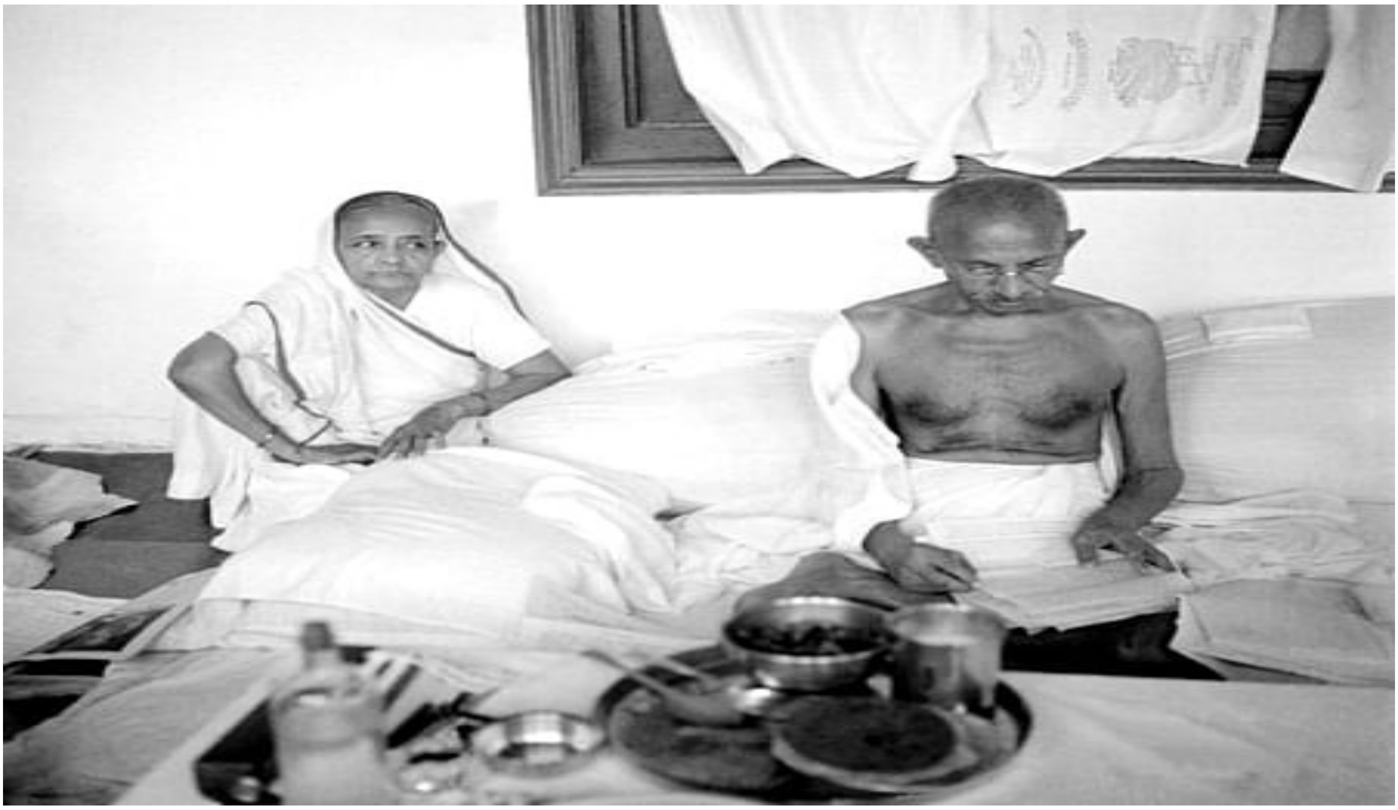

सामाजिक स्वतंत्रता के लिए कस्तूरबा गांधी की लड़ाई भारतीय स्वतंत्रता के संघर्ष से बहुत पहले शुरू हुई। महात्मा गांधी के दक्षिण अफ्रीका में रहने के दौरान उन्होंने इसकी शुरूआत की। दक्षिण अफ्रीका में एक वाकया कस्तूरबा बा की जीवटता और संस्कारों का परिचायक है। दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों की दयनीय स्थिति के खिलाफ प्रदर्शन आयोजित करने के कारण उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया व 3 महीने कैद की सजा सुनाई गई। वस्तुत: दक्षिण अफ्रीका में 1913 में एक ऐसा कानून पास हुआ जिसके अनुसार ईसाई मत के अनुसार किए गए और विवाह विभाग के अधिकारी के यहाँ दर्ज किए गए विवाह के अतिरिक्त अन्य विवाहों की मान्यता अग्राह्य की गई थी। गाँधी जी ने इस कानून को रद कराने का बहुत प्रयास किया पर जब वे सफल न हुए तब उन्होंने सत्याग्रह करने का निश्चय किया और उसमें सम्मिलित होने के लिये स्त्रियों का भी आह्वान किया। पर इस बात की चर्चा उन्होंने अन्य स्त्रियों से तो की किंतु बा से नहीं की। वे नहीं चाहते थे कि बा उनके कहने से सत्याग्रहियों में जायँ और फिर बाद में कठिनाइयों में पड़कर विषम परिस्थिति उपस्थित करें। जब कस्तूरबा बा ने देखा कि गाँधी जी ने उनसे सत्याग्रह में भाग लेने की कोई चर्चा नहीं की तो बड़ी दु:खी हुई और फिर स्वेच्छया सत्याग्रह में सम्मिलित हुई और तीन अन्य महिलाओं के साथ जेल गईं। जेल में जो भोजन मिला वह अखाद्य था। धर्म के संस्कार बा में गहरे पैठे हुए थे। वे किसी भी अवस्था में मांस और शराब लेकर मानुस देह भ्रष्ट करने को तैयार न थीं। कठिन बीमारी की अवस्था में भी उन्होंने मांस का शोरबा पीना अस्वीकार कर दिया और आजीवन इस बात पर दृढ़ रहीं। जेल में उन्होंने फलाहार करने का निश्चय किया। किंतु जब उनके इस अनुरोध पर कोई ध्यान नहीं दिया गया तो उन्होंने उपवास करना आरंभ कर

> विवाह के बाद कस्तूरबा और मोहनदास 1888 ई।तक लगभग साथ-साथ ही रहे किंतु गाँधी जी के इंग्लैंड प्रवास के बाद से लगभग अगले 12 वर्ष तक दोनों प्राय: अलग-अलग से रहे। कस्तूरबा ने जब पहली बार साल 1888 में बेटे को जन्म दिया तब महात्मा गांधी देश में नहीं थे। वो इंग्लैंड में पढ़ाई कर रहे थे। कस्तूरबा ने अकेले ही अपने बेटे हीरालाल को पालपोस कर बड़ा किया।

दिया। अंततः पाँचवें दिन अधिकारियों को झुकना पड़ा। किंतु जो फल दिए गए वह पूरे भोजन के लिये पर्याप्त न थे। अत: कस्तूरबा बा को तीन महीने जेल में आधे पेट भोजन पर रहना पड़ा। जब वे जेल से छूटीं तो उनका शरीर ढांचा मात्र रह गया था, पर उनके हौसले में कोई कमी नहीं थी ।

भारत लौटने के बाद भी वे गाँधी जी के साथ काफी सक्रिय रहीं। चंपारन के सत्याग्रह के समय बा तिहरवा ग्राम में रहकर गाँवों में घूमती और दवा वितरण करती रहीं। उनके इस काम में निलहे गोरों को राजनीति की बू आई। उन्होंने बा की अनुपस्थिति में उनकी झोपड़ी जलवा दी। बा की उस झोपड़ी में बच्चे पढ़ते थे। अपनी यह पाठशाला एक दिन के लिए भी बंद करना उन्हें पसंद न था अत: उन्होंने सारी रात जागकर घास का एक दूसरा झोपड़ा खडा किया। इसी प्रकार खेडा सत्याग्रह के समय बा स्त्रियों में घूम घूमकर उन्हें उत्साहित करती रहीं। 1922 में जब गाँधी जी को गिरफ्तार कर छह साल की सजा हुई, उस समय कस्तूरबा गाँधी ने महात्मा गांधी की गिरफ्तारी के विरोध में विदेशी कपड़ों के त्याग के लिए लोगों का आह्वान किया। गाँधी जी का संदेश लोगों तक पहुँचाने के लिए वे गुजरात के गाँवों में दिन भर घूमती फिरीं। 1930 में दांडी कूच और धरासणा के धावे के दिनों में गाँधी जी के जेल जाने पर कस्तूरबा बा एक प्रकार से उनके अभाव की पूर्ति करती रहीं। वे पुलिस के अत्याचारों से पीड़ित जनता की सहायता करती, धैर्य बँधाती फिरीं। 1932 और 1933 का अधिकांश समय तो उनका जेल में ही बीता। इसी प्रकार जब 1932 में हरिजनों के प्रश्न को लेकर बापू ने यरवदा जेल में आमरण उपवास आरंभ

> किंतु जब उनके इस अनुरोध पर कोई ध्यान नहीं दिया गया तो उन्होंने उपवास करना आरंभ कर दिया।
>
> अंततः पाँचवें दिन अधिकारियों को झुकना पड़ा।
>
> किंतु जो फल दिए गए वह पूरे भोजन के लिये पर्याप्त न थे।
>
> अत: कस्तूरबा बा को तीन महीने जेल में आधे पेट भोजन पर रहना पड़ा।
>
> जब वे जेल से छूटीं तो उनका शरीर ढांचा मात्र रह गया था, पर उनके हौसले में कोई कमी नहीं थी ।

किया उस समय बा साबरमती जेल में थीं। उस समय वे बहुत बेचैन हो उठीं और उन्हें तभी चैन मिला जब वे यरवदा जेल भेजी गईं ।

गाँधी जी के अंग्रेजों भारत छोडो आन्दोलन के दौरान 9 अगस्त, 1942 को गाँधी जी के गिरफ्तार हो जाने पर बा ने, शिवाजी पार्क (बंबई) में, जहाँ स्वयं गाँधी जी भाषण देने वाले थे, सभा में भाषण करने का निश्चय किया किंतु पार्क के द्वार पर ही अंग्रेजी सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। दो दिन बाद वे पूना के आगा खाँ महल में भेज दी गईं, जहाँ गाँधी जी पहले से गिरफ्तार कर भेजे चुके थे। उस समय वे अस्वस्थ थीं। 15 अगस्त को जब यकायक गाँधी जी के निजी सचिव महादेव देसाई ने महाप्रयाण किया तो वे बार-बार यही कहती रहीं महादेव क्यों गया, मैं क्यों नहीं? बाद में महादेव देसाई का चितास्थान सा बन गया। वे नित्य वहाँ जाती, समाधि की प्रदक्षिणा कर उसे नमस्कार करतीं। वे उस पर दीप भी जलवातीं। यह उनके लिए सिर्फ दीया नहीं था, बल्कि इसमें वह आने वाली आजादी की लौ भी देख रही थीं। कस्तूरबा बा की दिली तमन्ना देश को आजाद देखने की थी, पर गिरफ्तारी के बाद उनका जो स्वास्थ्य बिगड़ा वह फिर अंतत: उन्हें मौत की तरफ ले गया और 22 फरवरी, 1944 को वे सदा के लिए सो गयीं। इतिहास ने अक्सर कस्तूरबा गांधी को उनके पति मोहनदास करमचंद गांधी की परछाई की तरह ही बयां किया है, लेकिन देश की भलाई और संघर्ष के दिनों में कस्तूरबा की भूमिका को भी नकारा नहीं जा सकता है।

□□□

गाँधी जी के अंग्रेजों भारत छोडो आन्दोलन के दौरान 9 अगस्त, 1942 को गाँधी जी के गिरफ्तार हो जाने पर बा ने, शिवाजी पार्क (बंबई) में, जहाँ स्वयं गाँधी जी भाषण देने वाले थे, सभा में भाषण करने का निश्चय किया किंतु पार्क के द्वार पर ही अंग्रेजी सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया।

दो दिन बाद वे पूना के आगा खाँ महल में भेज दी गईं, जहाँ गाँधी जी पहले से गिरफ्तार कर भेजे चुके थे।

हक़दार

नीना सिन्हा

निवेदिता के घर, छोटी बहन रुक्मा की शादी के बाद की पहले होली मिलन का समारोह था। पूरा दिन हो-हंगामा, रंग-गुलाल, मालपुआ-गुझिया, दही बड़ों में निकला। शाम को चाय का कप लिए तीनो भाई-बहन विमर्श को हाल में और उनके जीवनसाथी कमरों में आराम करने चले गए। आपसी विवाद को सौहार्दपूर्ण तरीके से निपटाने का यह एक माकूल अवसर था।

निवेदिता ने कहा, "मुझे न भी मिले तो चलेगा। छोटों से कैसी प्रतियोगिता?"

रुक्मा बोल उठी, "पर मुझे जरूरत है। प्रेम-विवाह से इनके परिवार वाले पहले ही नाराज हैं, संपन्न भी नहीं हैं। मेरे भविष्य का सवाल है..।"

रंजन से रहा न गया, "संपत्ति बेटों की होती है। बेटियों को उनके ससुराल के संपत्ति मिलती ही है। यही परंपरा चली आ रही है।"

निवेदिता ने रुक्मा का पक्ष लिया, "रंजन! परंपरा हो या कानून, दोनों ही पुरुष सत्तात्मक समाज की अगुआई करते दिखते हैं।"

"वह कैसे दी?" रंजन का प्रश्न उछला।

"पति ड्यूटी करते रहे और मैंने सासरे की जिम्मेदारियों के मध्य जीवन का एक बड़ा हिस्सा खपा दिया। फिर भी, सास-ससुर द्वारा की वसीयत में मेरा नाम हो या संपत्ति की खरीद-फरोख्त में याद की जाऊँ, हो ही नहीं सकता।

मैंने कुछ प्रश्न उठाए थे, 'विवाह पूर्व बताया गया था कि लड़कियों का ससुराल की संपत्ति पर अधिकार होता है। पर यहाँ आकर देखा कि संपत्ति संबंधित सारे अधिकार बेटों के पास ही हैं। मशवरे का हिस्सा बनाना तो दूर, उसी वक्त बहुओं को रसोई में चाय बनाने भेज दिया जाता है!'

सासरे वालों ने सफाई दी, 'नये चलन और कानून के अनुसार बेटियाँ मायके की संपत्ति की हिस्सेदार होती हैं। उधर की संपत्ति की रजिस्ट्री करो तो मान्य होगी, सासरे की अमान्य।'

सोच कर देखो, 'सालों-साल ससुराल की चाकरी करते रहो। अगर अधिकारों के विषय में प्रश्न करो, तो हम पराए। मायके की संपत्ति पर नजरें डालो तो भाई-भाभी की आँखों में कंटक बन जाओ!'

पूछा जाता है, 'माँ-बाप की सेवा करने के वक्त बेटियाँ नदारद हो जाती हैं। अपने सास-ससुर से फुर्सत नहीं, तो मायके में हिस्सेदारी कैसी?' चिढ़कर गर किसी बेटी ने कोर्ट का दरवाजा खटखटा दिया तो उसके मुँह पर मायके का दरवाजा सदा सर्वदा के लिए बंद।

आखिरकार हम हैं क्या? पड़ोसी देश के 'शरणार्थी', जिसका महज दोनों घरों में रोटी, पानी, सर पर छत का ही अधिकार रहता है! पर अपने एवं पराये (!!) दोनों ही नजरें चुराते हैं..।

यही बढ़ता असंतोष और असंतुलन अधुना काल में, स्त्री आत्मनिर्भरता का मजबूत स्तंभ साबित हुआ, संग लाया आत्मविश्वास..। कब तक स्त्रियाँ शटल-कॉक सी मायके ससुराल के बीच...। हमें अस्तित्व की तलाश करनी ही होगी।"

कटाक्ष न समझ पाने का सफल अभिनय करता रंजन बोला, "मुद्दे से भटक गई हैं दी, आप! यहाँ रुक्मा ने प्रेम-विवाह कर विपन्नता को स्वयं गले लगाया है। इसकी हिस्सेदारी कहाँ से आ गई?"

"ठीक कहा भाई! अधिकारों की संचिका में सिर्फ पुरुषों के नाम होने चाहिए तथा स्त्रियों को सब्र करने का सबक कंठस्थ होना चाहिए", अश्रु रुक्मा के नयनों की कोरों पर आकर ठहर गए।

□□□

लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092

गोदना एक कला

प्रतिमा शर्मा "पुष्प"

गोदना के फूल गोदाव मोर गुइयाँ

यही रे गोदनवां सइयाँ के निशानी

मन में पिरितिया अखियन में पानी

सगरो गहनवां यहीं जरि बरि जइहैं

पियवा निशानी सरग तक जइहै।।

गोदना गोदती हुई गोदहारिन अपनें मधुर स्वरों में गाती हुई जब सूआ और रंग से शरीर के विभिन्न अंगों पर प्रिय के नाम का हवाला देती और उसके प्रेम की याद दिलाती तो सूइयों की चुभन की तीव्र पीडा़ न जानें उस हँसी ठिठोली में कहाँ लुप्त हो

जाती थी। तत्पश्चात प्रेम की तीव्रता और पवित्रता प्रमाणिकता से मन अद्भुत अनुभूतियों से भर उठता था।

कहते हैं गोदना एक परंपरा है। भ्रांति से जन्मी किंतु पहचान व प्रेम की अद्भुत निशानी के रूप में न जानें कितने पूर्व से ही परंपरा के रूप में चली आ रही है। जब स्त्रियों मे शिक्षा का आभाव था तब एक दूसरे के प्रेम और निष्ठा से बंधे ये प्रतीक चिन्ह अति लोक प्रिय थे। सावन आते ही लड़कियां ससुराल से मायके जातीं और प्रियतम की याद में उनके प्रेम का प्रतीक "गोदना" गोदवातीं थीं। ससुराल आनें पर उनके गोदनें को बडी़ बूढियों द्वारा देखा

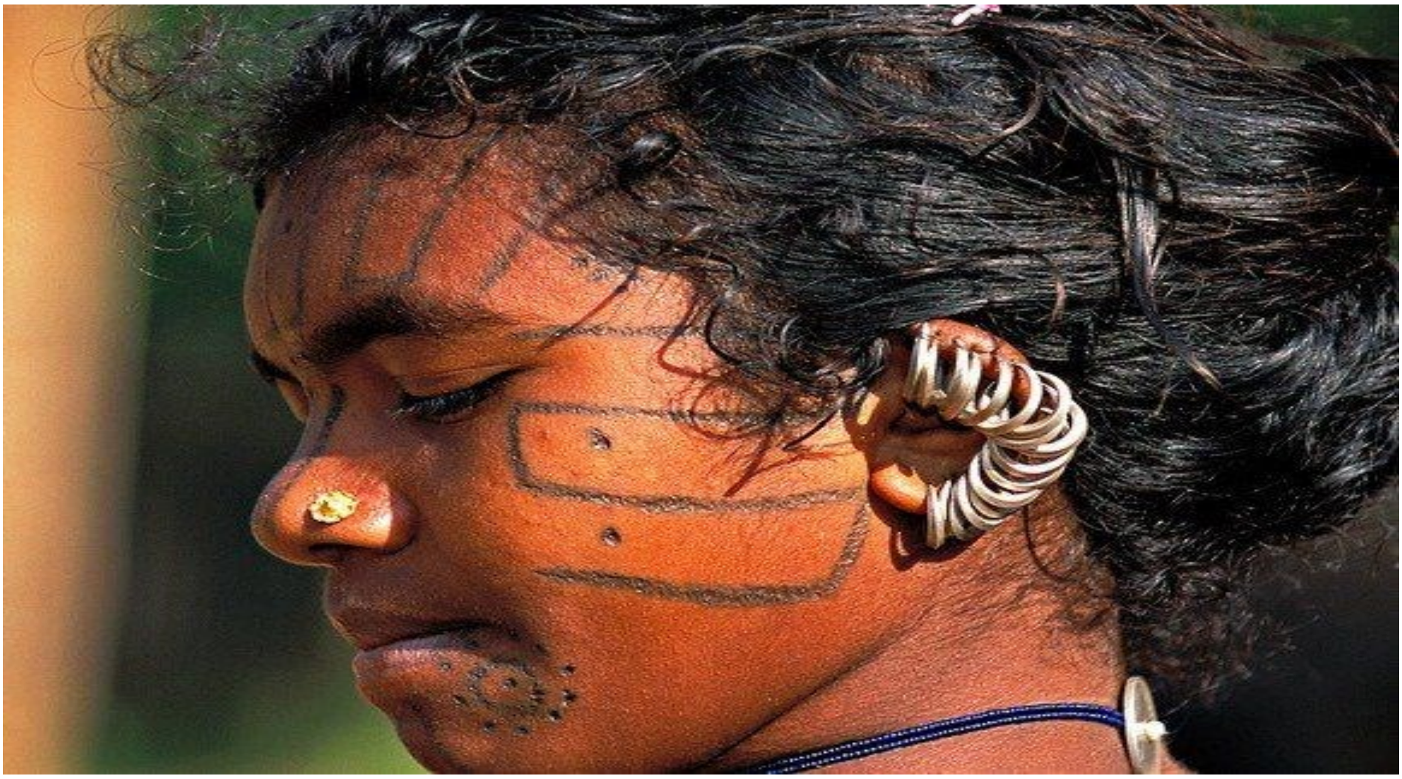

जाता तभी उनको पवित्र माना जाता था और उनके हाँथ का पानी पिया जाता था। जो स्त्री गोदना नही गुदवाती उसके चरित्र को अच्छा नहीं माना जाता था । परदा प्रथा और संयुक्त परिवारों की दुरूह व्यवस्था के चलते समयाभाव व विषमताओं के बीच ये प्रतीक चिन्ह एक दूसरे के प्रेम को जीवित रखनें में सेतु का काम करते थे। तरह तरह की भ्रांतियों और मान्यताओं को जन्म देता हिंदू समाज के नर नारियों में गोदना अपनी पहचान और दृढ स्थान बनाए रहा । हमारे देश में तरह तरह के आक्रमणकारी आते रहे धन संपदा के साथ उनकी कुदृष्टि स्त्रियों पर भी पड़ती रही चूंकी गोदना विवाहित स्त्रियों का प्रमाणिक गहना था इस लिए ये सुरक्षा कवच का काम भी बखूबी निभाता रहा। बाद में लोगों ने सुरक्षा की दृष्टि से कुंवारी लड़कियों को भी गोदना गुदवाना शुरू कर दिया , लोकप्रियता इतनी बढ़ती गयी कि लोगों नें इसे सौन्दर्य सामग्री में शामिल कर कलात्मकता के विभिन्न रूपों में शरीर के विभिन्न अंगों पर बनवाना शुरू कर दिया , चाँद, सूरज, तारें, मोर, फूल पत्तियाँ , प्रिय के नाम न जानें क्या क्या।

गोदना सौंदर्य की वो परिभाषा बन गया जिसे चरित्र की शुद्धता की कसौटी माना जाता रहा। यही कारण है कि अपनें देश की महिलाओं का आकर्षण बना रहा ।गोदना गोदनें वाली महिलाएं अक्सर बंजारे व नट जाति की महिलाएं होती थी । अछूत मानी जानें वाली उन स्त्रियों से असह्य पीडा़ झेलते हुए भी पवित्रता के भाव से भर कर उसे अंगीकार कर अद्भुत आनंद से भर उठती थीं।

गोदनें को लेकर एक बहुत बडी़ धारणा यह होती है कि मृत्योपरांत प्रेम व निष्ठा की यही निशानी साथ में ईश्वर के घर तक साक्षी बन कर जाती है ।बाकी धन दौलत जेवर कपड़े यही रह जाते हैं।

छत्तीसगढ़ आज भी आदिवासी नट बंजारे इस कला को जीवित रखे हुए हैं लेकिन समय परिवर्तन और बाजारवाद नें इनकी रोजी रोटी पर अपना अधिकार जमाना शुरू कर दिया । जैसा कि सभी जानते हैं कि अपनी चीजों को मार्केट में लानें के पहले बाजार पुरानी परंपराओं को अहितकारी , नुकसानदायक और बीमारी का घर जैसा करार करनें में पूर्ण सक्षम है । टिटनेस और स्किन कैंसर का भय लोगों में व्याप्त कर गोदनें की परंपरा को धीरे धीरे मिटानें के सफल प्रयास में बाजार काफी हद तक सफल रहा । जहाँ आधुनिक जीवनशैली रूढियों को तोड़नें भ्रांतियो को मिटाते विज्ञान के नित नए आयाम तय कर प्रगति और विकास के पथ पर अग्रसर होता रहा है वहीं बाजार नें गोदनें को मार्डन लुक देकर टैटू के रूप में बेशकीमती एक्ससरीज के रूप में बाजार में स्थापित कर दिया।

हाँ ये बात अलग है कि अब पवित्रता निष्ठा और प्रेम का इसे कोई लेना देना नहीं है। मात्र फैशन व गलैमर का प्रतीक बन भी गोदना आज भी अपनी कलात्मकता को समृद्ध रखनें में पूर्ण सक्षम बना हुआ है।

ऊँची कीमत दे कर अधुनिक और समृद्ध युवक युवतियाँ टैटू पार्लर में कलात्मक आकृतियाँ बनवाते हैं । मशीनों द्वारा कुशलता पूर्वक जटिल कलाकृतियाँ आज बाजार में अपना जबरजस्त स्थान बना चुका है।

बाजार की अपनी व्यवस्था होती है किसी भी चीज को आधुनिकता का रूप देकर बेच देना बाजार खूब जानता है ।इस तरह से गोदनें की परंपरा और रिवाज को धीरे धीरे समाप्ति के कागार पर ला कर कितनें ही लोगो की रोजी रोटी छीन ली और एक परंपरा एक विश्वास और एक निष्ठा अपनी स्वाभाविकता की प्रभा खोता जा रहा है।

□□□

कहानी

योग

(तमिल कहानी लेखिका आर।चूड़ामणि
अनुवाद एस।भाग्यम शर्मा)

उम्र तो पचास साल की हो गई। शरीर में पहले जैसे ताकत भी नही है। फिर क्या जरूरत है अब भी तकलीफ पाने की?, ‘‘खाना बनाने के लिए एक आदमी को रख लो अम्मा। और तुम आराम से रहो।’’ पुत्र ने अपनत्व से अपनी अम्मा से कहा। बहू भी बोली ‘‘इतने दिनों बच्चों के लिए आपने बहुत तकलीफ उठा ली वो कम है क्या अम्मा अब तो आराम से रहो।’’

ये बाते सुन चेल्लम को गर्व हुआ। यही नहीं उसे सभी लोग सब जगह उन्हे प्यार व सम्मान देते हैं। अम्मा को सम्मान देने के लिये सब बच्चों में होड भी लगती है। चेल्लम को जीवन में इससे बढकर और क्या चाहिए।

‘‘ठीक है। खाना बनाने के लिए अम्मा का भी बन्दोबस्त कर दो। औरत होगी तो घर में ही रहेगी व अपना कर्तव्य ठीक से निभायेगी।’’ ऐसा कह चेल्लम ने एक दिन अपने बेटे गोपाल को अनुमति दे दी। फिर इस तरह उनके घर भागीरथी का प्रवेश हुआ।

दुबली-पतली, सिकुडी-सिमटी काया, जगह-जगह पैबन्ध लगी नौ गज की साडी बलाउज पहने छोटा माथा पर सूना था ये थी भागीरथी। आँखें शान्त व हसँ मुख चेहरा बाल सफेद व काली खिचड़ी बालों वाली भागीरथी थी। चेल्लम को वह पसंद आ गई। भागीरथी या तो उनकी उम्र की होगी या कुछ कम होगी चेल्लम ने अनुमान लगाया। उन्होने सोचा कुछ साल और ये परिश्रम करने लायक है।

‘‘आपको वेतन कितना चाहिए ?’’

‘‘आपकी इच्छा अनुसार दीजियेगा बस।’’

‘‘बार-बार घर जा रही हूं कह कर चल तो नही दोगी?’’

‘‘मैं तो यही पडी रहूंगी अम्मा। मैं अकेली हूं किसी को देखने जाने की मुझे जरूरत नहीं है।’’

‘‘खाना अच्छा बनाओगी?’’

‘‘चालीस तरह के खाना बना सकती हूं’’

चेल्लम घबराई। चालीस तरह के खाना बनाना तो मुझे भी नहीं आता। फिर दूसरी बात बोली ‘‘वो सब हमें पता नही। हमें स्वादिष्ट व रूचिकर भोजन चाहिये। अधिक मिर्च मसाले नहीं चाहिये। घर में बेटा-बहू बाल बच्चे सब हैं। अतः आने जाने वाले भी लोग रहेगें। पूर्ण उत्तरदायित्व के साथ सब काम करना होगा। बच्चें एक ही समय में अलग-अलग फरमाईश करेगें तो उसे भी पूरा करना पडेगा। उससे तुम्हे परेशान नहीं होना चाहिये।’’

‘‘ये क्या बडी बात है घर में ये सब बातें तो होगी ही। बच्चें बोलों तो मेरी जान है। और दस बच्चें भी आये तो मुझे कोई परेशानी नही होगी। आराम से बनाकर खिलाऊंगी।’’

बात करना शुरू करे तों चुप ही नहीं होगी लगता है। फिर भी बातों से हंस कर बोल इन

लोगों को खुश कर दूं ऐसा दयनीय भाव भी उसमें था ताकि नौकरी मिल जाये।

''अच्छा अन्दर आओ। सब समझाती हूं।'' कह कर उठी चेल्लम। जिस दिन से काम पर आई भागीरथी, उन लोगों को लगा वह थोडी बावली है। पर सबके वह पसंद आ गई। घर के सब लोगों को उसकी बात करने के ढंग से हंसी आती थी सुबह पांच बजे से रात दस बजे तक लगातार काम करते हुए भी उसके पास पता नहीं कैसे समय व ऊर्जा की कमी नहीं थी।

''मामी थोडा काफी दीजियेगा'', कोई कहे तो बस काफी के साथ बाते भी शुरू।

''काफी है ना? जरूरी दूंगी। काफी आपके लिये तो है। घर में तो दूध व शक्कर खूब है। आपको दे तो क्या कम हो जायेगा? अच्छा अभी लाती हूं। खून अच्छी तरह पीजियेगा। और चाहिये तो बिना संकोच के और मांगियेगा।''

''मामी आज रसम अच्छा बना है।'' यदि किसी ने कह दिया तो उसे लगेगा कि मैंने क्यों कहा। इतनी बात सुननी पड़ती।

''अच्छा है क्या ? अच्छा लगे और ले लो। मैं तो सात तरह का रसम और बनाना जानती हूं। संकोच से मत करना मैं और बना दूंगी। मुझे तो गुस्सा भी नहीं आता''। खाना जल्दी खत्म होते ही इन बातों से बच कर भाग जाये सबको ऐसा लगेगा।

''आपने खाना खा लिया मामी।''

''हाँ बिल्कुल खा लिया। यहां क्या कमी है मुझे आपकी कृपा से मुझे सब कुछ तो मिलता है। पहले जिस घर में काम करती थी पिछले साल उन्होने हटा दिया। बिना काम के एक साल पापी पेट के लिए परेशान रही। आपके घर आने के बाद भर पेट अच्छा खाना खा रही हूं।''

बिना मुंह बन्द किए बोले जाती वह आखिर में हमें धन्यवाद देना कभी नहीं भूलती।

''चलो जगन्नमाता ने मुझे इतना अच्छा रखा है मुझे खुशी हैं अपने दुख के लिये कभी दूसरों पर दोषारोपण नहीं करना चाहिये। जाने दो। आज का नाश्ता बनाना हैं बड़ा बनाने के लिए दाल भीगों दूँ। या कोई सूखा नाश्ता बनाकर डिब्बे में भर दूं। जो बनवाना हो निसंकोच कहियेगा।''

बिना आलस के, बिना नाक, मुंह सिकोडे दौड़-दोड़ कर काम करते उसको देख चेल्लम आश्चर्य में पड जाती।

एक दिन भागीरथी उनके कमरे में आकर उस.....उ.....।उस......।दीर्घ स्वास लेती हुई हांफती हुई। नीचे जमीन पर पैर पसार कर बैठ गई।

''क्यों मामी, जाकर थोडा आराम से लेट जाईयेगा।'' अपने रामायण की किताब को देखते हुए चेल्लम बोली। ''रहने दीजियेगा आराम की मुझे क्या जरूरत है अम्मा? जब चाहों कर लूंगी। मुझे आपसे एक काम है। यहां आई जब से सोच रही हूं, पूछने में संकोच हो रहा है।''

चेल्लम ने किताब को बन्द कर दिया। भागीरथी का दुबला-पतला शरीर अभी भी हाफ रहा था। आँखों की गहराई में बादल जैसे थकावट की छाया दिख रही थी।

''क्या करना है?''

''दो कार्ड लिखकर देना।''

''कार्ड किसके लिए?''

''मेरे बेटों के लिये।''

चेल्लम आश्चर्य से बोली ''आपके बेटे है क्या?''

''हैं दो बेटे।''

''ओ'' चेल्लम को थोडी देर सांस भी नही आई। धीरे से ''आपने तो कहा था मैं अकेली हूं। अतः मैने सोचा......'' खींचने लगी।

भागीरथी के सूखे ओठों पर मुस्कराहट आई पहली बार उसके चेहरे पर एक गहराई व विरक्ति दोनों भाव चेल्लम को दिखाई दिया।

''कोई साथ नहीं तो अकेले ही है ना अम्मा?''

''वे लोग कहाँ रहते हैं?''

''बडा मदुरई में एकाउटेन्ट हैं पत्नी व तीन बच्चे भी हैं छोटा यही पास में वाकूर गांव में रहता है। खेती बाडी को संभालता है ठीक से रहता है उसके दो बच्चे है।''

''सुन-सुन कर चेल्लम का आश्चर्य बढता ही गया।

''आठ महीने हो गए अम्मा, किसी ने भी एक कार्ड नहीं डाला। जिसने पैदा किया उसको फिकर होगी ऐसा वे नहीं सोचते। मेरा मन दुखी होता है। ये जान बुझ कर करने की बात तो नहीं है ना अम्मा? अलग रहो तो मन तडपता ही है।''

चेल्लम कुछ नहीं बोली उसकी बात सुन उनके भीतर कुछ कुछ होने लगा।

''दो कार्ड लिख कर दोगी क्या?''

''ठीक है क्या लिखना है बोलियेगा''

भागीरथी ने आधी आँख बन्द कर अपने अन्दर गहराई में उतर कर चिट्ठी के लिये समाचार बोलना शुरू किया।

''चिरंजीव बाचा, को अम्मा का बहुत सा आर्शीवाद यहाँ मैं सुख से हूं। वहां तुम्हारी कुशलता व बहू की कुशलता, बच्ची जयंति तथा राघवन की कुशलता व चि।मुंभु की कुशलता का ....''

''सबकी कुशलता कह कर साथ लिख देती हूं ना?''

''नहीं जी अलग-अलग सबको पूछे तो ही सामने प्रत्यक्ष देख रहे जैसे लगेगा ना ?''

''और बातों पर आए इसलिये बोली।''

''विषय क्या है इतना ही तो है। यहां नौकरी कर रही हूं ये बता दीजियेगा।''

''हां फिर-फिर''

''बस इतना ही। हाँ इस पत्र का तो जरूर जवाब देना कह कर अपना पता लिख दीजियेगा।''

''इस पत्र का तो मतलब''

''इससे पहले पांच पत्र किसी के द्वारा लिखवाया एक ने भी जवाब नहीं दिया।''

''अरे राम। ऐसा क्या'',

''हाँ पर जवाब कैसे देते'' भागीरथी ने उन्हे सामान्य रूप से देखते हुए अपने मन में बिना कडवाहट के साधारण ढंग से बोली ''उस समय मैं बिना काम के परेशान थी। और उन्हे दस रूपये भेजो कह कर पत्र लिखा था। इसलिये तो जवाब नहीं आया।''

चेल्लम के हाथ से कार्ड फिसला। कितनी सयंमित ढंग से बात की इसने! ये क्या विवेक हैं? कडवाहट भरा कठोर सत्य को इतने शान्त भाव से ग्रहण करना संभव हैं? एक योगी में वह उनमें क्या फर्क हैं?''

''इसी लिये मैं कमा रही हूं लिखने को कहा। बिना डरे जवाब देगें ना। किसी तरह उनकी कुशलता के बारे में मुझे पता चले तो सही।''

थोडी देर तो चेल्लम हिली नहीं। बाद में सम्भल कर नीचे गिरे कार्ड को उठा कर हाथ में लेकर कुर्सी पर पीठ का सहारा लिया।

''आपको मैंने परेशान किया अम्मा। मुझे तमिल लिखना आता हैं परन्तु अब मुझे आँखों से ठीक से दिखता नही। ऐसा लगता है जैसे मच्छर उड रहे हैं। उम्र भी तो हो गई है ना। अगले माह मैं साठ साल की पूरी हो जाऊँगी।''

तुरन्त चेल्लम कुर्सी में सीधी बैठी। स्वयं कोई गलती कर दी हो ऐसा लगा। अपने पचास साल के उम्र में थकावट की वजह से काम करना बंद करके आराम करने के लिए बेटे-बेटी का सहाराहीन एक औरत से काम लेने की बात को सोच उनके मन को आघात लगा। ये औरत तो साठ साल की है और इतना काम करने के

कारण हांफती रहती है। इसके बेटे दोनो सम्पन्न होने के बावजूद अपने पेट पालने के लिये उन्हें काम करने की आवश्यकता हैं चेल्लम एक बार उसको देखकर सिर नीचे कर लिया।

भागीरथी ने जैसे सोचा वैसे ही दोनो बेटों के पास से पत्र आया।

''भागीरथी अम्मा का मकान यही है क्या?'' पूछा पोस्ट मेन। ''हाँ मैं ही हूं'' भागकर आकर पत्रों को ले लिया। चेल्लम से पढवा कर सुन ली फिर बोली।

''हरे राम! चलों अच्छी तरह से रह रहे है दोनों लोग। एक साल बाद अच्छी खबर आई तो। सभी उस जगन्नमाता की कृपा है।'' चेल्लम को गुस्सा ही आया।

हर एक महीने अपने वेतन के रूपयों को उन्हीं को देकर रखने को कहती। मेरा क्या खर्चा है आपकी कृपा से दोनो समय पेट भर खाना खा लेती हूं। बाकी साधारण चिलर खर्चे के लिए एक-दो रूपये बहुत है।''

''मैं आपके नाम से बैंक में जमा करवा देती हूं ब्याज तो मिलेगा।'' गोपाल ने कह कर वैसा ही किया।

सब जगह उन दिनों फ्लू फैला था। पहले चेल्लम बीमा हुई। उसके बेटे ने प्यार व ममता से मां की सेवा की। उसे देख भागीरथी हृदय के अन्दर तक हिल गई। पर उसकी निगाहों में ईर्ष्या का भाव नहीं था। उसे फिकर व अपनत्व की भावना ही थी। उसने भी उनकी खूब सेवा की।

''मामी आपको देखकर मुझे बहुत दया आती है'' चेल्लम बोली।

'क्यों' यही वह नादान पूछेगी उन्होने सोचा परन्तु भागीरथी ने ऐसा नहीं पूछा समझदार जैसे मुस्करा कर बोली ''आपने पुण्य किया है अम्मा। ऐसे ही हमेशा रहने दो।'' उसने होशियारी की कमी नही थी।

चेल्लम के बाद भागीरथी को बुखार आया। धैर्य व सहन शीलता के साथ पडी रहने पर भी पूरे घर वालों ने उसकी देखभाल की। साथ में वहां एक शोक भी छाया रहा।

''बहुत दया आ रही है रे गोपाल। तुम उनके दोनो बेटों को पत्र लिख दो। क्या करते है देखे तो।'' चेल्लम बोली। गोपाल ने वैसे ही किया। मां व बेटे दोनो इंतजार करते रहे पर दस दिन बीतने पर भी किसी भी लडके के पास से जवाब नहीं आया।

''कैसे बेटे है ये इनसे तो वह बांझ होती तो ठीक था'' दुख के कारण चेल्लम बोले जा रही थी चेल्लम का मन बहुत दुखा। ये घरवालें नहीं हो तो उसकी गति क्या होती ? तबीयत खराब हो प्यासे को पानी देने वाला भी कोई नहीं क्या करें?

भागीरथी ने इस तरह की कोई बात सोची ऐसा नहीं लगा। जैसे ही बुखार उतरा अपना काम करने लगीं।

''चार दिन और आराम करियेगा मामी''। ''और क्या आराम अच्छी भली चंगी तो हूं। आपकी कृपा से मुझे कोई शिकायत नहीं। काफी व खाना सब पेट भर कर मिलता हैं। यदि मैं झूठ बोलू तो मेरी आँखें चली जाये। रात को क्या खाना बनाये बोलियेगा। मामी तो बीमार हो गई थी। अतः कुछ नहीं चाहिये ऐसा मत सोचना। मुझे कोई तकलीफ नहीं।''

''जो चाहिये निसंकोच होकर बोलियेगा।'' वहीं हमेशा जैसे नादानी की बातें। वह बेवकूफ की पहली नमूनी है या बहुत पक्की ज्ञानी हैं? इन दोनो में से एक जरूर है आखीर में इसे मैं बेवकूफ ही समझ सकी। क्योंकि अनुभव के बाद भी अपने बेवकूफ पन को बिना पहचाने एक गलती को बार-बार दोहराए तो वह माफ न करने लायक है, जिस पर गुस्सा आता है दया नहीं।

एक दिन घर ढूंढता हुआ शाम के समय एक आदमी को चेल्लम ने घर के बाहर खडे देखा तो उसके बारे में उसे अच्छी सोच ही नहीं आई।

''तुम कौन हो किसे ढूढ रहे हो''

''भागीरथी अम्मा यही रहती है ना''

''हाँ'' चेल्लम ने संदेह पूर्वक उसे देखा। संदेह भरे नजर से देख पूछा |

''तुम उसके बेटे हो?''

''हाँ! दूसरा बेटा हूं। मेरा नाम गणेश है। घर को ढूंढते हुए पता नहीं कहां-कहां घूमा। अम्मा कैसी हैं''

''बहुत बीमार हो गई थी। तुम्हे तो पत्र मिला होगा।''

''हां मिला था अब तो ठीक हो गई होगी।''

''हाँ काम कर रही हैं।''

''मैं अम्मा से मिलना चाहता हूं।''

''अभी तो मिल नहीं सकते। अन्दर काम कर रही हैं क्या काम है बोलों''।

''नहीं अम्मा से ही काम है।''

''एक जगह कोई काम कर रहा है वहां कभी भी आकर मिलना है बोले तो संभव है।'' सख्ती के साथ बोली। ''ऐसी बात है तो कल आउंगा। कब मैं उनसे आराम से मिल सकता हूं बताईयेगा।

चेल्लम ने उसे घूर कर देखा व अन्दर गई। थोडी देर में आई भागीरथी के आँखों में व चेहरे पर एक चमक व खुशी दिखाई दी।

''आजा बेटा, आ जा! तुम्हे देखे कितने दिन हो गए। कुशलता से हो? दुबला सा लग रहा रे। तबीयत खराब तो नहीं है ना? कब गांव से आये? तुम लोगों को देखने के लिए मेरी आँखे तरस गई। अच्छी तरह हो ना''

हाथों की नसे फूली हुई दिखाई दे रहे कठोर हाथों से बेटे के चेहरे को व कंधे को सहलाने लगी भागीरथी की आँखों से आंसू छलक गये।

''मुझे क्या है अम्मा ठीक हूं। ये अच्छा हुआ तुम्हे कम से कम काम मिल गया, बहुत खुशी की बात है''। खिड़की में से उन्हें देख रही चेल्लम गुस्से से उबलने लगी। नौकरी मिल गई तो खुशी है क्या? उसका मतलब एक ही अर्थ है।

उसका अनुमान गलत नहीं था। गणेश चार दिन तक अम्मा के पास आकर बाते करता रहा। उसके अगले दिन भागीरथी चेल्लम के सामने आकर खडी हुई।

''क्या है मामी, क्या बात है'' आखीर में बेटा आ गया, आपको देखने।''

''हाँ एक मदद के लिये आया है।''

''हाँ मैने सोचा। रूपयों की मदद के लिये?''

''हाँ उसे कुछ जमीन के काम के लिये जरूरत है।''

''क्यों आपको करोडपति समझा हैं क्या ? या आपको दूध दुहने वाली गाय समझा।''

''दोनों नहीं, मुझे अम्मा समझ कर आया है।'' मुस्करा कर आये जवाब को सुन चेल्लम आश्चर्य में पड गई। ''बैंक में मेरा डेढ सौ रूपये के करीब जमा है ना अम्मा ? जल्दी से उसको दे दिजियेगा। मेरा लड़का बोल रहा है। बेचारा बहुत तकलीफ में है। आपके बेटे से कह कर उस रूपयों को लेकर दोगें क्या ?''

ये क्या खत्म न होने वाला अज्ञान? ''मामी मैं कह रही हूं आप नाराज मत हो। वो रूपये आपके लिये आपातकाल के लिये रहने दीजियेगा''।

''लडके के लिये जो काम न आये ऐसा पैसा किस काम का उसका ये आपातकाल है तो वह मेरा भी तो आपातकाल है।

''इसके बदले वह आपके लिए क्या करेगा। आपको कोई तकलीफ हो तो आकर बचायेगा?''।

''नहीं करेगा''।

''बेटे आपके साथ कैसे व्यवहार करते है ये जानने के बाद भी आपकी ममता रूपी अज्ञान नहीं छूटा?।

''उसके लिए वे क्या करेगें?''

चेल्लम इसके बाद सहन न कर सकी व आवेश आया जैसे बोलने लगी'' माँ-बाप की आखिरी दिनों सेवा करना बच्चों का कर्तव्य नहीं है क्या मामी? उनके लिए हम कितनी तकलीफ उठाते हैं? शरीर को कष्ट देकर भी उन्हे बडा करते हैं। खून का दूध बना कर उन्हे पिलाते है अपने जान से ज्यादा उन्हे समझ कर उनके अच्छे के लिए शरीर से और दिल से प्रयत्न करते है। माँ यदि ध्यान न रखे तो बच्चे की क्या हालत होगी? ऐसा हम उन्हें आँखों के तारे जेसे समझ उनकी सार सम्भाल कर आदमी बनाते है। उनके लिये कितना परिश्रम करते है उनकी देखभाल में जीवनपूरा खत्म कर देते है।''

''हम ऐसे किए बिना रह सकते है क्या'' शान्त स्वर, बीच में गूंजा। चेल्लम ने बिफर कर देखा भागीरथी के मुख पर एक शान्त भाव के सिवाय कुछ भी नहीं था।

''आप बताइये, हम बिना ऐसे किये रह सकते है क्या? अपने बच्चों के लिए अपने मन में जो

ममता, प्रेम, स्नेह है उसके आगे माँ का स्वाभाविमान क्या बडी चीज है? हम जानबूझ कर प्रेम करना है इसलिए करते है क्या? प्रेम, ममता ढूंढ कर देने वाली वस्तु है क्या! वह? ये स्वाभाविक रूप से अपने मन के अन्दर पैदा होने वाले वेग हैं उसमें अपनी करनी कुछ भी नहीं है। यह तो जीवन की प्रकृति की प्राकृतिक क्रिया हैं अपने शरीर में महसूस होने वाला एक अहसास हैं। उसे हम न दें उनके लिए न करें ऐसा सोचे तो भी बिना किए नहीं रह सकते।''

इसे सुन चेल्लम की जीभ जम गई।

''हम जब तक जिंदा है तब तक बच्चों को देते हैं उसमें हमें खुशी और संतोष मिलता है। अपनी खुशी और संतोष के लिये ही तो हम उन्हे देते हैं ? उसके बारे में सोचना न सोचना उनका कर्तव्य है। बच्चे हमारे लिये क्या करेगें? क्या ऐसा सोच कर ही हमें उनसे प्रेम व स्नेह हैं? हमें उनको यह प्रेम व स्नेह दिये बिना और कोई रास्ता भी नहीं हैं''। भागीरथी का स्वर भीग गया, --उससे बढकर कोई भाग्य भी नहीं।''

अपने सामने एक मानवी बोल रही है ऐसा चेल्लम को नहीं लगा। ये कोई देववाणी जैसे लगा। ये कोई बावली है? गलत हिसाब लगा कर धोखा खाये वह बावला? अपना स्वार्थ देखे बिना काम करने वाले इस कर्म योगी जो प्रेम ही लक्ष्य बना लिया हो इस साधना का क्या नाम है?

''क्यों मामी, हम माँ बच्चों की रक्षा करते हैं | वे हमारा तिरस्कार करें तो फिर हमारी रक्षा बुढापें में कौन करेगा?'' धीरे से बोली। ''हम सबको पैदा जिसने किया वह जगन्नमाता नहीं है क्या?'' चेल्लम मुंह नहीं खोली।

एक सौ पचास रूपये लेकर गणेश चला गया। बिना आराम के हमेशा की तरह शान्ति से परिश्रम करने वाली भागीरथी को देख चेल्लम का जी भर आया।

शरीर में ताकत हो जब तक वह परिश्रम करेगी फिर वह काम करने में असमर्थ हो तब बेसहारा हो आँखों में रोशनी होते हुये भी ममता में अन्धी हुई सड़कों और गलियों में फिरने के दिन आये तब ....

वह जगन्नमाता बचायेगी?

□□□

" एक ही रंग"

मेरे शहर की एक बस्ती में,
रहती है एक मैडम,
जो चलाती है,ब्यूटी पार्लर,
साथ ही सिखाती है,पढ़ना लिखना भी,
जीवन में जरूरी है शिक्षा भी,
यह बतलाती है,गरीब बच्चियों को,
कभी संवार देती है,उनके गंदे मेले चेहरों को,
सारे दिन के लिए खुश हो जाती हैं वो,
मुस्कान भी जरूरी है,जीवन में|
बच्चियों के बाबू,माँ,
अब्बू,अम्मी कभी खुश हो जाते हैं,
कभी-कभी डर जाते हैं,
उनकी मुस्कान से ,
छोरियो को नहीं फलता ज्ञान और मुस्कान,
पुरानी परंपरा जैसे चलती है,
इसे चलने दो, इनको भीतर रहने दो,
छुड़ा देते हैं स्कूल, सीखनाऔर सिखाना,
बेबसी में अंदर कैद हो जाती हैं, छोरियां|
पढ़कर भी दिन-रात ,
बेदर्दी से पिटकर ही जीना है,
तो क्यों किताबों में सर खपाया जाए ?
पिटने का कोई रंग और जाति नहीं होती,
आयशा हो या रेखा ,मरियम हो या प्रीतम कौर,
सभी बेदर्दी और बेरहमी से शिकार होती हैं, पिटाई की,
कहीं कहीं तो पीटकर ही मौत की नींद सुला दी जाती हैं,|
इनके सपनों में,
कोई रंग नहीं भरता है,
मरती बेटियों को तोड़ मरोड़ कर
इस्तेमाल किया जाता है
समाज में छिपे नकबपोशों की नजरों का हमेशा पहरा होता है |
नहीं होता इनका रूप अलग अलग,
इनकी चीखों, दर्द,कराहों का,
एक ही मजहब होता है,
चोटों से रिसता खून हो,
आँखों से निकलते आँसू हो,
उस पर किसका नाम होता है?
उनकी शहनाज हो,मारिया हो प्रीतम कोर हो या हो हमारी रानी |

इन्दु सिन्हा "इन्दु"

ग़ज़ल

ज़रा सी ठेस लग जाए तो रिश्ता टूट जाता है।
लड़ें माँ बाप आपस में, तो बच्चा टूट जाता है।
ये बच्चे जब बड़े होकर, हमें छोटा समझते हैं,
यक़ीनन तब मुहब्बत से भरोसा टूट जाता है।
पुरानी हो चुकी दीवार में सीलन समाई हो,
भले सौ बार रँग लो, किन्तु कोना टूट जाता है।
कहा बीवी नहीं सुनती, तो अम्मा चुप नहीं रहती,
दुधारी कशमकश के बीच, बेटा टूट जाता है।
हमारी उम्र बीती है, घरौंदे को बनाने में,
उठे दीवार आँगन में तो जज़्बा टूट जाता है।
जवाँ बेटे की अर्थी को , जो काँधे पर, उठाना हो ,
तो इन हालात में अच्छे से अच्छा टूट जाता है।
मुनासिब है, अदालत में गवाही से मुकर जाना,
बचे परिवार का मुँह देख, बन्दा टूट जाता है।

□

बदल रही है ये दुनिया, हम भी बदलें श्रीमान!
ज़माना बदल रहा है।

अन्तर्देशी, पोस्टकार्ड से हुई हमारी कट्टी।
मैसेंजर से, वॉट्सऐप से भेज रहे हैं चिट्ठी।
चैटिंग से बतकही, मिले गूगल बाबा से ज्ञान।
ज़माना बदल रहा है।

गांवों में पलती थी गायें, रम्भा, तुलसी, श्यामा।
शहरों में कुत्ते पलते हैं, रेम्बो, टॉमी, गामा।
निर्धन मानव से ज़्यादा कुत्तों का हो सम्मान।
ज़माना बदल रहा है।

हाय! छलावा बना फेसबुक, मित्र हजारों फ़र्ज़ी।
भूखा मरा पड़ोसी, देखो कैसी है खुदगर्ज़ी।
भूलभुलैया, आभासी दुनिया में है इन्सान।
ज़माना बदल रहा है।

संदीप मिश्र 'सरस'

आवरण कथा :

"लोकगीतों में राम"

डॉ. रामशंकर भारती

राम सौं बड़ौ है कौन ...?

श्री राम भारत का सर्वोत्तम शील और मर्यादा हैं। राम नाम मंत्र है। वेद की ऋचा है। रामगान ही सोमगान है। श्रीराम भारत मधु - अभीप्सा हैं। दिव्य सोम हैं और भव्य ओम भी। राम अनंत हैं और आशीष हिमांचल फैली राष्ट्रीय चेतना का अजस्र प्रवाह हैं। वस्तुतः श्री राम इतिहास पुरुषोत्तम हैं।

वे भारत के मन का स्वर्णिम अतीत हैं, वर्तमान काल के रस आनंद हैं और भविष्य के मंगल भवन अमंगलहारी हैं।

हमारे देश की समृद्ध लोकपरम्परा में यदि कोई एक नाम ध्रुव तारे के समान अवस्थित है तो वह हैं श्रीराम। भारतीय मनीषा में राम केवल एक नाम नहीं हैं, वे पूरी की पूरी संस्कृति, एक समृद्ध और वैभवशाली अतीत तथा इहलोक से परलोक तक की नैया पार लगाने वाले इष्ट देव हैं। आदिकवि महर्षि वाल्मीकि द्वारा रामायण लिखे जाने के पूर्व भी रामायण श्रुति परम्परा में चिरकाल से चली आ रही थी।

वाल्मीकि रामायण के प्रारम्भ में नारदमुनि महर्षि वाल्मीकि को संक्षिप्त रामकथा सुनाते हैं।यही रामकथा अनेकानेक क्षेत्रीय भाषाओं में लिखी गई है और फिर रामचरितमानस तो अपनी रचना के बाद आज सबसे अधिक लोकप्रिय तथा जन-जन में रामरस सिंधु प्रवाहित करने वाला महाकाव्य बन चुका है। रामकथा का विस्तार इतना अपरिमित है कि आज भी कई भाषाओं -बोलियों में लोकगायकों और कथावाचकों द्वारा अपने-अपने अंदाज़ में इसे बड़ी सुंदरता से गाया जा रहा है।

इसी परम्परा की रामायणों में कई ऐसी अद्भुत व आशातीत कथाएँ भी होती हैं, जो स्थानीय तौर-तरीक़ों पर आधारित होती हैं।

भारत की हमारी लोक संस्कृति में भगवान राम की लीला सूत्रबद्ध है, इस एकात्मता को पूरे भारतीय उपमहाद्वीप के समाज व जीवन दर्शन में सहज देखा जा सकता है। लोक जीवन में गीत संगीत एक अनिवार्य अंग है जो लोक संस्कृति का एक अनिवार्य अंग है।

जीवन के सुख -दुःख में गीत गायन प्रचलित है, चाहे जीवन के संस्कार हों, देवताओं की स्तुति हो या फिर तीज-त्यौहार। जनजातीय संस्कारों में भी गीत-नृत्य-संगीत जन्म से लेकर मृत्यु तक के सभी संस्कारों में प्रचलन है,वनवासी जनजातीय समुदाय के प्रत्येक तरह के लोक गीतों में भगवान राम, सीता और लक्ष्मण का उल्लेख मिलता है।

सबसे महत्वपूर्ण लोकगीत 'चइत परब' में गाए जाने वाले हैं क्योंकि चैत्र नवरात्री से वैदिक नए वर्ष का आरम्भ होता है और शुक्ल पक्ष की नवमीं तिथि को भगवन राम का

प्राकट्य दिवस है। आँचलिक क्षेत्र में चैत्र माह में एक महत्वपूर्ण पर्व है चइत परब, इस पर्व के दौरान युवक युवतियाँ समवेत स्वरों में गीत गाते हैं। ऐसे लोक गीतों में भगवान राम का उल्लेख इस तरह मिलता है-

जयो माँ कमला जयो माँ बिमोला

जयो माँ तु मातो मंगला

जयो माँ सिंहोवाहेणी

तोरो नामो धरी गीतो गाइबी

माँ पदो दियो पुरी - पुरी ।

जयो रामो हरि कोयटी कजरी

सेतबने श्रीरामो हरि

सेतबने श्रीरामो हरि आजी आले

सेतबने श्रीरामो हरि "

भतरी लोकभाषा में गाए जाने वाले इस गीत का अर्थ है- जय हे! माँ कमला! जय हे! माँ विमला ! जय हे ! माँ मंगला ! जय हे ! माँ सिंहवाहिनी ! मैं तुम्हारा नाम लेकर गीत गाऊँगा तुम मुझे गीत के पूरे पद दो । जय हे राम ! हे काली कोयल ! सेतवन में श्री राम हैं।

भारत के हर हिस्से में भिन्न जनजातीय समूहों में राम चरित्र गाया जाता है। छत्तीसगढ़ सहित मध्य क्षेत्र के जनजातीय समूहों में तो भगवन राम के प्रति अनुराग ज्यादा है क्योंकि अपने वनवास काल का एक महत्वपूर्ण हिस्सा छत्तीसगढ़ के विभिन्न क्षेत्रों में व्यतीत हुआ। इसका उल्लेख भी लोकगीतों में मिलता है -

जहाँ रामगढ़ परवत ठाढ़े जहाँ रामजी आइस।

सीता बंगिरा में सीताजी बरखा थाम बिताइन।

लछमन जी के जे धरती हर लेहिन बन में कोरा।

महामाई दाई के जेवर माथा रहथे भारी।।

सरगुजा के भूइयाँ संगी है सबकर महतारी।

अमरित धारा जे धरती में, लागल दूध करोटा।।

अर्थात् -यहाँ रामगढ़ पर्वत खड़ा है, जहाँ रामचन्द्र आये थे। सीता ने वर्षा और धूएँ से बचने के लिए शरण ली थी, जहाँ लक्ष्मण ने विश्राम किया था। इस भूमि पर (अम्बिकापुर) की महामाई का बरदस्त रहता है, जहाँ कनहर रेड, महानदी दो नदियाँ बहती हैं।

जनजातीय समूह के भिन्न-भिन्न भाषा बोली भतरी, गोंडी, सरगुजिहा आदि में गाए जाने वाले गीतों में भगवन राम, सीता, लक्ष्मण की लीलाओं की चर्चा है। विवाह संस्कार के दौरान कन्या पक्ष के गीत वर पक्ष के गीतों से अधिक मार्मिक और महत्त्व है। माँडो पड़घानी गीत (मण्डप-स्वागत का गीत) को 'माँडो पड़घानी' गीत कहा जाता है। यह गीत में छत्तीसगढ़ी एवं हल्बी के मिश्रण से प्रादुर्भूत जनभाषा 'बस्तरी' में है। आइए इस गीत का भी आनंद लेते हैं-

राम गए बनवास , सीता ल लेगे चोर।

अली - गली मयँ तो खोजेवँ लंका में पाएवं सोर।।

राम धरे बरसी लछिमन धरे बान।

सीता माई के कलपना भागथे हनुमान।।

अग्नि के फेरे के समय गाये जाने भुंआरी (भँवारी) गीत में राम के नाम की चर्चा चितलाई माता के साथ है-

एक भँवारी के एक जुग भइगे

ए धुंआरी देस पड़ानी।

आगू-आगू में रामे चलतू हैं

जेकर पीछू चितलादई रानी हो।

ऐसी कई कथाएँ लोकगीतों में मिलती हैं, विशेषकर उत्तर भारत में। अवध की जिस पुण्यभूमि में स्वयं श्रीराम ने जन्म लिया, वहां आज भी विवाह के अवसर पर दूल्हे के लिए यह गीत सुनने को मिल जाता है। प्रसंग सिया राम विवाह का है, जब प्रभु राम सहित तीनों भाइयों का विवाह मिथिला में सम्पन्न होने जा

रहा है, तब मिथिलावासी गर्व से गाते हैं-

आजु मिथिला नगरिया निहाल सखिया,

चारों दूल्हा में बड़का कमाल सखिया।

रामकथा के इतने विविध आख्यान हैं कि राम के जन्म, विवाह, वनगमन, राज्याभिषेक, सीताहरण, अयोध्या वापसी, अश्वमेधयज्ञ आदि प्रसंग गीतों के रूप में अभिव्यक्त होते हैं। एक उदाहरण देखिए कि केवट सिया राम और लक्ष्मण को गंगा पार करवाते हुए गाते हैं-

'मोरी नैया में राम सवार,

गंगा मइया! धीरे बहो।'

पुत्र जन्म के उपलक्ष्य में गाए जाने वाले मंगल गीत 'सोहर' कहलाते हैं।डा।वासुदेवशरण अग्रवाल के अनुसार, सोहर शब्द संस्कृत भाषा के 'सूतिगृह' और प्राकृत के 'सुइहर' से बना है। कहीं-कहीं इसे 'सोहिला' भी कहते हैं। सोहर में हास्य, शृंगार और करुण रस की प्रधानता होती है। बाबा तुलसी ने मानस में सोहर के लिए मंगल शब्द का प्रयोग किया है-

गावहि मंगल मंजुल बानी सुनि कलरव कलकंठ लजानी।

अवधी के सोहर गीतों में सीता, राम, लक्ष्मण आदि का वर्णन अधिक मिलता है। किसी-किसी गीत में इनका नाम भी गाया जाता है -

चैत सुकुल सुभ नौमी जनमे रघुनंदन हो,

अरे बाजै लगे आनंद बधाव उठन लगे सोहर हो।

इसी प्रकार जन्म के समय नाल -विच्छेदन के गीत गुँजते हैं-

चैत रामनवमी श्रीरामजी के जनम भये

धगरिन त नेग मांगे नार के छिनौनी।

नवजात शिशु की नाल काटने वाली धांगर जाति की स्त्री को धगरिन कहते हैं। और यहाँ छिनौनी का अर्थ है नाल काटना। भोजपुरी की समृद्ध विरासत और लोकसंस्कृति में भी रामजन्म के कई प्रकार के सुमधुर गीत सुनने को मिलते हैं-

दशरथ के जन्मे ललनवा, अवध में बाजे बजनवा।

अथवा

राजा दशरथ जी के घरवा, आज जन्मे ललनवा।

पुत्र जन्म के अवसर पर स्त्रियाँ घर के भीतर सोहर गाती हैं और दरवाज़े के बाहर पौरियां (एक प्रकार के देहाती भाट) कोरस में 'श्रीरामचंद्र जन्म लिहले, चइत रामनवमी' आदि गीत गाते हैं। ब्रज क्षेत्र जो कि योगेश्वर श्रीकृष्ण की जन्मस्थली है और सारा क्षेत्र ही कृष्णमय है, वहाँ भी रामायण के कई रूप और आख्यान मिलते हैं। यूँ भी राम और कृष्ण भला कब भिन्न हैं! मंगल उत्सव में घर में बधावा गानेवालियाँ राम के परिवार की बधाई गाती हैं

'धनि धनि कौसल्या की कूख, मांग सुहाग भरी।

ब्रजभाषा के प्रचलित लोकगीतों के अनेक प्रकार और रूप जैसे- बन्ना-बन्नी, कात, सोहर, मंगल, गारी, ढोला आदि में रामायण की घटनाएं और प्रसंग हैं। ब्रजभाषा के लोकगीतों में रामजन्म को लेकर बड़ी भिन्न और रोचक कथा मिलती है।

एक सोहर में महाराज दशरथ और महारानी कौशल्या संतान न होने से दु:खी हैं। विचार-विमर्श के बाद दोनों बैमाता (प्रजनन की देवी शक्ति) की खोज में निकलते हैं।

दो वन पार करने के बाद तीसरे वन में बैमाता से उनकी भेंट होती है। कौशल्या द्वारा माता के चरणवंदन करने पर बैमाता आशीष देती हैं कि रानी अपने महल में जाओ, नौ माह के बाद तुम्हारे पुत्र होगा।

एक सोहर में महाराज दशरथ जंगल में जाकर जड़ी-बूटी खोज लाते हैं। तीसरे सोहर में माली को ही बुलाकर उससे जनमबूटी दे जाने को कहा जाता है। बूटी को सिल पर पीसा

जाता है। कौशल्या और सुमित्रा बूटी पी लेती हैं और कैकेयी सिल को धोकर पी लेती हैं। इससे कौशल्या के राम, सुमित्रा के लक्ष्मण तथा कैकेयी के चरत और भरत दो पु्ुत्र पैदा होते हैं। इन लोकगीतों में शत्रुघ्न का नाम नहीं आता है। कुछ गीतों में राम-लक्ष्मण को कौशल्या का पुत्र तथा चरत-भरत को कैकेयी पुत्र बताया जाता है-

'दशरथ के चारया लाल, दिन दिन नीके अधिक नीके लगें। कैकेयी कहिएं चरत भरत, कौसिल्या के लछिमन राम।'

बुंदेलखण्ड के लोक अँचल में रामकथा अपनी व्यापकता के साथ उपस्थित है। राम जन्म की बधाई गीत के बुंदेली बोल सहज मन मोह लेते हैं –

अवध में जन्मे राम सलोना
बंधनवारे बंधे दरवाजे
कलश धरे दोऊ कोना। अवध...
रानी कौशिल्या ने बेटा जाये
राजा दशरथ के छौना अवध...
रानी कौशिल्या ने कपड़े लुटाये
राजा दशरथ ने सोना। अवध...
हीरा लाल जड़े पलना में
नजर लगे न टोना। अवध...

राम वनगमन के समय की स्मृतियों में ध्वनित होने वाले लोगगीत अंतर्मन को विकल कर देते हैं-

रथ ठांड़े करो रघुबीर,
तुम्हारे संग मैं चलूं वनवास खों।
अरे हां जी तुम्हारे,
काहे के रथला बने, है
अरे काहे के डरे हैं बुनाव
तुम्हारे संग ...
अरे हां हो हमारे,
चन्दन के रथला बने,
और रेशम डरे हैं बुनाव,
तुम्हारे संग ...
अरे हां जी तुम्हारे,
रथ में को जो बैठियो,
और हां जी रानी सीता,
रथ में बैठियो,
राजा राम जी हैं हांकनहार,
तुम्हारे संग ...
रथ ठांड़े करो।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम भारतीय चेतना में इस तरह घुले-मिले हैं कि वे मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित करते हैं। जिसके कारण वे मनुष्य के जन्म से लेकर उसके अवसान उत्सव में भी सश्रद्ध स्मरण किए जाते हैं। श्रीराम कथा और रामायण का विस्तार इतना अपरिमित है कि यह सिर्फ़ भारतीय उपमहाद्वीप ही नहीं, निकटवर्ती देशों के साहित्य में भी श्रीरामकथा की व्यापकता दृष्टिगोचर होती है। श्रीराम की यह विराटता उनके लोकमंगलकार्यों की अवतारणा का परिणाम है। ऐसे लोकाभिराम श्रीराम केआनंदगंधी चरित्र से हमारा लोकजीवन कैसे अछूता रह सकता है।

लोकसंस्कृति, लोकसाहित्य तथा लोकगीतों को जिस प्रकार रामकथा ने प्रभावित किया है, ऐसा दूसरा कोई और काव्य अलभ्य ही है। सियाराम तथा रामायण के पात्रों से जुड़ी अनेकानेक कथाएं, अनेकानेक गीत लोकजीवन का एक ऐसा अभिन्न अंग बन गए हैं कि उनमें सत्य और असत्य वाला भेद युगों पूर्व मिट चुका है।

शेष है तो बस चिरकालिक रामरस-गंगा और उसमें डुबकी लगाने वाले आप और हम मर्त्य मानव।श्रीराम की यही अपरिमित लोकव्याप्ति यही उद्घोष करती है-"राम सौं बड़ौ है कौन?"

□□□

आवरण कथा :

राम मेरे आराध्य.....

पद्मा अग्रवाल

मेरे लिये राम मात्र एक नाम नहीं है वरन् वह समस्त हिंदू समाज के लिये जीवन आधार हैं ।श्री राम का जीवन चरित्र ही हमारे देश भारत को महान् बनाता है । देश का कोटि कोटि जन मानस उनकी आंखो से जन जीवन को देखता है ..।उनके आदर्शों के आधार पर अपने जीवन में घटने वाली हर घटना का मूल्यांकन और विश्लेषण करने का प्रयास करता रहता है ।सच कहा जाये तो भगवान् राम भारत देश की आत्मा है ...राम भारत के पर्याय हैं..।वह निर्विकल्प हैं अर्थात उनका कोई भी विकल्प ही नहीं है ।जिस प्रकार आत्मा को शरीर से विलग नहीं किया जा सकता है उसी प्रकार भगवान् राम को भारत से विलग नहीं किया जा सकता है ।आज भी ऱाम के सुख में देश का जनजन सुखी हो उठता है और उनके वन गमन का दृश्य देख कर देश का कोटि कोटि जन आंसुओं के सागर में डूबने लगता है ।वह अश्रु धार भी इतनी परम पुनीत है कि जन जन के तन मन को निर्मल कर देती है।

अश्रुओं की उस निर्मल अविरल धारा में न ही कोई ईर्ष्या शेष रहती है न ही कोई लोभ , न ही कोई मोह , न कोई अपना और न ही पराया ..।

अयोध्या के राजा दशरथ की तीन रानियां ..।कौशिल्या , सुमित्रा और कैकेयी थीं ।पुत्रेष्टि यज्ञ के बाद कौशिल्या के राम , सुमित्रा के लक्ष्मण और कैकेयी के भरत और शत्रुघ्न का जन्म हुआ ।

श्री राम जी का इस धरती पर अवतरण चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को माना जाता है जिसे रामनवमी पर्व की तरह आज भी पूजा पाठ और व्रत उपवास के साथ मनाया जाता है ।ऱाम जी ने अपने चरित्र के द्वारा सबके सामने आदर्श स्थापित किया .ऐसी मान्यता है कि वह धरती पर धर्म की स्थापना के लिये ही आये थे ....

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम भगवान् विष्णु के दस अवतारों में से सातवें अवतार थे .

श्री राम जी ने विनम्रता ,मर्यादा , धैर्य और पराक्रम का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण संसार के सामने प्रस्तुत किया है ।

वाल्मीकि रचित संस्कृत रामायण के आधार पर तुलसीदास द्वारा अवधी भाषा में रचित रामचरितमानस ने भगवान् राम को घर घर में जन साधारण के हृदय तक पहुंचा दिया .

वह अपने आदर्श गुणों के कारण मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाये जाते हैं ।

भगवान् राम ने रावण तथा अन्य राक्षसों का वध करके रामराज्य स्थापित किया ।

चूंकि वन प्रदेश में रहने वाले साधु , मुनि एवं तपस्वियों के धार्मिक पूजा पाठ यज्ञ हवन में राक्षस या असुर

बाधा डालते थे इसलिये अपनी रक्षा के लिये विश्वामित्र भगवान् राम और लक्ष्मण अपने साथ ले आये थे .

माता सीता का स्वयंवर....

महर्षि विश्वामित्र को उन्हीं दिनों जनक जी के स्वयंवर के आयोजन की सूचना मिली तो वह

भगवान् राम और लक्ष्मण को अपने साथ लेकर मिथिला पुरी गये , जहां पर राजा जनक ने अपनी बेटी सीता के लिये स्वयंवर रचाया हुआ था ।सभी बड़े बड़े राजा और राजकुमार उपस्थित थे ।जनक जी शिव जी के बहुत भक्त थे , उन्होंने उपहार में उन्हें अपना धनुष प्रदान किया था।

स्वयंवर की शर्त थी कि जो शिव जी के विशाल धनुष को उठा कर उस पर प्रत्यंचा चढा पायेगा , केवल वही राजकुमारी सीता से विवाह कर सकता था। रावण जैसा बलशाली भी शिव धनुष को टस से मस नहीं कर पाया था। जब प्रभु श्री राम वहां पर गुरू का आशीर्वाद ग्रहण कर मंच की ओर बढे तो वहां पर प्रभु के तेज से पूरा माहौल आलोकित हो उठा था और उन्होंने क्षण मात्र में धनुष को उठा लिया और उनके स्पर्श मात्र से ही धनुष टूट जाता है ।स्वयंवर की शर्त पूरी होते ही माता जानकी उनका वरण करती हैं।

भगवान् राम का वनवास ...राम ज्येष्ठ पुत्र थे , इसलिये अयोध्या का राजा बनना सुनिश्चित किया गया तो माता कैकेयी ने कोपभवन में दशरथ जी से दो वचन मांगें ..

1 ...भरत को राजतिलक

2...14 वर्ष के लिये राम को वनवास

चूंकि दशरथ जी अपने वचन से बंधे हुए थे ...

रघुकुल रीति सदा चलि आई, प्राण जाहि पर वचन न जाई..

भगवान् राम पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ वन चले गये।

राम द्वारा रावण का वध ...

रावण की बहन सुपर्णखा के नाक कटने के बाद ,अपने अपमान से रावण इतना क्रोधित हो उठा कि उसने सीता जी का अपहरण करके राम जी से बदला लेने का निश्चय किया। जिस समय रावण अपने छद्म वेष में सीता को अपने विमान में लेकर जा रहा था , राम जी के भक्त जटायु ने रावण से अपनी पूरी ताकत लगा कर युद्ध किया , रावण ने जटायु के पंख काट दिये और वह घायल होकर जमीन पर गिर पड़ा। रावण सीता जी को लेकर अपने साम्राजय लंका में ले गया।

समुद्र पर राम सेतु का निर्माण ....

लंका द्वीप पर पहुंचने के लिये राम भक्त हनुमान ने राम का नाम लिख कर चट्टानों को समुद्र पर तैराकर रामसेतु का निर्माण किया जो आज भी विद्यमान है।

रावण द्वारा राम को चुनौती ,..

रावण ने राम जी के समक्ष यह चुनौती रखी कि वह युद्ध में ऱावण को पराजित करके सीता जी को ले जायें ..धर्म की स्थापना के लिये रावण के वध के पहले राक्षस परिवार के सभी राक्षसों का वध किया और अंत में रावण का वध करके लंका पर विजय प्राप्त की।

रावण का अंत ...।रावण के 10 सिर थे , इसी वजह से उसे दशानन भी कहा जाता है , उसको मारना बहुत दुष्कर कार्य था , वह महान् शिव भक्त था एवं उसकी नाभि में अमृत था ...भगवान् राम ने रावण के भाई विभीषण की सहायता से रावण का वध किया और वहां का राज्य विभीषण को सौंप कर भाई लक्ष्मण और पत्नी सीता को साथ लेकर अयोध्या लौट कर आये ...

उनके अयोध्या आगमन की खुशी में आज भी दीपावली का त्यौहार मनाया जाता है .....

भगवान् राम , स्वामी विवेकानंद के शब्दों में सत्य का अवतार , नैतिकता का आदर्श पुत्र, आदर्श राजा , जिनके कर्म उन्हें ईश्वर की श्रेणी में खड़ा करते हैं .

भगवान् राम भारत की आध्यात्मिक सामाजिक चेतना हैं ।वह न सिर्फ अवतारी पुरुष के रूप में पूज्य हैं वरन् एक राजा के रूप में भी आदर्श हैं ।वह मर्यादा पुरुषोत्तम इसलिये कहे जाते हैं क्योंकि जीवन के कठिन क्षणों में उन्होंने मर्यादा का त्याग नहीं किया ...भगवान् राम की पूजा इसलिये नहीं की जाती कि वह हमारी सांसारिक इच्छाओं को पूरा कर देंगें ..।मेरा मकान बन जाये , प्रमोशन हो जाये ,धन मिल जाये वरन् राम की पूजा आराधना हम उनसे प्रेरणा लेने के लिये करते हैं मुश्किल क्षणों का सामना कैसे धैर्यपूर्वक , बिना विचलित हुए सहजता से कर पायें ....

भारतीय जनमानस में भगवान् राम का महत्व इसलिये नहीं है कि उन्होंने अपने जीवन में इतनी कठिनाइयां झेली वरन् उनका महत्व इसलिये है कि उन्होंने उन परिस्थितियों का सामना सहजता से किया ...।

हम सबको भी विपरीत परिस्थितियों का सामना सहजता से ही करना चाहिये क्योंकि सुख औरसदुख जीवन की सुबह और शाम की तरह स्वाभाविक हैं।

श्री राम का इस धरती पर अवतरण लोक कल्याण और इंसानों के लिये आदर्श प्रस्तुत करने के लिये ही हुआ था ...वह करुणा , त्याग, और समर्पण की मूर्ति माने जाते हैं। उन्होंने विनम्रता, मर्यादा , धैर्य और पराक्रम का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण संसार के समक्ष प्रस्तुत किया है।

□□□

गंडकी नदी की शिलाओं से अवतार लेंगे रामलला!

भारत और नेपाल दोनों एक दूसरे से कई मायनों में समानता रखते हैं। नेपाल के साथ भारत सामाजिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक संबंध सदियों से साझा करता आ रहा है। नेपाल के साथ भारत का रिश्ता रोटी और बेटी का है। भले ही कुछ वर्षों से नेपाल चीन के प्रभाव में आ गया। जिसकी वजह से इन दोनों देशों के बीच दूरियां बढ़ गई, लेकिन एक बार पुनः 6 करोड़ साल पुराने शालिग्राम से दोनों देश नज़दीक आने को आतुर दिख रहे हैं। यह तथ्य ऐतिहासिक है कि अयोध्या के मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का विवाह जनकपुर की राजकुमारी सीता से हुआ था। हालाँकि, पिछले दो दशकों में भारत-नेपाल संबंधों में काफी उतार-चढ़ाव देखने को मिले हैं। साम्राज्यवादी और विस्तारवादी नीति चीन की सदैव से रही है और इस नीति के वशीभूत होकर चीन ने भारत के पड़ोसी देशों को अपने प्रभाव में लेने का हर संभव प्रयास किया है। यही वजह है कि आर्थिक, सैन्य और राजनीतिक सहायता के बहाने वह भारत-नेपाल संबंधों में दरार पैदा करना चाहता है। पिछले साल नेपाल में हुए संसदीय चुनाव में किसी भी दल को बहुमत नहीं मिलने के कारण वहां गठबंधन सरकार बनी थी, जिसे परोक्ष रूप से चीन से प्रभावित करने की कोशिश की गई।

चीन की मंशा स्पष्ट है और वह चाहता है कि भारत के पड़ोसी देशों पर उसका कब्ज़ा हो जाए। ताकि वह भारत पर एक मनोवैज्ञानिक बढ़त बना सके, लेकिन अब ड्रैगन अपने इस मंसूबे में कामयाब होता नहीं दिख रहा क्योंकि भारत भी विगत नौ वर्षों में काफी मजबूती के साथ वैश्विक फ़लक पर निखरकर सामने आया है। आज भारत की नीति बिल्कुल स्पष्ट है। पीएम नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में हमारा देश आजकल विजन और विजयश्री की पताका बुलंद कर रहा है। हमारे सियासतदां पड़ोसी मुल्कों से बेहतर समन्वय बनाकर तो आगे बढ़ ही रहे, साथ में वैश्विक स्तर के संपन्न राष्ट्रों को भी साध रहें हैं। भारत अब गुट-निरपेक्ष नहीं, बल्कि मल्टीअलाइनमेंट की नीति पर आगे बढ़ रहा है। भारत की विदेश नीति आज लचीलेपन और दूरदर्शिता से परिपूर्ण है। ऐसे में नेपाल का भारत के करीब आना सुखद है। भारत और नेपाल, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक रूप से काफी समानता रखते हैं और अतीत में नेपाल एक हिंदू राष्ट्र के रूप में भारत के बहुत करीब रहा है। भारत के बिहार प्रांत का मिथिलांचल क्षेत्र और इसकी संस्कृति नेपाल तक फैली हुई

है। नेपाली के अलावा, मैथिली को नेपाल में दूसरी आधिकारिक भाषा के रूप में भी स्वीकार किया जाता है।

आज से नहीं बल्कि आदिकाल से भारत और नेपाल दोनों एक-दूसरे के पूरक की स्थिति में रहें हैं। गोरखा रेजीमेंट को आखिर कौन भूल सकता है? जिसमें अधिकतर नेपाली युवा शामिल होते हैं। चीन जैसे देश और कुछ नफ़रत पसंद लोग भले ही भारत और नेपाल के सम्बन्धों में खलल डालने की कोशिश वर्षों से करते आ रहें हो, लेकिन ये दोनों देश इस तरह से आपस में जुड़े हुए हैं कि कोई भी ताकत इन्हें अलग नहीं कर सकती है। यही वाकया अब एक बार फिर देखने को मिल रहा है। भगवान श्रीराम का मंदिर अयोध्या में बन रहा है और जश्न नेपाल में भी देखने को मिल रहा है। यह दो देशों की संस्कृति के अंगीकृत हो जाने का जश्न है। दो देशों के एकसार हो जाने का जश्न है। जश्न है भगवान श्रीराम के अद्भुत लोक के निर्माण का। उस रामराज के वापस आने का। जिसमें लोक मंगल की कामना ही सर्वोपरि होती है। राम-जानकी जीवन ही कल्याणकारी राज्य की अवधारणा की मिसाल पेश करता है और इन्हीं का जीवन एकबार पुनः दो पड़ोसी देशों को करीब से जोड़ने का काम कर रहा है।

श्री राम और सीता दोनों देशों की साझी सामूहिक विरासत और आस्था के प्रमुख बिंदु हैं। अयोध्या से जनकपुर तीर्थ की परिक्रमा भारत-नेपाल संबंधों से ही संभव है। वर्तमान में जब अयोध्या में भव्य श्री राम मंदिर का निर्माण कार्य चल रहा है, तब नेपाल के साधु-महात्मा और आम लोग इसमें निरंतर अपना योगदान दे रहे हैं। अयोध्या और नेपाल के बीच एक बार फिर त्रेतायुग के संबंध ताजा हो रहें हैं। अयोध्या में बन रहे भव्य राम मंदिर में रामलला की मूर्ति के लिए नेपाल से करोड़ों वर्ष पुरानी शालिग्राम शिलाएं लाई गई है। ये शिला नेपाल की गंडकी नदी से निकली गई है। हिन्दू आस्था के आदर्श पुरूष भगवान राम की मूर्ति निर्माण के लिए माँ जानकी के मायके से पत्थर लाने के पीछे ऐतिहासिक, पौराणिक, धार्मिक और वैज्ञानिक मान्यताएं है। कहते हैं कि जिस काली गण्डकी नदी के किनारे से यह पत्थर लिए गए है। वह नेपाल की पवित्र नदी है जो दामोदर कुण्ड से निकल कर भारत में गंगा नदी में मिलती है। इस नदी किनारे शालिग्राम के पत्थर पाए जाते हैं, जो करोड़ों वर्ष पुराने है। इन पत्थरों को भगवान विष्णु का रूप शालीग्राम मानकर पूजे जाने की परम्परा है। इस देवशिला का अपना अलग महत्व है।

नेपाल के पूर्व उप प्रधानमंत्री के मुताबिक वो पहले जनकपुर से जुड़ी श्रीराम की विरासत के अनुरूप रामलला के लिए धनुष भेंट करना चाहते थे। किंतु राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के साथ दो वर्ष तक चले संवाद के बाद यह तय हुआ कि नेपाल की गंडकी नदी से रामलला की मूर्ति के लिए पवित्र शिला अर्पित की जाएगी। ऐसे में श्रीराम जन्मभूमि ट्रस्ट के लोगों ने भी शिला समर्पित करने के लिए नेपाल सरकार और वहां के लोगों का आभार व्यक्त किया है और आशा कि जा सकती है कि यह शिला न केवल भारत-नेपाल संबंधों को मजबूत करेगी बल्कि दोनों देशों के विश्वास, सद्भाव, एकता और आपसी निर्भरता को भी सदा-सदा के लिए प्रगाढ़ता प्रदान करेगी।

□□□

लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092

बाणशय्या

कहानी

लेखिका: गिरिमा घारेखान

अनुवादक: रजनीकान्त एस।शाह

अरे ओ लड़की! यहाँ क्यों आयी हो! चल भाग, भाग यहाँ से।

मैं तो दरवाजे पर ही जड़वत् खड़ी रह गई। मम्मा ने जिसके घर जाकर मिलने के लिए खास सिफारिश की थी उसकी बचपन की उस सहेली के घर मैंने ऐसे स्वागत की तो अपेक्षा ही नहीं की थी। मम्मा ने कहा था, कि वह सहेली उनकी मम्मी के साथ रहती हैं तो फिर यह...?

अधखुले दरवाजे के पीछे खड़ी एक जर्जरित सौन्दर्यमूर्ति को मैंने देखा। उनको देखकर मुझे लगा कि लेडी डाएना जिंदगी के आठ दशक के बाद ऐसी ही दिखती होंगी। पर ऐसे व्यक्तित्व था, कि वह शाब्दिक प्रहार और प्रबल हुआ।

``सुन नहीं रही? चल, मैं कह रही हूँ, चली जा! भाग यहाँ से,'' और फिर ज़ोर से चिल्लाते हुए बोली,``नीलू, देख तो, यह कोई लड़की घर में घुसी आ रही है।''

`नीलू' नाम सुनते ही मेरी जान में जान आयी। मैं गलत घर में तो आयी ही नहीं थी। मम्मा से उसकी इस `नीलू' की कितनी सारी बातें सुनी हैं? इतने में अंदर से नेप्किन से हाथ पोंछते हुए मेरी तारणहार नीलू आंटी प्रकट हुई।

``क्या हुआ मम्मी?'' दरकार और प्रेमरसे शब्द उस मोहक व्यक्तित्व में से बाहर आए, कि उन्होंने मुझे देखा।

``अवनि! अवनि हो न तुम? जबसे तुम्हारा फोन आया तब से मैं रास्ता देख रही थी। अंदर आ जाओ, बैठो बेटा।''

नीलू आंटी की आवाज में एक मीठा सत्कार था। उस सत्कार का हाथ पकड़कर मैं अंदर जाकर बैठी।

``नीलू कौन है यह? निकाल बाहर कर उसे!''

``वोट इज रोंग विथ दिस ओल्ड वुमन?'' मेरा डोकटरी ज्ञान कुलबुलाया।

``माँ, वह मेरी खास सहेली थी ना, भारती? हमारे बगल में ही रहती थी। यह उसकी बेटी है- `अवनि। डॉक्टर है।''

``कितनी मेहनत के बाद उनको भारती की याद तो आयी लेकिन उसकी बेटी?

``जाओ, भारती ही अभी इतनी सी तो थी ना'' उन्होंने कमर तक हाथ ले जाकर भारती की हाइट दिखाई।``उसके तो लड़की? और वह भी इतनी बड़ी?''

नीलू आंटी ने आखिरकार इस वृद्धबालिका के समक्ष उनकी हार स्वीकार की और बात को बदल

दिया। ``मम्मी, आओ, आपका दूध लेने का वक्त हुआ है।'' और अभी नया नया चलना सीखे हुए बालक

को माँ हाथ पकड़कर चलाये, उसी प्रकार हाथ पकड़कर उनकी मम्मी को वे अंदर ले गईं। मुझे हाथ की उँगलियों से पाँच मिनट का संकेत देकर।

कुछ देर तक अंदर से नीलू आंटी उनकी मम्मी को समझाकर दूध पीला रही होने की आवाज सुनाई देती रही। प्रोत्साहन तो ऐसा लगे जैसे धीरज रूपी ग्लास में भरे हुए प्रेम का पान करा रहीं हो। यह सुनते हुए मैं अपना डाक्टरी ज्ञान कुरेदती रही, इस रोग का नाम क्या है? थोड़ी देर बाद आंटी बाहर आयीं।

``सॉरी, अनु बेटा।'' उन्होंने मुझे पाँच ही मिनट में `अवनि' से `अनु बेटा' बनाकर अपना बना लिया। उस अपनत्व के वातावरण में ही उन्होंने बात की शुरुआत की।

``मम्मी सब भूल जाती है। भूतकाल में ही जीती है और अनजान लोगों को जरा भी बर्दाश्त नहीं कर पाती। मेरे बड़े भैया कभी कभी आते हैं तब उनको भी बड़ी मुश्किल से पहचान पाती है। इसलिए तुम अन्यथा....।''

``ना ना आंटी। मुझे नानीमाँ को लेकर जरा भी बुरा नहीं लगा है।''

मुझसे सहज भाव से ही नानीमाँ कह दिया गया था। उनको देखकर किसीको भी अपनी अतिप्रिय बुजुर्ग स्वजन ऐसी महिला की याद आ ही जाए।

``इफ आई एम नोट रोंग, शी हेज डीमेन्शिया, आंटी'' मैंने अपने डॉक्टरी ज्ञान के अनुसार लक्षणों के आधार पर अंतत: इस बीमारी का निदान कर लिया था। डीमेन्शिया बड़ी उम्र में होनेवाली असाध्य बीमारी।

``अनेक डॉक्टरों को दिखाया, पर इसका कोई इलाज नहीं है। उपरांत थोड़ा जेनेटिक भी है....

``मैंने ऐसे केस देखे हैं, आंटी आप चिंता मत करो.'' मैंने उन्हें व्यर्थ आश्वासन दिया।

``चल, छोड़ यह सब। तुम कैसे मुंबई छोडकर यहाँ सूरत आ गई?''

``एम.बी.बी.एस।कर लेने के बाद सूरत के एक मल्टीस्पेश्यालिटी अस्पताल में मैंने नौकरी ली तब मेरी मम्मा ने भी ऐसा ही सवाल किया था और कहा भी था: इतने वर्ष तो तुम हॉस्टल में रही हो। कुछ समय इंतजार करोगी तो यहाँ मुंबई में भी किसी अच्छे बड़े अस्पताल में नौकरी लग जाएगी। हमारे साथ तो कुछ वक्त रह लो। शादी के बाद तो तुम वैसे भी दूर चली जाओगी।

मम्मी की बात सच थी। घर में रहने का मन तो मेरा भी बहुत कर रहा था लेकिन वहाँ रोज एक ही माथापच्ची होती थी। मम्मी हर तीसरे दिन किसी न किसी लड़के के रिश्ते की बात करती और साथ ही साथ थोड़ा बहुत प्रेशर भी जुड़ जाता था। मेरे दिमाग पर अभी तो ताजा ताजा प्राप्त गोल्ड मेडल की चमक सवार थी। मुझे अभी तो पी.जी।भी करना था। स्पेश्यलाइजेशन करना था। रिसर्च करना था और मुझे अपना करियर भी बनाना था। हकीकत में तो मुझे शादी करनी ही नहीं थी। मेरी कईं सहेलियों को शादी के बाद करियर को घर-गृहस्थी या बच्चों के स्कूलबेग में गुम हुई देखा था और मुझे ऐसा करना

नहीं था, पर यदि मैं मम्मा को यह सब बताऊँ तो मुश्किल हो जाए। इसलिए फिलहाल तो नीलू आंटी को जो जवाब दिया, वही जवाब मैंने मम्मा को दिया था। ``सबसे पहले तो जो नौकरी पहले मिल जाए, उसे कर लेना है। अनुभव मिलने लगेगा। हमारी लाइन में खाली बैठे रहना पुसाए ही नहीं।''

``तुम्हारी बात तो सही है अनु। यहाँ तुम्हारा अस्पताल तो बहुत फेमस है। तुम्हें अच्छा लगेगा।

और तुम तो इतने वर्ष हॉस्टल में रहकर पढ़ी

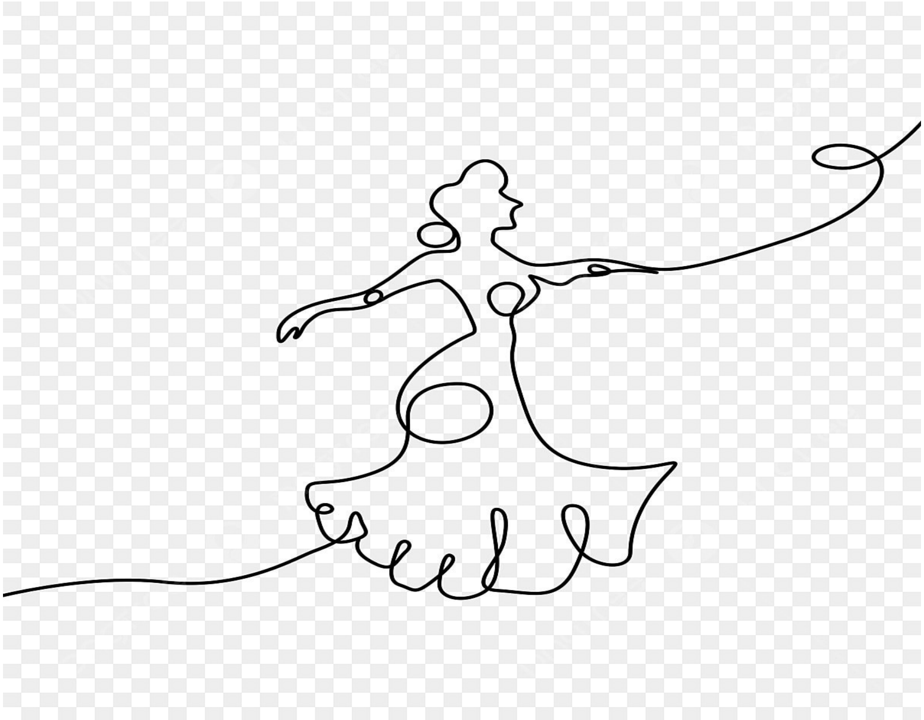

हो। अत: यहाँ भी हॉस्टल में सब रास आ गया होगा, पर

तुम इस घर को अपना ही घर समझना। मम्मी तो ज़्यादातर सोयी ही रहती है। उसे तो दिन-रात का अब ज्यादा पता नहीं चलता। धीरेधीरे तुम दोनों एकदूसरे की आदत में शामिल हो जाओगे। फिर मम्मा तुम्हें देख ऐसे चिल्लाएगी नहीं। और मुझे इतना तो अच्छे से मालूम है कि मेरे साथ तो तुम्हारी अच्छी जमेगी ही।'' आंटी की आँखों में और शब्दों में आत्मीयता थी।

नीलू आंटी के साथ अनुकूल आ जाए ऐसा ही था। उम्र तो होगी लगभग पचास की पर उनके कुंआरे शरीर में मम्मी की ओर से प्राप्त सौन्दर्य की विरासत अच्छे से संभली हुई थी। वह `यंग हार्ट इन अ यंग लुकिंग बॉडी', और बातों में कहीं भी बुज़ुर्गीयत भी नहीं। मेरे जैसी होकर मेरे साथ मेरी रुचि की बातें करे। उन बातों के प्रवाह में उम्र का फर्क तो पता नहीं कहाँ बह गया। जैसे जैसे मेरी मुलाकातें बढ़ती गईं वैसे वैसे मेरी समझ में आता गया कि यह `यंग एट हार्ट' लगनेवाली आंटी के विचार हकीकत में कितने परिपक्व थे। उनके पूर्ण पल्लवित गुलाब जैसे मन की एक के बाद एक पंखुडियाँ खुलती गईं और मैं उनकी महक में खींची चली गई।

एक दिन तो काफी समय से कुलबुलानेवाला और कुछ हद्द तक मुझ पर लागू होनेवाला प्रश्न मैंने पूछ लिया। ``आंटी, आप अभी इतनी सुन्दर दिखती हैं, तो जवानी में तो लाइन लगी होगी, तो आपने शादी क्यों नहीं की? कोई खास वजह?''

अनु, हम चार भाई-बहन, सबसे बड़े भैया तो बरसों पूर्व एक बंगाली लड़की से शादी करके विदेश चले गए थे। तब वोट्सएप, स्काइप अरे टेलीफोन की भी इतनी सुविधाएं नहीं थीं। भौगोलिक दूरी ने कब मन की दूरियाँ बढ़ा ली, कुछ पता ही नहीं चला। अब तो वह कोलकाता में हैं और बहुत बड़ी कंपनी के बहुत बड़े ओहदे पर हैं, इसलिए उन्हें छुट्टी भी नहीं मिलती।''

``सही बात है, इसलिए नहीं आ पाते होंगे। मैं भी इतने समय से आती जाती रही हूँ पर मैंने उन्हें देखा नहीं है।''

`उनके बाद मीताबहन। उनका घर तो थोड़ी दूरी पर है। तुम उन्हें यहाँ एकबार मिली भी हो।''

``एक रविवार को नानीमाँ की दवाइयाँ देने के लिए आयीं थीं, वही ना?''

``हाँ, वही।''

में कुछ दवाइयाँ लिए बड़ी टोयाटा गाड़ी लेकर आयी हुई वह मीता आंटी मेरी नजर समक्ष आ गई। आंटी के हाथ में दवाइयाँ और बिल रखकर उनकी मम्मी के पास पाँच-दस मिनट के लिए बैठी थी।

कुछ बातें की थी। `भारती की लड़की' के रूप में मेरा परिचय होने के बाद उन्होंने मुझे उनके घर आने

के लिए औपचारिक आमंत्रण भी दिया था। बाद में नीलू आंटी द्वारा दिये गए पैसे लेकर,`चल, मुझे देर हो रही है, बाद में फिर कभी आऊँगी।'' कहकर चली गईं थीं।

``चौथा कौन?''

``मीताबहन से छोटी एक और बहन थी- क्षमा।''

``थी?''

``हाँ, थी। क्षमा का दिमाग शरीर की गति के अनुरूप चल नहीं सकता था। जन्मजात तकलीफ

थी। रही तो लड़की ही इसलिए शरीर शरीर का काम करता पर समझदारी के हिसाब से बच्ची। मानो शिकारी की प्रतीक्षा कर रहा कोई अबोध कबूतर। एक दिन पप्पा का दिल उसकी चिंता का इतना बड़ा भार झेल नहीं सका और धड़कना बंद हो गया। उसी अरसे में तुम कहती हो ऐसे मेरे लिए `लाइन लगी थी।' आँखों को एक-दो जंचे भी, पर दिमाग यह कहता रहता था कि मैं चली जाऊँ और मम्मी यदि नहीं रहे तब क्षमा का कौन?''

``ओह! फिर?''

``फिर क्या? दिमाग ने मन की बात नहीं मानी और अपनी मनमानी की।''

``और क्षमा?''

``क्षमा तो आयी ही थी अपने कुछ कर्म पूरे करने के लिए। उसके हृदय में एक देवदूत बैठा हुआ था। वह थोड़े ही न उसे पृथ्वी पर ज्यादा समय रहने देगा?''

``तो फिर आप?''

``वह गई तब तो मेरी उम्र निकल चुकी थी। यदि खोजा होता तो कोई तो मिल ही जाता। पर तब मम्मी बालक हो गई थी! बालक को छोडकर क्या मम्मी कहीं जा सकती है भला? संबंध तो वही के वही हैं मात्र रोल में अदला-बदली हो गई है।''

मेरा दिल भावुक हो गया।

अपने परिवार के लिए सारा जीवन समर्पित कर देने की बात नीलू आंटी ने ऐसे सहज ढंग से कही थी कि मानो अपनी मनपसंद चॉकलेट किसी और को खाने के लिए दे दी हो! मैं भी बिना कुछ बोले, अहोभाव पूर्वक उनको देखती

रही। निरपेक्ष भाव से, बिना किसी शिकायत के अपनी जिंदगी की परतें खोलती हुई वह नीलू आंटी मेरे आदर के पर्वत के शृंग पर बैठ गई, एक सावनी बदली की भांति। उनके अस्तित्व का अर्थ क्या? बस, बरसकर खाली होने के लिए? कुछ देर तक मैं उनका हाथ पकड़े बैठी रही। उस दिन पीढ़ियों का फासला पाटकर के हम दोनों सखियाँ हो गईं। उस सखीभाव के कारण ही मैंने कह दिया।

``एक सरस(अच्छी) जिंदगी व्यर्थ ही नष्ट हो गई, क्यों आंटी?''

``ना अनु, एक सरस जिंदगी अच्छे से काम आ गई।''

दसेक दिन बाद एक शाम अस्पताल से निकलने को ही थी कि आंटी का फोन बजा,``मम्मी बाथरूम में फिसल गई है, तुम आ जाओ।''

मैं घबड़ा गई। इस उम्र में व्यक्ति फिसलकर गिर जाए और हड्डी टूट जाए तो शायद ही ठीक हो सकती है। मैं सीधे वहाँ पहुंची। बायां पैर लटक गया था। मैंने कहा,``फ्रेक्चर है, मेरे अस्पताल में ही ले चलते हैं, नजदीक भी है और मेरे रहते कुछ फर्क भी पड़ेगा। मैं पैर को थोड़ा सपोर्ट दे देती हूँ, पर यदि पैर सीधा रहे तो बेहतर। मीता आंटी को फोन करके गाड़ी मँगवा लो।''

एक दिन अंतत: रात में ही नानीमाँ दु:ख से मुक्त हो गईं। सबको फोन पर उनके देहविलय की सूचना दे दी गई। बड़े भैया तो तीन दिन के लिए सिंगापोर गए हुए थे और भाभी के लिए अकेले आ पाना मुश्किल था। सबेरे मीता आंटी और अंकल, सगे-संबंधी और पड़ोसी इकट्ठा हो गए थे। हेमांग अंकल को लक्षित कर परस्पर हो रहे इशारे, कान पर टकराती निंदा और कुहनियों को टकराते देख मेरा मन विक्षुब्ध था। क्या यह सब नीलू आंटी की नजर से बाहर थोड़े ही होगा? करणीय औपचारिकताओं को निबटाकर नानीमाँ के जर्जर खंडहर रूपी देह को शववाहिनी में रखा गया।

मीता आंटी का ड्रायवर नहीं था इसलिए गाड़ी को भेजा जा सके ऐसा नहीं था! नीलू आंटी ने कहा, ``वैसे तो मीताबहन ड्राइव करती ही हैं पर शायद किसी काम में व्यस्त होगी। उनकी ससुराल बड़ी

बड़ी है, इसलिए आनाजाना चलता रहता है। टेक्सी बुला लेते हैं।''

मैंने फोन करके अस्पताल से एम्ब्युलंस बुला लिया। नानीमाँ के पैर के तीन टुकड़े हो गए थे। जरूरी परिचर्या, सूचनाएँ, दवाइयाँ लेकर हम घर वापस लौट आए।

ऑपरेशन तो हो सके ऐसा नहीं था। दो दिन के बाद भी उनको दर्द हो रहा है, ऐसी खबर मिलते ही मैं उनको देखने के लिए गई। अंदर कमरे में कोई कंप्यूटर पर कुछ काम कर रहा था। मेरी आँखों में उगे हुए सवाल को पढ़कर नीलू आंटी ने कहा, ``मेरा मित्र और मेरी खास मित्र पौलोमी का पति-हेमांग। कॉलेज में हम तीनों साथ थे। मम्मी के कारण मैंने दस से छह की नौकरी छोड़ दी। उसके बाद हेमांग ने मुझे उसकी पार्टनर बनाया। हम कंपनियों के एकाऊंट्स, जोबवर्क आदि करते हैं। वैसे तो हमने ऑफिस ले रखा है और मम्मी को मैं आया के पास रखकर दो-तीन घंटे चली जाती थी। पर अब तो चौबीसों घंटे मम्मी का ध्यान रखना पड़ता है।''

``तो अब!'' मैंने सोचा कि इतनी सारी समस्याओं के चलते आंटी की कम आय और उद्यम भी बंद हो जाएगा क्या?

``कोई बात नहीं, अब हेमांग मुझे घर बैठे काम देता है। वह भी यदि अधूरा रह जाए तो वह खुद शाम को घर आकर पूरा कर लेता है। सुबह ऑफिस जाते समय पौलोमी दे जाती है।'' तीन दशक से दृढ़ इस मैत्री को मैं सम्मान के साथ सलाम करती रही। निकल रही थी तब नीलू आंटी ने कहा,``मैंने मीताबहन को फोन करके खबर कर ही दी थी, पर तुम भी कहते जाना, रास्ते में ही उनका घर पड़ता है।'' मीता आंटी का पता लेकर मैं निकली, मैं उन्हें एकबार ही मिली थी। मुझे तो आश्चर्य हो रहा था कि बेटी की शादी होते ही वह परायी हो जाती है, ऐसा कहा जाता है। पर क्या उसके लिए उसके मातापिता भी पराए हो जाते होंगे? ससुराल बड़ा इसका मतलब यह थोड़े ही है, कि उसमें खोकर मम्मी को देखने के लिए भी आया नहीं जाए? या फिर भावनाओं को भी पैसों का जंग लग जाता होगा? उनके घर जाकर मैंने नानीमा की खबर सुनाई। उन्होंने

कहा, ``हाँ, नीलू का फोन आया था, पर मैं जा नहीं सकी। दो-तीन

दिन में हो आऊँगी।'' बाद में वह जरा टोन बदलकर बोलीं,``वह हेमांग जाता है ना वहाँ उसकी मदद के लिए, इसलिए मैं थोड़ी राहत अनुभव कर रही हूँ।''

मैं आश्चर्य से इस बेटी को, बड़ी बहन को सुनती रही, कि उन्होंने मुझे सीधे ही पूछ लिया,``अभी भी वहाँ था ना वह? मेरे उनको तो वह जरा भी सुहाता नहीं है।'' फिर अपनी आवाज को कुछ धीमी करके एक और वेधक प्रश्न पूछा,``रोज आता है ना? मुझे तो उसके पड़ोसी कह रहे थे। हम तो मना कर रहे थे पर पप्पा ने घर नीलू के नाम कर दिया है। हमें तो डर है कहीं वह घर हेमांग ही हजम न कर ले!''

मेरी आँखों में उठे क्रोध के काजल की लकीरें मेरे चेहरे पर फैल जाए उससे पहले मैं उनके बंगले की सीढ़ियाँ उतर गई। उस दिन मुझे सगे (स्वजन) और प्रिय के बीच रहा फर्क समझ में आ गया था।

दो दिन के बाद नीलू आंटी का फोन फिर से आया,``अनु, पता नहीं, किस हक से मैं तुम्हें परेशान कर रही हूँ, पर तुम जरा आ जाना। मम्मी को असह्य पीड़ा हो रही है।'' तब मैं हॉस्टल पहुँचकर

रूम में टीवी पर महाभारत देख रही थी। डायाबिटीज़, फ्रेक्चर और असह्य पीड़ा? मैं तुरंत पहुँच गई। मेरा डर सही था। गेंग्रीन हो गया था। इस बार मैंने सीधे एम्ब्युलन्स ही बुला लिया। हेमांग अंकल ने नानीमाँ को बालक की भांति उठाकर अंदर सुलाया और हमारे साथ अस्पताल भी आए। जाँचने के बाद डॉक्टर ने मुझे बाहर बुलाकर कहा,``डॉ.अवनि, गेंग्रीन है उन्हें। पैर को घुटने से काटना पड़ेगा। पर उनकी यह उम्र और यह शरीर, शायद ऑपरेशन टेबल पर ही ....।''

मैं अवाक् थी, पर मुझे नीलू आंटी को इस बात से वाकिफ तो करना ही पड़ा। आखिरी निर्णय तो उनको ही लेना था। उन्होंने ऑपरेशन नहीं करवाने का निर्णय किया। कुआँ और खाई के बीच कुएँ को पसंद किया। माँ को शायद कुछ और श्वास मिल जाए। मीता आंटी और कलकत्ता स्थित बड़े भैया को भी फोन पर सारी जानकारी दे दी। उसके बाद मैं हॉस्टल छोडकर आंटी के घर ही रहने के लिए चली गई। कभी किसी समय नानीमाँ को कुछ हो जाए तो आंटी क्या करेगी? मीता आंटी दोपहर में आ रही हैं या नहीं, ऐसा मैं पूछती नहीं थी। मैं अस्पताल से सेम्पल की दवाइयाँ ले आती थी। ड्रेसिंग भी मैं ही करती थी। आंटी तो उस समय रूम में भी आती नहीं थी। पर दरवाजे पर से झांककर वापस लौट जाती थीं। कहतीं, कि ``मुझसे अब मम्मी का दु:ख नहीं देखा जाता।''

एक दिन अंतत: रात में ही नानीमाँ दु:ख से मुक्त हो गई। सबको फोन पर उनके देहविलय की सूचना दे दी गई। बड़े भैया तो तीन दिन के लिए सिंगापोर गए हुए थे और भाभी के लिए अकेले आ पाना मुश्किल था। सबेरे मीता आंटी और अंकल, सगे-संबंधी और पड़ोसी इकट्ठा हो गए थे। हेमांग अंकल को लक्षित कर परस्पर हो रहे इशारे, कान पर टकराती निंदा और कुहनियों को टकराते देख मेरा मन विक्षुब्ध था। क्या यह सब नीलू आंटी की नजर से बाहर थोड़े ही होगा? करणीय औपचारिकताओं को निबटाकर नानीमाँ के जर्जर खंडहर रूपी देह को शववाहिनी में रखा गया। साथ ही शव जैसी आँखें लिए

बैठीं आंटी और उनका हाथ थामे मैं। अग्निदाह देते समय भी आंटी की आँखें अश्रुरहित ही थीं, क्योंकि यह उनकी मम्मी की मौत थोड़े ही थी? यह तो एक अभिशप्त आत्मा की अनंत दु:खों से मुक्ति थी। आँखें तो मेरी भी कोरी ही थीं, क्योंकि मुझे तो इस मृत्यु में दो मुक्तियाँ दिखाई देती थीं।

तीन दिन के बाद बड़े भैया भी आ गए थे। रात्रिवेला में परिवार के सब लोग मिले तब अग्निदाह के बाद का पोस्टमॉर्टम शुरू हुआ। नानीमाँ की सारी चिंताएँ और दु:ख का कारण नीलू आंटी थीं, यह साबित किया गया और अभिमन्यू की भांति उनको टार्गेट किया गया।

``तुम्हें मुझे पहले बताना चाहिए था ना? तो मैं टूर कैंसिल कर देता।''

`` लेकिन भाई, आपको फोन पर बताया तो था ना?''

‘‘ तुम्हे बताना तो चाहिए ना कि मम्मी इतनी सिरियस है?’’

सीरियसनेस के थर्मोमीटर में कौनसा पारद डालकर डिग्री नापनी होती है? मेरे मन में सवाल पैदा हुआ।

‘‘अरे, तुम्हें तो क्या, मैं इतनी नजदीक हूँ फिर भी मैं मम्मी से आखिरीबार मिल भी नहीं सकी....’’ कुछ बोलने के लिए मेरा मुंह शायद खुल गया पर नीलू आंटी की आँखों ने मुझे रोक दिया।

‘‘ मम्मी तो जैसे तुम्हारे अकेले की ही थी।’’ – एक और आक्षेप। ``तो क्या तुम्हारी थी?’’ मुझे चीख-चिल्लाकर पूछना था, पर इस पारिवारिक चर्चा में मैं परायी थी और आंटी ने मेरा हाथ दबाये रखा था। एक के बाद एक तीर छूटने लगे थे और यह अर्द्ध शतक व्यतीता भीष्म पितामह की भांति वे सारे तीर अपने ऊपर लेती जाती थी। उसने शादी नहीं की, क्या यह उसका कसूर था? उसके एक अच्छा भला, मददगार पुरुष मित्र था, क्या यही उसका अपराध था? वह उन्नत मस्तका खुद्दारी से अपने बल पर जी रही थी, क्या यही उसका दोष था? अविवाहिता पर हर उम्र में समाज को नजर रखने का हक? मुझे पेट में अकुलाहट हो रही थी और उल्टी हो जाएगी ऐसा लगा। इन्सानों से भी घृणा होती होगी कभी? मैं खड़ी होकर अंदर चल दी।

दूसरे ही दिन मैं हॉस्टल में रहने के लिए चली गई। घर में सब लोग हों तब तक तो वहाँ जाना ही नहीं है, ऐसे निश्चय के साथ। दूसरे सप्ताह मम्मा का फोन आया। ``जब वह उठौनी में आयी तब तो मैंने जान-बुझकर कुछ कहा नहीं। पर आज कह रही हूँ। आई.आई.एम।में पढ़ रहे बेंगलोरवाले लड़के की मम्मी ने....’’ मैंने ज्यादा सुने बिना ही कह दिया,``उन लोगों को यदि इस रविवार को अनुकूलता हो तो पूछ लेना। मैं शनिवार रात तक पहुँच जाऊँगी। एकबार मिल लेने में क्या एतराज है?’’ मम्मा को भी बड़ा आश्चर्य हुआ होगा, क्योंकि थोड़ी देर तक तो वह कुछ बोली नहीं। वह मुझे और कुछ पूछे उससे पहले मैंने फोन रख दिया। मैं उसे कैसे कहूँ कि बाणशय्या पर लेटने के लिए मैं तैयार नहीं हूँ।

□□□

लौट कर फिर आ!

थका हुआ हिया-ठिया
थके हुए मन-नयन
पोर-पोर दुख रहे
याद में घिरे-तिरे
जहन-सहन
कह रहे वही कहन
लौट कर फिर आ!

टुक-टुक आँख में
एक उफ साँस में
भीग रहे पल-छिन
धूल में फूल लिए
कह रहे पुकार कर
लौट कर फिर आ!

आह किस फेर में
टूट गए गीत के छंद सब
रूठ गए नेह के पंथ सब!
देहरी पर दूब-धान
मौन मनुहार लिए
कह रहे
लौट कर फिर आ!

तिमिर के जाल में टिम-टिम
छोह से, मोह से!
जल रहे अब भी दीप से!!
कह रहे लौट कर फिर आ!!!

संजय कुमार सिंह

जरा बता दो मुझे

जिस्म से उतारकर जिस्म
ये जो ले जा रहे हो
जरा बता दो मुझे
प्यार की आड़ में
ये जो कच्चा माँस निगल रहे हो
जरा बता दो मुझे

देवी-देवी कहकर
ये जो काट रहे हो जुबां
ख़ामोश कर रहे हो कब से
जरा बता दो मुझे

देह का जिक्र सुनके
मै छिपाती हूँ खुद को खुद में
और
ये जो वस्त्रहरण करते हो आँखों के लेंस से
लगा देते हो टूकड़ों का ढेर नज़र की धार से
जरा बता दो मुझे

डर है मुझसे ?
या
दफना रहे हो मुझको लूट जाने के भय से
जरा बतादो मुझे

मैं नहीं तो तुम कहाँ
तुम नहीं तो मैं कैसे-ये समझते नहीं
या नासमझ हो हद से
जरा बता दो मुझे
जरा बता दो मुझे ...।।

संघमित्रा राएगुरु

समीक्षा के लिए पुस्तक अनिवार्यतः भेजें : संपर्क भाषा भारती, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली-110092

साँसों में सरगम के सौंदर्य का सहज ही दिग्दर्शन करा देने वाला **प्रेम** पंचम पुरुषार्थ है। अनिर्वचनीय अनुभूति की दिव्यता का परत-दर-परत साक्षात्कार करना और फिर अपने बोध को बैखरी में उतारना एक साधना है। प्रेम विषयक लिखना मतलब घनघोर हलचल में दृढ़ता से स्थिर हो जाना है। इसी स्थिरता की अभिव्यक्ति है- ***प्रीति-प्रवाहिनी*** कृति। चित्रा जी ने अपने लेखन हेतु स्वयं को कई बार अतीव लघुकाय महसूस किया है जोकि उनकी स्वयं के प्रति ईमानदारी की स्वीकृति है। अनुभवगम्य समष्टिभाव को क्रमशः लिखना निःसन्देह दुर्लभ कार्य है।

प्रीति-प्रवाहिनी पुस्तक विवरणात्मक शैली में लिखी गई है जिसमें कतिपय प्रसंग विश्लेषणपरक हैं। पुस्तक में अवसर-अनुकूल पद्यात्मक उदाहरण अवबोधन हेतु पुष्टिकारक हैं। भाषा की सहजता हर स्तर के पाठकों को आकर्षित करने में समर्थ है। पुस्तक के आरम्भ में ही लेखिका का संक्षिप्त परिचय जीवनी विधा का प्रतिनिधित्व करता है। उसके बाद **विमर्श** नामक विहगावलोकन पुस्तक में प्रविष्टि का आमंत्रण देता है। परश्च भूमिका के रूप में लिखा गया लेखकीय विचार आत्मकथात्मक भाष्य है। आरंभिक नान्दी **"प्रस्तावना"** और पुष्पिका के रूप में **आभार** ज्ञापन से सुगठित यह पुस्तक प्रेमानुभूति के विविध सोपान का विश्लेषण है। प्रथम अध्याय **प्रस्तावना** में गूढ़ प्रेमानुभूति को लिखने के प्रति आंतरिक उहापोह का चित्रण है। द्वितीय अध्याय **"प्रेम की सहज अभिव्यक्ति"** है। इसमें निहितार्थ यह है कि बहिर्जगत में प्रेमिल तरंगें विविध

पुस्तक समीक्षा

लेखिका: चित्रा विशाल श्रीवास्तव (प्रयागराज)
प्रकाशन: पोएट्रीवर्ल्डऑर्गेनाइजेशन
प्रकाशन वर्ष: 2022

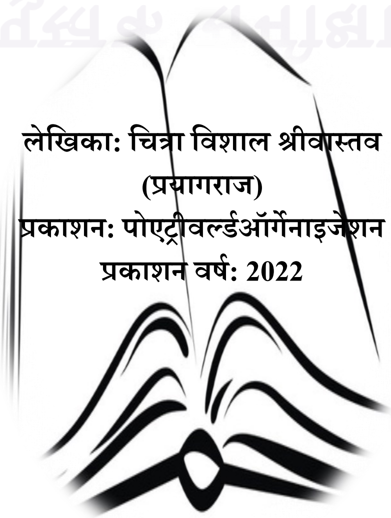

रूपों में अभिव्यक्त होती हैं। कहीं प्रेमी छंद रचता है तो कहीं प्रेमिका स्वेटर बुन रही होती है। किसी न किसी माध्यम से एक-दूसरे पर अधिकार जताना या उससे शासित होना ही विविध प्रकार की अभिव्यक्ति के माध्यम से सहज बनता जाता है।

तीसरा अध्याय **"प्रेम की अलौकिकता"** है। अलौकिकता के चित्रण में सामान्य-सा जीवन प्रेमिल होकर दमकने लगता है। धन्यता की अनुभूति होने लगती है। विश्वास और समर्पण में भक्ति उपजती है, यही भक्ति प्रेमी में देवत्व का संधान करती है। और प्रेमिका को महादेवी के पद की प्रतिष्ठा मिल जाती है।

चौथे अध्याय में **"प्रेम का आचरण"** दर्शाया गया है। इसमें तो रामचरितमानस में रचित सुतीक्ष्ण मुनि की अवस्था ही हर व्यष्टि में उद्भासित होती है। तुलसी बाबा के उदाहरणों से ही इसे स्पष्ट समझना समीचीन होगा। सुतीक्ष्ण मुनि राम से मिलने जाते हैं तब भाव-विह्वलता में उनकी स्थिति ऐसी है—

दिसि अरु बिदिस पंथ नहिं सूझा। को मैं चलेउँ कहाँ नहिं बूझा॥

कबहुँक फिरि पाछें पुनि जाई। कबहुँक नृत्य करइ गुन गाई॥ रामचरितमानस/ अरण्यकांड

भाव-तरंगों के उछाह से जैसे शरीर में विह्वलता भरती जाती है। राह में ही स्थिरता आ जाती है और कटीले कटहल की तरह रोमावलियाँ खड़ी हो जाती हैं--

मुनि मग माझ अचल होइ बैसा। पुलक शरीर पनस फल जैसा॥ रामचरितमानस/ अरण्यकांड

यही प्रेमिल आचरण है। यहीं जीवन असीम हो जाता है।

"प्रेम की प्रवृत्ति" नामक पाँचवें अध्याय में प्रेम जिजीविषा बढ़ा देता है। अहंकार-अभिमान सब तिरोहित हो जाता है। मन का सौंदर्य देह की प्रत्येक कोशिकाओं में छलकता रहता है। फूल-पत्ती, बादल-आकाश, हवा-पानी में प्रिय ही प्रिय दिखता है।

"प्रेम मन का स्पर्श" छठवां अध्याय है। प्रेमिल स्पर्श में मुक्तता है। विश्वसनीयता है। माटी की देह वस्तु मात्र न होकर चिन्मयी-

कल्पना दीक्षित

आभा वाली अनमोल बन जाती है। सातवें अध्याय **"प्रेम की प्यास"** में प्रेम में ही तृप्ति मिलती रहती है...! तृषा बढ़ती जाती है..! यही असंगतता ही दुर्लभ सौंदर्य है। इसमें प्रेम की प्यास "प्रेम तृषा बढ़ती भली" की ही सम्पुष्टि करती है।

"प्रेम का अंकुरण" नामक आठवें अध्याय में प्रेमिल अँखुआ विषमता में भी सौंदर्य भर देता है। परिवेश और परिस्थितियों से शिकायतें बिला जाती हैं। इसे सम्भालना..।संवर्धित करना ही तपस्या है जिसमें अस्तित्व निखरता जाता है। अंतर्वस्तु के स्तर पर यह अध्याय अत्यधिक सीमित/ संकुचित है। यहाँ आंशिक निर्वचन मात्र हुआ है। **"प्रेम देने का भाव"** शीर्षक नवें क्रम में है। यहाँ कुछ पाना नहीं अपितु लुट जाना होता है। सर्वस्व लुटाकर लुटते रहने में ही भावजगत की अमीरी बढ़ती जाती है। जिंदगी दाता बन जाती है। इस अध्याय में स्पष्टता दर्शित है।

"प्रेम की अवस्थाएं" दसवें अध्याय के रूप में नियोजित हैं। आरंभिक एहसास से लेकर स्व के सौंदर्य को भरपूर जिए जाते रहने की यात्रा में आने वाले विविध पड़ाव ही अवस्थाएं हैं। यह अध्याय बस ये समझिए "बिन परतीति होय नहिं प्रीति" का भाष्य है।

ग्यारहवें क्रम में **"प्रेम एक सुंदर भाव"** शीर्षक है। यहीं उज्ज्वल रस है। यह उज्ज्वलता ही पवित्रता-आधायक होती है। जीवन पूजनीय बनता चला जाता है। इस अध्याय में प्रेम की पवित्रता और उच्चता तक पहुँचने का प्रयास दिखता है।

"प्रेम की स्वयं से भेंट" बारहवें अध्याय का शीर्षक है। स्व के दुर्लभ विस्तार से सूक्ष्म परिचय पाना हो तो प्रेमिल बन जाना ही एक मात्र अवलम्ब है।

"प्रेम का मूल्य" तेरहवें क्रम में अनुबंधित है। कहते हैं न..।'बांधे बनिया बाजार नहीं सजती...!' मतलब जिस प्रकार बनियों/ व्यापारियों को बंधक बना लेने में मेले का सुख असम्भव है। ठीक उसी तरह भौतिक सुविधाओं से प्रेम खरीदना सम्भव नहीं है। अथाह रुपए दे देने, कई फ्लैट, फॉर्म हाउस किसी के नाम खरीद देने पर भी व्यक्ति आभारी हो सकता है प्रेमी नहीं। पवित्रतम भावों पर ही प्रेमी न्यौछावर हो जाता है। भावों की निर्मलता, पवित्रता, स्व का समर्पण, बदले की भावना का अभाव, केवल चाहनाओं का चमत्कार ही प्रेमी बना देता है। **"प्रेम की अबोल भाषा"** चौदहवें क्रम में है। इस अध्याय में प्रेमाभिव्यक्ति हेतु मातृभाषा ही मूल है। मन का मर्म मातृभाषा में ही उद्घाटित होता है। अस्तित्व का आधार मातृभाषा होती है उसी आधारभूत नाद का विनिमय बैखरी में होने लगना ही अतिशय नैकट्य है।

"प्रेम का मौन प्रवेश" पन्द्रहवें अध्याय का विषय है। इसमें लेखिका दृष्ट वस्तुस्थिति से वास्तविक भाव-सत्यता की तुलना करते हुए प्रेम को अनावश्यक से विलग करती हैं। साँसों में समाहित भावतरंगें मौन बना देती हैं। विविध कार्यों में संलग्न प्रेमिल जीव दुर्लभ योग में रत रहता है, जीवन मौन में मिल जाता है।

"प्रेम में समर्पण" सोलहवें क्रम में वर्णित है। स्व को स्वाहा कर देना ही समर्पण है यह समर्पण ही अमरता देता है तभी निर्भयता मिल जाती है। **"प्रेम परमानन्द ईश्वर"** नामक सत्रहवां अध्याय है। इसमें भावार्थ है कि प्रेमिल अनुभितियाँ आलम्बन को आराध्य बना देती हैं।

"प्रेम में हो जाना" अठारहवें अध्याय का विषय है। विप्रलम्भ की दस अवस्थाओं की सरसता ही लय की अंतर्यात्रा है। सर्वस्व हार जाने में ही जिंदगी जीत जाती है।

"प्रेम की मृगतृष्णा" उन्नीसवें क्रम में है। प्रेम

उम्मीद देता है। एक झलक पाने की उम्मीद या कण-कण में प्रिय को देखते रहने का सुख प्रेमी ही जानता है। यह अनुभवसंवेद्य सुख है।

अंतिम और बीसवें क्रम में "**आभार**" ज्ञापित है। प्रेमानुभूति की अजस्र धारा में वर्तनी के प्रति लेखिका की असजगता स्पष्ट है। करुणा शब्द में दीर्घ ऊकार है तो कीर्तिमान शब्द के त में दीर्घ ईकार। पृष्ठ संख्या इकतीस की पाँचवीं पंक्ति का प्रथम शब्द छींण है जिसे क्षीण होना चाहिये। पृष्ठ पचपन में छण लिखा है जिसे क्षण होना चाहिए। प्रेम में त्रुटियां क्षम्य होती हैं लेकिन पुस्तक में त्रुटियाँ अपराध हैं क्योंकि पुस्तक पढ़कर अध्येता अनुगामी बनते हैं। और भरतमुनि भी हितं बुद्धिविवर्धनम् की उपस्थापना करते हैं। प्रेम समर्पण की परीक्षा है। यहाँ स्व का विलय करते हुए पूर्ण लय हो जाना ही सफलता है। इसी हवन में स्वाहा होते रहने में ही जिजीविषा बढ़ती है। स्थूल से अभिव्यक्त होकर भी प्रेम स्थूल-मुक्त है। दुर्लभ प्रेमिल अनुभूतियों की पाप-पुण्य के सतही संसार से ऊपर उठते हुए सत्यलोक तक पहुँच रही होती हैं। प्रेम अपवर्ग तक पहुँचा देता है क्योंकि इसमें प वर्ग का अभाव हो जाता है। प वर्ग मतलब प फ ब भ म। प से पाप, फ फलाकांक्षा, ब से बदनामी, भ से भय, म से मरण। इस प्रकार प्रेमिल उज्ज्वल-आभा में पाप, फलाकांक्षा, बदनामी, भय मरण का पूर्णतया अभाव होता चला जाता है। यहीं अमरता है। यही सुगंधिम् पुष्टिवर्धनम् है.....! प्रेमानुभूति लिखने में अस्तित्व के सॉफ्वेयर की अंतर्यात्रा मूर्त होती है। भावों की धवल-धारा निर्बाध लिप्यन्तरित होकर अनुभूतियों को विजेता घोषित कर देती है। सूक्ष्म शरीर के कोशत्रय मनोमयकोश-विज्ञानमयकोश-आनन्दमयकोश में व्याप्त भावसम्पदा अन्नमय-प्राणमय कोश का आश्रय लेकर रूपायित हो जाती है। बाजारीकरण के दौर में प्रेमपरक यथार्थ चित्रण के लिए लेखिका को साधुवाद...! यह पुस्तक गझिन अनुभूतियों की सहज अभिव्यक्ति है जिसे शब्द-समुच्चय के स्तर पर मैं "प्रेम का ककहरा" शीर्षक से अभिहित करती हूँ। मैं चित्रा जी के उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ.....!

समीक्षार्थ प्राप्त पुस्तकें :

1 धुंआ-धुंआ ज़िन्दगी : श्रीगोपाल सिंह सिसोदिया

2 दो मिसरों में : मनीष बादल

लघुकथा

मीरा

पण्डित जी ने बदहवास मीरा को देखकर पूछा,- "मीरा! तुम्हारी आँखों में ये आँसू? ये बिखरे बाल तुम्हें क्या हुआ??"

पर कटी सी मीरा ने कहा "पुजारी जी, मेरे चाचा को पुलिस पकड़ ले गई! आप जानते हैं, मेरा उनके सिवाय और कोई नहीं है। उन्होंने मुझे आपके पास रहने को कहा है, इसीलिए मैं यहाँ आई हूँ।"

स्वतंत्रता संग्राम के समय का एक दिन था वह, पुलिस ज़रा से शक पर लोगों की धर-पकड़ कर रही थी।

पुजारी का मन द्रवित हो गया। उन्होंने मीरा को प्रसाद खाने को दिया।

प्रसाद खाने के बाद मीरा कहने लगी, "लोगों को भजन सुनाकर और फूलों की माला बनाकर जीवन व्यापन कर लूँगी। अपनी कुटिया में स्थान दे दीजिएगा।" पुजारी स्वयं वृद्ध थे। बेटे बहु शहर में रहते थे । वे भी शाम की आरती के बाद अपने बाल बच्चों के पास शहर चले जाते थे।

मीरा दिन में पुजारी जी की सेवा कर, पुजारी जी कुटिया में रात गुजारती।

कुटिया के सामने पीपल का पेड़ जिसमें मधुमक्खियों ने छत्ता बना रखा था।

मीरा पेड़ के नीचे बाँसुरी की धुन के साथ गाना सुनाती और फूल बेचती। लोगों की घूरती नज़रें, तरह तरह की बातें, लोगों के अभिप्राय, प्रलोभन वह ख़ूब समझती थी। पर जैसे ही कोई उससे ज़बरदस्ती छेड़छाड़ की कोशिश करता, वह पीपल के पेड़ पर बने मधुमक्खियों के छत्ते को कंकरी फेंककर हिला देती और छेड़ने वाले भाग जिते। उसे लगता किशन जी उसकी रक्षा को आये हैं। पुजारी जी कहते रोज़ इतने लोगों से सामना होता है। तुम्हें कोई पसंद आये तो तुम्हारी शादी करा दें। हमें तो ये कुटिया मंदिर परिसर मालिक के बेटे को सौंपनी होगी। यहाँ फार्म हाउस बनाने वाला है।

तभी अचानक एक रात, एक अनजान मुसाफ़िर कुटिया में शरण लेने पहुँचा। मीरा ने घनघोर बारिश देखते शरण तो दे दी, पर भयभीत भी थी। मुसाफ़िर को समय काटना था। उसने मीरा की आप बीती कहानी सुनी।

और मन ही मन कहा - और कहा -एक तेरा साथ ही काफी है ! गुजर बसर करने को !

सुबह जब वह जाने को तैयार हुआ तो पुजारी और दूसरे लोग भी आ गये ! और तरह तरह की बातें करने लगे ।जब पुजारी जी ने मीरा का पक्ष लिया और निर्दोष युवक को कलंकित होने से बचाया तो परिसर के लोगों ने मन्दिर के मालिक से जाकर कहा - हमें ऐसे ढोंगी हवस के पुजारी की आवशकता नही हैं। इसने तो पहले ही अपने परिवार को अपने से दूर रखा है।

पर मुसाफ़िर मीरा की आँखों की गहराई पहचान गया। उसने कहा - "मेरा नाम वास्तव में किशन है, मेरे पिता और मीरा के चाचा एक ही जेल में बंद हैं। मुझे इस अंधी दुनिया में कमल रूपी मीरा की ही तलाश थी

मुझे इसके चाचा ने आपका पता दिया था पुजारी जी अब आप हमारी प्यार की डोर परिणय बंधन में बाँध अपने कर्तव्य से मुक्त हो जाइये।"

अनिता शरद झा

आधी दिहाड़ी

ब्रजेश श्रीवास्तव

किसी के विरोध में नारेबाजी करती हुई एक भीड़ जा रही थी। मैने हाथ में पुतला लिए एक आदमी से यूं ही चलते चलते पूछा

- ये हाथ में किसका पुतला लिए हो ?

- क्या साहब ?

- अरे, अपने हाथ में ये किसका पुतला लिए हो ?

- पुतला क्या होता है साहब ?

- वही जो हाथ में लिए हो उसे पुतला कहते हैं।

- अच्छा साहब, अब हमको क्या पता साहब।

- फिर तो तुम्हे ये भी नही पता होगा कि क्यों विरोध कर रहे हो और किसका।

- नही साहब, हम गरीब और अनपढ़ लोगों को ये सब क्या मालूम।

- तो फिर यहां कैसे ?

- अरे साहब, मैं तो गांव से मजदूरी करने आया था। रोज बहुत से लोग आते हैं मजदूरी करने के लिए। सुबह आकर सब लोग एक चौराहे पर खड़े हो जाते है। लोग आते हैं और अपने हिसाब से मजदूरों को काम के लिए ले जाते हैं। किसी को काम मिल जाता है किसी को नहीं भी। जिसे काम नही मिलता है वो फिर गांव वापस चला जाता है। मैं भी रोज की तरह आज सुबह आकर चौराहे पर खड़ा हो गया। कोई भी मुझे नहीं ले गया काम के लिए। मैने कोशिश की लेकिन काम नही मिला। ऐसा पहली बार नहीं हुआ है। अक्सर हो जाता है कई मजदूरों के साथ। जब मुझे काम नही मिला तो मैं वापस अपने गांव जा रहा था। इसी बीच एक साहब आए और मुझे ये देकर जिसे आप पुतला कहते हैं बोले कि चलो तुम्हे कुछ करना नहीं है, बस यही लेकर चलना है भीड़ में और और जो नारा बोला जाएगा वही तुम्हे भी बोलना है। उन्होंने ने कहा कि दो घंटे का 100 रुपया मिलेगा। बस साहब इसी 100 रुपए के लिए मैं यहां हूं।

- अच्छा, तो फिर दो घंटे बाद तुम गांव वापस चले जाओगे 100 रुपया लेकर ?

- देखेंगे साहब, वैसे उन्होंने कहा है कि दो घंटे बाद वो एक जगह और ले जायेंगे वहां भी दो घंटे के लिए 100 रुपए मिल जायेंगे।

- ओह, तो वहां क्या करना होगा तुमको ?

- कुछ नही साहब, उन्होंने कहा है कि एक रैली है उसमे बैठना है और बस ताली बजाना है। और साहब वहां कुछ खाना भी मिल जाएगा।

- ठीक है , तो आज तुम 200 रुपया लेकर घर जाओगे।

- हां साहब, वैसे तो रोज 400 रुपया मिलता है लेकिन आज 200 ही मिलेगा लेकिन कोई बात नहीं साहब, खाली हाथ जाने से तो ठीक ही है।

जब शाम को घर पहुंचता हूं तो पूरा घर मुझे एक उम्मीद की तरह देखता है। अगर सुबह ही खाली हाथ लौट जाता तो मेरे साथ पूरा घर निराश हो जाता। आज कम मिला है फिर भी कुछ नही से तो अच्छा ही है।

- अच्छा ठीक है।

तभी एक तेज फटकार सुनाई पड़ी किसी की। उसने उस मजदूर को डांट कर कहा

- किस बात में लगे हो तुम ? चलो, तेज चलो और नारा लगाओ वरना दूसरे वाले काम पर नही रखूंगा।

वो आदमी घबराकर और तेज चलने लगा। मैं भी बहुत कुछ सोचने के लिए विवश हो गया। सोचने में भी दुविधा थी कि इसको अच्छा कहूं या खराब। राजेश रेड्डी का एक शेर याद आ गया

" शाम को जिस वक़्त ख़ाली हाथ घर जाता हूँ मैं।मुस्कुरा देते हैं बच्चे और मर जाता हूँ मैं।"

□□□

कसरत वाला भगोड़ा

कहानी : श्यामल बिहारी महतो

आज फिर बुधिया चार बजे भोर भादो को ढूंढने निकल पड़ी थी। मैं जान बूझ कर उसके रास्ते से हट गया और पेड़ के पीछे छिप कर उसे जाते हुए देखता रहा-दूर तक। डूबती चांद की ओड में वह लम्बे लम्बे डेग डालती लपलपाती हुई जा रही थी। यहां कृष्ण राधा मिलन जैसी कोई बात नहीं थी। बस एक क़रार था, एक दरकार थी ! जिसके लिए वह भागी जा रही थी ..!

हां, बुधिया ने मुझे देखा नहीं था, लेकिन उसे पता था कि मैं यहीं हूं, यहीं कहीं छिपा हुआ हूं। और छिप कर उसे जाते हुए देख रहा हूं। इसका सबसे बड़ा प्रमाण वो दो घंटियां थी जो सड़क किनारे की टुंगरी (एक छोटी मोटी पहाड़ी) पर चर रही मेरी दोनों लघेर गायों के गले में बंधी हुई थी। घंटियों की आवाज उन दोनों गायों

हां! बुधिया ने मुझे देखा नहीं था, लेकिन उसे पता था कि मैं यहीं हूं, यहीं कहीं छिपा हुआ हूं। और छिप कर उसे जाते हुए देख रहा हूं। इसका सबसे बड़ा प्रमाण वो दो घंटियां थी जो सड़क किनारे की टुंगरी (एक छोटी मोटी पहाड़ी) पर चर रही मेरी दोनों लघेर गायों के गले में बंधी हुई थी। घंटियों की आवाज उन दोनों गायों की पहचान थी और वे दोनों मेरी गायें हैं और मैं उनका चरवाहा हूं यह मेरी पहचान थी।

की पहचान थी और वे दोनों मेरी गायें हैं और मैं उनका चरवाहा हूं यह मेरी पहचान थी। घंटियों की आवाज दूर तक सुनाई पड़ती थी और लोग जान जाते थे कि यह उन्हीं के गायों की घंटियां है और मैं यहीं कहीं बैठा हूं या फिर सड़क किनारे घास पर उठक - बैठक कर रहा हूं। व्यायाम करने की मेरी बचपन की आदत अभी तक छुट्टी नहीं थी। सुबह सुबह टांड पर उठक बैठक करते हुए बुधिया बीसो बार मुझे देख चुकी थी- सामने से नहीं। पेड़ों या फिर झाड़ियों के पीछे छिप छिप कर ! चोरी-चोरी !

वही बुधिया इधर मेरे मन को भी ललचाने का कई असफल प्रयास भी कर चुकी थी लेकिन मैं सिम दाल की तरह कभी उसके आगे गला नहीं -सिझा नहीं। उसका कोई भी शस्त्र मुझ पर आज तक काम न आ सका था। परन्तु उसने भी अभी हार नहीं मानी थी। न मैदान छोड़ी थी, बस समय की ताक में थी, समय सबका आता है, शायद उसके मन में कभी कभी यह

ख्याल आता होगा, कब मौका मिले और लपक लूं । परन्तु वो समय अभी आया नहीं था।

हर दिन मैं चार बजे भोर गायों को चराने के लिए उस टुंगरी पर आता हूं, जब से उसने यह जाना था तभी से वह देह धोकर मेरे पीछे पड़ी हुई थी।

तीस वर्षीय बुधिया सुकरा मुंडा की बड़ी पुतोहू थी और दारू की आड़ में देह व्यापार भी करती थी । घर में यह बात सभी को पता था लेकिन बुधिया के आगे किसी का मुंह नहीं खुलता था। पति बेवड़ा था, दारू पीकर सूअर की तरह जहां तहां पडल रहता था और कुत्ते उसका मुंह चाटते रहते थे । एक बार बूढ़ा ससुर जुर्रत कर बैठा था-" जो तुम कर रही हो यह ग़लत है, लोग नाम लेकर मुझे गारी देते हैं..!"

" अच्छा, बेटे से काहे नहीं काम करने को कहता, मरद कमाता नहीं, दारू पीकर दिन भर कहां मरल पडल रहता है, मैं भी नहीं कमाऊंगी तो घर का नून- तेल, आटा-दाल कौन लाकर देगा ? है कोई मरद..?" बुधिया चीख पड़ी थी, उसकी से बगल में बंधी बकरी भी जोर से मिमिया उठी-थी -" लो इसका भी पेट मुझे ही भरना है, एक छगरी का पेट भी तुम लोगों से भरा नहीं जाता है- बात करेगा इज़्ज़तदारों वाली ! और तुम तो चुप ही रहो" बुधिया ससुर पर गुर्राई थी" याद है, एक दिन ख़ाने को नहीं मिला तो गांव में चार -चार जगह फोंकर दिया" पुतोहू खाना नहीं देती है,पुतोहू पीने नहीं देती है और बात करेगा हमसे इज्ज़त बिज्जत की ..!"

बूढ़े ससुर की सिटी पिटी गुम ! उस दिन के बाद फिर कभी वह मुंह फाड़ न सका । कभी बोली न निकली उसके मुख से ! तब से

"मैं किसी का गुलाम नहीं हूं..!" घर में वह किसी के सामने हुमच कर बोल उठती थी । उपदेशक लोग भी उससे मुंह लगाने से घबराते थे, जाने कब क्या कुछ बक दे छिन्नार !

बुधिया अपने घर की रानी-महारानी थी । घर और बाहर उसी की मर्जी चलती । जो घर में आता, उससे घर में मिलती बाहर तो बहुतों को न्योत रखी थी उसने।

"मैं किसी का गुलाम नहीं हूं..!" घर में वह किसी के सामने हुमच कर बोल उठती थी । उपदेशक लोग भी उससे मुंह लगाने से घबराते थे, जाने कब क्या कुछ बक दे छिन्नार !

बुधिया से मेरी पहली मुलाकात भूत-भूतनी की तरह हुआ था । आषाढ़ का महीना था । भोर-भोर की बेला थी । टुंगरी का तलहटी था, मैं था,मेरी दो लघेर गायें थी । हवा में ताजगी थी और उसमें प्रकृति की गंध घुली मिली हुई थी । टुंगरी पर मेरी गायें चरने में तल्लीन थीं और मैं टुंगरी की तलहटी और पक्की सड़क किनारे घास पर गमछा डाल योगा में लीन था । अलोम विलोम करते हुए लम्बी लम्बी सांसें ले रहा था कि तभी अचानक से मेरे कानों में दौड़ते हुए पदचाप सुनाई पड़े । मैं चौंकते हुए उधर देखने लगा फिर योगा छोड़ बदन पर गमछा लपेट सड़क पर आ गया था । इतने में दौड़ते भागते हुए एक औरत नहीं-नहीं एक जवान औरत ठीक मेरे सामने आकर रूकी " ब्रेक ! ब्रेक !..!" कह मैंने दोनों हाथ खड़े कर उसे रूकने को कहा था । वह ठिठकते ठिठकते रूक गई थी। वह ऐसे भागते-दौड़ते चली आ रही थी, उसके पीछे कोई भूत पड़ा हो जैसे । या फिर कोई उसे दौड़ा रहा हो । वह हांफ रही थी और लम्बी लम्बी सांसें ले रही थी...!

" तुम कौन हो, और इस तरह भाग क्यों रही हो ? कोई सांड - भांड पीछे पड़ा हुआ है क्या..?"

" मेरा नाम बुधिया है, मैं चोटाही के बुधना मुंडा की पत्नी हूं ..!" उसका हांफना अभी तक बंद नहीं हुआ था । वह बिल्कुल मेरे सामने खड़ी थी । उसकी सांसें तक मुझे सुनाई पड़ रही थी " फिर इस तरह भाग क्यों रही थी..?"

" मैं..मै भादो के पास जा रही थी, सुबह खेत का धान बिहिन गाडी जोतवाना है, वही कहने जा रही थी..!"

" भादो,..भादो दा..!" कुछ सोचते हुए मैंने कहा " वो तो उधर काडा चराने ले गया है,..जाओ..जाओ, जल्दी जाओ..!"

जाने से पहले उसने मुझे एक बार भरपूर नज़रों से देखी और तेजी से उस दिशा में बढ़ गई थी, कुछ देर पहले ही भादो दा उधर काडा लेकर गया था ।

तब से लेकर आज तक भादो दा ही बुधिया के

खेतों की जोतवारी करने वाला जोतवाहा-हरवाहा बना हुआ था। बुधिया भी तो एक खेत ही थी । बाद में बुधिया ने जोतवाहे के रूप में बोधि और शनिचर को भी शामिल कर ली थी ।

बुधिया के वही हरवाहा-जोतवाहा भादो दा ने आज उसे बहुत निराश किया,छला , धोखा दिया,कह कर भी मिलने नहीं आया था।

उसके गये अभी मुश्किल से आधा घंटा भी नहीं हुआ था कि झुलसे मन बुधिया को लौटते देखा । मेरी गायें टुंगरी पर चर रही थीं और मैं सड़क किनारे खड़ा राजभाषा विभाग के निदेशक को वाटशप पर उनके भेजे " मैसेज " के जवाब में " सुप्रभात " लिख रहा था । तभी बुधिया मेरे बिल्कुल पास आकर खड़ी हो गई- ढीठ भी तो बड़ी थी ! जिसके साथ हम विस्तर होती होगी, जाने उसके साथ किस तरह पेश आती होगी ! कमोवेश खरगोश का जीवन जीती हैं, ऐसी औरतें !

" आज बड़ी जल्दी लौट आई,भादो दा नहीं मिला क्या..?" पूछ बैठा था।

" उस बहिनमौगा को आज उसकी मौगी पकड़ रखी थी, मुझे आने को बोल रखा था और पंठवा खुद नहीं आया..!" बुधिया बेहद गुस्से में लगी।

" उधर बोधि भी तो काडा चरा रहा था, उसके पास चली जाती..!"

" कल तो उसी के पास गयी थी, रोज रोज थोड़े न देगा"

" फिर शनिचर को बोलती, वह भी तो उसी के साथ काडा चरा रहा था।"

" वो बड़ी हरामी है, कमर में जोर तो है,पर बहुत तंग भी करता है और पॉकिट खाली रखता है, मुफ़्त में माल मारना चाहता है,फोकट में कितनी बांटती फिरूंगी, फिरी में नून-तेल कौन लाकर देगा मुझे..?"

" हां, वो तो है...!"

इसके साथ ही रहस्यमय ढंग से मैंने चुपी ओढ़ ली थी,उस वक्त बुधिया को अपने पास से ठेलने का एक मात्र रास्ता यही सही लगा था। परन्तु बुधिया के दिमाग को समझना इतना आसान भी नहीं था। कहा भी जाता है ,स्त्रियों को जब ईश्वर नहीं समझ सके तो मनुष्य की औकात ही क्या है ! पास में ऐसे खड़ी थी जैसे आगोश में लेने की तैयारी कर रही हो, उसके पास से चुपचाप खिसक लूं, मैं अभी इसी पर सोच रहा था कि उसकी बातों ने चौंकाया मुझे।

"बहुत दिनों से आपको कसरत करते, दण्ड उठक बैठक करते देखते आ रही हूं, कभी इसका फायदा मुझे भी दे दो,आज तक कभी दिया नहीं, मैंने कभी मांगा भी नहीं, घर में नून - तेल, आटा-दाल खत्म है, आज तो बोहनी कर दो.साहब..!"

" साहब !" यह ऐसा शब्द बम ! था जिसने मुझे एक पल के लिए असहज कर दिया था। लगा मैं और कुछ देर तक इसके पास रहा तो मुझे अपनी वजूद बचा पाना मुश्किल हो जाएगा । अफवाहें आग की तरह होती है,फैलते देर नहीं लगती है। बुधिया का जल्दी में लौटना और मेरे पास आकर उसका खड़ी हो जाना, तभी मुझे समझ जाना चाहिए था कि आज यह जरूर कोई धमाका करेगी,मैं देर तक उसे देखता रहा और वह प्रार्थना की मुद्रा में आंख बंद किए खड़ी रही कि मैं " हां " कर दूं और उसकी आज की बोहनी हो जाए !

सूर्योदय होने में अभी भी काफी वक्त था । लोगों की आवा- जाही अभी शुरू नहीं हुआ था। दाग लगने के पहले देह बचा लेने में ही बुद्धिमानी थी-

"देखो, अभी तुम जाओ,मेरी दोनों गायें दिख नहीं रही है और घंटियों की आवाज भी सुनाई नहीं पड़ रही है, शायद खेतों की ओर उतर गई है, मुझे जाना होगा..!"

इसी के साथ मैं कदम उठा कर कुछ इस तरह भाग खड़ा हुआ था जैसे शिकारी को सामने पाकर खरगोश भागता है।

तभी भागते कानों से एक आवाज टकराई **"कसरत वाला भगोड़ा..!"**

लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092

तुझे ज़िन्दगी बुला रही है।
गीत खुशी के सुना रही है।

सुख - दुख के दो पाटो में,
सबको झूला झूला रही है।

हँसाती कभी ये रुलाती भी,
सपने -सुहाने दिखा रही है।

देखो - देखो आँखे खोलो,
भोर सुनहरी जगा रही है।

सूरज की धवल रश्मियां,
दिवस नया सजा रही हैं।

नव कीर्ति नई परिभाषा,
जीना सबको सीखा रही है।

उठ चल बंदे बढ़ता चल,
किस्मत साँकल बजा रही है।

हर द्वारे हर देहरी आँगन,
फूल कुसुमित खिला रही है।

कर्मगति समझाती 'चन्द्रेश'
ज़िन्दगी तुझको बुला रही है।

चन्द्रकांता सिवाल 'चन्द्रेश'

कहानी डॉ। गोपाल राजगोपाल

साहब का मास्क

राम लाल साहब का चपरासी था। साहब के कमरे के बाहर बैठक थी उसकी। साहब से जो भी मिलने आता सबसे पहले उसी से साक्षात्कार होता। वह सबसे पहले आगंतुक से सेनिटाइजर से हाथ साफ़ करने को कहता। फिर पर्ची लेकर कमरे में जाता और हौले से साहब की टेबल पर रख देता। बाहर आकर आगंतुक से बैठने का इशारा करता हुआ अपने स्थान पर विराजमान हो जाता। वह अपना काम पूरी निष्ठा और ईमानदारी से करता। उसने कभी किसी से एक पैसा भी नहीं लिया साहब से मिलवाने के लिए। कोई आग्रह करता तो पूरी नम्रता से कहता-मुझे मेरे काम की सरकार पगार देती है,फिर क्यों अपना मन खराब करूं। मेरे काम में कोई कमी हो तो बताओ। आग्रह करने वाला अपना सा मुंह लेकर रह जाता।

कोरोना की महामारी का प्रकोप हर शहर में फ़ैल रहा था जिसके चलते सभी को मास्क लगाना अनिवार्य कर दिया गया था। हर जगह- 'मास्क नहीं तो प्रवेश नहीं' का नारा बुलंदगी पर चल रहा था। राम लाल की युनिफोर्म यूँ तो सामान्य सी थी लेकिन मास्क हमेशा महंगे वाला ही काम में लेता था। साहब उसका मास्क देखते तो अन्दर ही अन्दर जल-भुन कर रह जाते। टके का चपरासी होकर रोज नया और अच्छी क्वालिटी का मास्क पहनता है जबकि उनका मास्क वही पुराना सा घिसा-पिटा,मैला-कुचैला। उनके मन में एक विचार कौंधा-कहीं वह आगंतुकों से मास्क तो नहीं लेता है।

एक दिन पूछ ही लिया-

राम लाल तुम्हारे नए-नए मास्क का राज़ क्या है ?

साहब मैं आपकी तरह रोज़ नए-नए और महंगे कपड़े तो पहन नहीं सकता। कोरोना आया तो सोचा कि आपदा में अवसर ढूँढने का यही सबसे अच्छा मौक़ा है। क्यों ना महंगे मास्क लगा कर अपने जीर्ण-शीर्ण व्यक्तित्व को निखार लूं। महंगे से महँगा मास्क भी महंगे कपड़ों से तो सस्ता ही पड़ेगा। सब की निगाह सबसे पहले चेहरे पर ही जाती है। वही असली पहचान होती है। बाकी पहनावे पर जरूरी नहीं कि नज़र पड़े ही पड़े। फिर मुझे तो भगवान ने चेहरा-मोहरा भी ऐसा दिया है कि मेरे लिए मास्क किसी वरदान से कम नहीं है। इसमें सारी खराबियां छुप जाती है। और फिर मैं किसी ऐरे-गैरे का नहीं......आपका चपरासी हूँ साहब। थोड़ा रौब-दाब तो मेरा भी रहना चाहिए।

अच्छा ठीक है...अब तुम जाओ।

इसके सिवाय साहब से कुछ भी कहते नहीं बना।

एक बार संयोग कुछ इस तरह हुआ कि आगंतुक ने भी ठीक वैसा ही मास्क पहन रखा था जैसा रामलाल ने। साहब की आँखों में

अजीब सी चमक आ गई। संदेह की पुष्टि होने का प्रत्यक्ष संकेत था। चोर की दाढ़ी में तिनका साफ़ दिखाई दे रहा था।

घंटी बजा कर तुरंत रामलाल को तलब किया

पानी पिलाओ

साहब ने पानी पीते-पीते जायज़ा ले लिया। इसी बीच आगंतुक और रामलाल ने भी एक दूसरे का मास्क देख लिया था। दोनों की चारों आँखों में चमक आ गयी थी। दोनों ही मास्क के अन्दर ही अन्दर हौले से मुस्कराए। कारण था दोनों के मास्क का एक समान होना लेकिन साहब थे कि दोनों को खोजी निगाहों से देखे ही जा रहे थे। मन ही मन दोनों मास्क की तुलना कर नेपथ्य में कोई कहानी तलाश रहे थे। उनका शक और भी पुख्ता हो गया।

आगंतुक ने ब्रीफ़केस खोल कर एक प्रार्थना पत्र निकाला। साहब की टेबल पर रखते हुए बोला-

मकान के नामांतरण का काम है सर। जल्दी करवा देंगे तो आपका उपकार होगा।

इस बीच साहब की नज़र ब्रीफ़केस में पड़े वैसे ही कई मास्कों पर पड़ी।

शक़ अब यकीन की शक्ल लेता जा रहा था।

आगंतुक ने साहब का पुराना सा मास्क देखकर एक मास्क चुपके से टेबल के कोने पर रख दिया और दबे पाँव कमरे से बाहर आ गया। चपरासी को धन्यवाद देकर उसने शीघ्र ही अपनी राह ली। वह अपने काम को लेकर निश्चिन्त हो गया।

अब दूसरे आगंतुक की बारी थी। वह साहब से मिलकर पलटने को था कि अचानक साहब की निगाह टेबल पर पड़े मास्क पर पड़ी। अरे ये मास्क कहां भूल कर जा रहे हैं....उठाइये इसको.

जी,यह मेरा मास्क नहीं है

क्या कहा.....आपका नहीं है तो फिर किसका है

पता नहीं सर

पता नहीं........ठीक है आप जाइए

साहब उधेड़-बुन में। शायद पहले वाले आगंतुक का है। लेकिन वह तो जा चुका होगा। देखा-मास्क तो एकदम नया है। ब्रांडेड भी है। वह शायद जानते-बूझते रख कर गया है। मेरा मास्क देखकर उसको मुझ पर दया आ गयी होगी। तभी तो रखकर गया है। ये तो जन सेवा का काम किया है उसने। मास्क क्या रिश्वत की गिनती में गिना जाएगा। मैं रख लूं तो किसे पता चलेगा। वह किसी से कहेगा तो भी दामन पर दाग़ लगने की कोई वजह मुझे तो नज़र नहीं आती। मैंने किसी से माँगा थोड़े ही है।

साहब ने दरवाजे के बाहर की लाल बत्ती का खटका चालू किया ताकि कोई अंदर नहीं आ सके।

फिर मास्क को हाथों से सहलाया। बिलकुल नर्म था जैसे मखमल। मुंह पर लगाकर देखा। फिटिंग बिलकुल सही थी। शायद उनके चेहरे के लिए ही बना था। आईने में खुद को देखकर बहुत प्रसन्न हुए। चेहरे पर निखार आ गया था। अलग-अलग मुद्राओं में स्वयं को निहार कर कुर्सी पर बैठे ही थे कि अचानक रामलाल ने एंट्री ली।

दरवाज़ा खुलने की आहट सुन कर साहब चौंक पड़े। उनकी निगाहें अब किसी फ़ाइल पर थीं।

तुमको पता नहीं कि लाल बत्ती चालू है। देखते नहीं मैं किसी जरूरी फ़ाइल को निपटा रहा हूँ।

जी,बाहर कोई आगंतुक नहीं है। हेड ऑफिस से अर्जेंट डाक आई है। पी.ए.साहब ने कहा कि तुरंत साहब को देकर आओ।

ठीक है रख दो और जाओ.

अचानक दोनों की निगाहें टकरा गईं। दोनों ने एक-दूसरे की आँखों में आँखें डाल कर देखा। दोनों के मास्क एक जैसे। साहब का

मास्क भी चमाचम चमक रहा था। दोनों मन ही मन मुस्कुराये। साहब की मुस्कराहट मास्क से छन-छन कर बाहर आते हुए राम लाल के मास्क की और बढ़ रही थी। जब दोनों मुस्कराहटें आपस में गलबहियाँ कर चुकीं तो रामलाल ने हौले-हौले बाहर का रुख किया।

बाहर निकलते हुए साहब के ये शब्द रामलाल के कानों में पड़े।

अगले एक घंटे तक किसी भी मिलने वाले को भूल कर भी अन्दर भेजने की गलती मत करना।

उसके जाते ही साहब ने फिर से आईने की ओर कदम बढाए।। आईने में मास्क को जी भर कर निहारा। उसके मखमली स्पर्श को फिर से महसूस किया। मास्क चेहरे और कपड़ों से खूब मैचिंग कर रहा था। उनका मन आत्मविश्वास से भर उठा।

इतने में फोन की घंटी बज उठी।

सर,वह पहले वाला आगंतुक आपसे फिर मिलना चाहता है। आप कहें तो भेज दूं, पी.ए.ने कहा।

साहब के चेहरे की हवाइयां उड़ गई। एक बारगी कुछ भी बोलते ना बना.फिर बोले-

उसे....उसे अभी बैठने को कहो

उनके हृदय की धड़कन तेज हो गई मानो छाती तोड़ कर बाहर निकलना चाह रही हो। यूँ लगा जैसे चोरी करते हुए पकड़े गए हों। आँखों के आगे अन्धेरा सा छा गया। उनके ललाट से पसीना बह निकला। अब क्या होगा। शायद वह अपना मास्क लेने ही आया होगा। उन्होंने एक ही सांस में पानी का गिलास खाली कर दिया।

मुझे मास्क को टेबल के उसी कोने पर उसी तरह से रख देना चाहिए....हाँ यही ठीक रहेगा।

फिर वे स्वयं को संयत करते हुए कुर्सी पर बैठ गए। कांपते हाथों से फोन उठाया और स्वर को साधते हुए बोले-

हाँ,भेज दो उसे.........।

वे पुनः किसी फाइल में खोने की चेष्टा करने लगे।

सर,क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ।

मैंने कहा ना आपका काम हो जाएगा। दफ्तर के कामों में वक़्त तो लगता ही है। आप क्या समझते हैं सारे काम चुटकियों में हो जाते हैं। वे फाइल के पन्नों में नज़रें गडाए ही रहे।

जी मैं तो........।

साहब का अंदेशा सही दिशा की ओर ही था। उनकी हालत पहले जैसी शक्ल अख्तियार करने लगी.आवाज़ फिर से लड़खड़ाने लगी।

आगंतुक ने ब्रीफकेस खोलकर एक कागज़ निकाला और साहब के सम्मुख रखते हुए कहा-

सर,प्रार्थना पत्र के साथ नत्थी किया हुआ यह पेपर मेरे पास ही रह गया था जिसे देने आया हूँ।

अच्छा ठीक है.अब आप जा सकते हैं।

साहब ने राहत की सांस ली। रुमाल से पसीना पौंछते हुए उड़ती हुई सी दृष्टि टेबल के उसी कोने पर डाली।

मास्क उसी जगह सही सलामत पड़ा था।

□□□

लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092

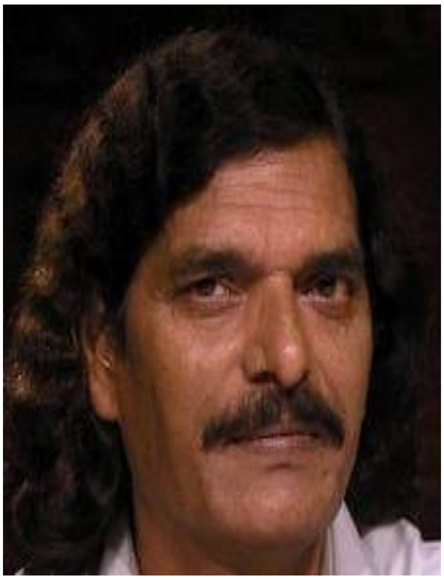

ज़माना मुझे सुने......

सुरेन्द्र कुमार सक्सेना (सुकुमार)

मैं कहानी की महत्वपूर्ण पूर्ण पत्रिका सारिका औऱ धर्मयुग का नियमित पाठक था मैं सारिका की कहानियां पढ़ पढ़ कर यह सोचा करता था कि ऐसी कहानियां तो मैं भी लिख सकता हूँ औऱ एक दिन मैं लिखने भी बैठ गया औऱ एक ही सिटिंग में एक कहानी अगिहने लिख डाली औऱ सारिका में भेज दी। कुछ ही दिनों में सारिका के संपादक कमलेश्वर जी का हस्तलिखित पत्र आया कि तुम्हारी कहानी स्वीकार कर ली गई है औऱ ये नवलेखन अंक नौ में प्रकाशित होगी।

तुम शीघ्र ही अपना परिचय औऱ एक फोटो भेज दो मैंने भेज दिया। मेरे तो जैसे पंख ही निकल आए थे उन दिनों मेरी उम्र 18 साल की थी उन दिनों कमलेश्वर जी समांतर कहानी का आंदोलन चला रहे थे उनका एक पत्र भी मुझे मिला कि (राजगीर), बिहार में समांतर कहानीकारों का एक सम्मेलन हो रहा है तुम आ सकते हो तो आ जाओ। मैं तैयार हो गया और वहां चला गया। जब मैं वहाँ पहुंचा तो धूप में घास के लॉन में बैठे कहनीकारों की गोष्ठी चल रही थी। कमलेश्वर जी ने सुदीप जी से पूछा, बताओ ये कौन हैं? सुदीप जी जो उस समय सारिका में उप सम्पादक थे ने तत्काल कहा ये अगिहाने के लेखक सुरेन्द्र सुकुमार हैं। मेरे लम्बे घने घुंघराले बालों के कारण शायद सुदीप जी ने मुझे पहचान लिया था।

बिहार में मेरी उस कहानी की उस समय तक बहुत प्रशंसक बन गए थे। उनमें से एक जिनका नाम केके सिंह था जो पीडबलूडी में बड़े ठेकेदार थे वो मेरे बहुत प्रशंशक बन गए थे। वो अपने साथ एक एम्बेसडर कार औऱ एक पेटी शराब की लाए थे औऱ कार औऱ शराब औऱ ड्राइवर मुझे सौंप कर वापस चले गए। अब मेरे पास भरपूर शराब थी और गाड़ी भी उन तीन दिनों के सम्मेलन में मेरे पास बहुत भीड़ लगी रही मैंने हर गोष्ठी में बढ़ चढ़कर भाग लिया कमलेश्वर

जी तीसरे आदमी को नंगा करने की बात कह रहे थे जोकि आम आदमी का शोषण करता था तीन दिन बहुत अच्छी तरीके से कटे वहां मेरी घनिष्टता आबिद सुरती हृदय लानी औऱ अंजनी चौहान से हो गई।

हम लोगो के शौक़ एक से ही थे आबिद सुरती का एक कार्टून "ढब्बू जी का कौना" नियमित धर्मयुग में प्रकाशित होता था हम किसी किसी दिन ताड़ी भी पी लिया करते थे जब मैं घर वापस आया तो कमलेश्वर जी का एक पत्र मुझे मिला तो पता चला मेरे ऊपर कहानी को लेकर एक स्थानीय जमीदार ने मुकदमा दायर कर दिया है जिसमें मेरे खिलाफ जिले के 18 वकील एस एस पी जिले के डीएम गवाह के तौर पर थे।

उस मुकदमे में संपादक और प्रकाशक को भी शामिल किया गया संपादक कमलेश्वर जी और प्रकाशक श्री कृष्ण गोविंद जोशी थे उन दिनों कमलेश्वर जी ने मुझे बहुत पत्र लिखे कि मैं किसी तरीके से समझौता करलूं और यह मुकदमा वापस हो जाए इन लफड़ों में पड़ना ठीक नहीं है। मैं सोचा करता कि कहां तो कमलेश्वर जी तीसरे आदमी को नंगा करने की बात करते हैं औऱ जब मेरी कहानी में तीसरा आदमी नंगा हुआ तो वो समझौता करने की बात कर रहे हैं।

उन्होंने कई लोगों के नाम भी सुझाए इनसे संपर्क कर सकते हो उनमें एक नाम हिंदी के प्रसिद्ध कवि श्री बलबीर सिंह रंग जी का भी सुझाया कमलेश्वर जी ने उन्हें भी पत्र लिखा था मैं रंग जी को बहुत अच्छी तरह जानता था मैं उन्हें दद्दा कहता था मैं उनसे मिला वो बोले कमलेश्वर का पत्र मेरे पास भी आया है एक जिमीदार की इतनी हिम्मत कि एक साहित्यकार पर मुकदमा चलाए कौन सी तारीख है मैंने तारीख बताई वो बोले ठीक है मैं उस दिन एटा कोर्ट में मिलूंगा।

जब मैं उस दिन कोर्ट में पहुँचा तो रंग जी वकीलों से घिरे हुए बार रूम में बैठे थे उनकी पीठ मेरी ओर थी मैंने सुना वो कह रहे थे कि कल के लौंडे की यह हिम्मत कि ठाकुरों से टक्कर ले मैं उल्टे पांव लौट आया रंग जी भी

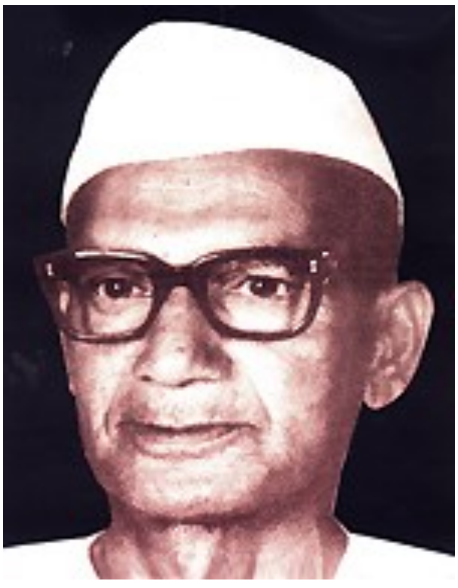

ठाकुर थे मुझे रंग जी की ही ग़ज़ल का एक शेर याद आया :

रंग के रंग जमाने ने बहुत देखे हैं
क्या कभी आपने बलबीर से बातें की हैं

एक साल मुकदमा चलता रहा एक साल के बाद सारिका में ही उस कहानी को प्रकाशित करने के लिए संपादक और प्रकाशक की ओर से खेद प्रकट करने का समाचार आया और वह लोग मुकदमे से अलग हो गए मैं लड़ता रहा मैं चाहता तो उन पत्रों को प्रकाश में लाकर समांतर कहानी के आंदोलन को ध्वस्त कर सकता था पर मैंने ऐसा नहीं किया क्योंकि कमलेश्वर जी ही मुझे पहली बार प्रकाश में लाए थे मेरी ओर से वकील थे अश्विनी कुमार औऱ जज थे छावड़ा साहब मैं मुकदमा लड़ता रहा। जिस दिन मुकदमे की फाइनल सुनवाई थी तो छावड़ा साहब ने मुझसे पूंछा कि आप कहते हैं कि कहानी काल्पनिक है तो फिर इन्होंने आपके ऊपर मुकदमा क्यों दायर किया मैंने कहा कि इनकी बहन से मेरे अनैतिक सम्बंध थे एक दिन इन्होंने ने हमें रंगे हाथों पकड़ लिया इसलिए मुकदमा दायर कर दिया (यह बयान सरासर झूठ था) जज साहब ने उनकी बहन के नाम सम्मन जारी किया जिससे सच्चाई सामने आ सके।

कोर्ट में तो सनाका खिंच गया उन्होंने सोचा कि यदि उनकी बहन कोर्ट में आई तो बहुत बदनामी होगी इस डर से उन्होंने मुकदमा वापस करने के लिए प्रार्थना पत्र दाखिल किया उसी दिन छावड़ा साहब ने शाम को डिनर पर हमको बुलाया।

हम गए भी खूब खाना पीना चला छावड़ा साहब ने हमसे कहा कि यह मुकदमा तो हम कभी का खारिज कर देते पर हम तो कमलेश्वर जी से मिलना चाहते थे औऱ आपकी कहानियों औऱ कविताओं के तो हम फैन हैं दूसरी बात कि कानून में एक क्लॉज है कि यदि किसी व्यक्ति ने कोई पहला अपराध किया हो औऱ उसका भविष्य उज्ज्वल हो तो उसे फ़र्स्ट ऑफेंडर का लाभ मिल जाता है औऱ उसे साधारण चेतावनी देकर छोड़ दिया जाता है दूसरी कहानी "अपने जैसे लोग" धर्मयुग में प्रकाशित हुई उसकी स्वीकृति के साथ एक शपथ पत्र भी साइन कराने के लिए आया कि इस कहानी का संपादक और प्रकाशक से कोई लेना देना नहीं है यह प्रथा तब से ही चालू हुई औऱ मेरा चित्र औऱ परिचय भी मंगाया मैंने भेज दिया

भारती जी की यह अदा थी कि जब भी किसी लेखक की पहली कहानी प्रकाशित करते तो परिचय में यह जरूर लिखते कि इनको इतने वर्ष कहानी लिखते हुए हो गए हैं धर्मयुग में यह इनकी पहली है उन दिनों मेरा काफी समय दिल्ली में ही गुजरता था और मेरे मित्रों में सबसे घनिष्ठ रमेश बतरा हुआ करते थे मैं उनके साथ उनके आवास लारेंस रोड के एक फ्लैट में खूब रहता था वहां उनके साथ महावीर प्रसाद जैन अवध नारायण मुदगल रहते।

और शायद महेश दर्पण भी वहां बहुत कवि और कहानीकार आते थे अंजनी चौहान वहां भी अक्सर आते थे अंजनी से मेरी घनिष्ठता पहले से ही थी क्योंकि वो पहली बार मुझे राजगीर मिले थे मेरे उनके शौक एक जैसे थे वो मेरे दूर के रिश्ते के भांजे के मित्र थे वो मुझे मामा कहने लगे मैं उन्हें भांजे कहने लगा जो रिश्ता अब तक बरकरार है

उन दिनों मैं औऱ अंजनी त्री नगर से शराब खरीदने जाया करते थे। उन दिनों लॉरेंस रोड औऱ त्री नगर के बीच चार पांच खेत हुआ करते थे। एक दिन क्या हुआ हम लोग शराब लेकर आ रहे थे तो हमने पीछे मुड़ कर देखा तो चार सिपाही अपनी राइफल सहित आ रहे हैं। अब तो हमारे शरीर में काटो तो खून नहीं हम तत्काल एक खेत में लेट्रिन करने वाली मुद्रा में बैठ गए औऱ एक एक बोतल अपने सामने रख ली। जब वो लोग गुजर गए तब हमारी जान में जान आई हम लॉरेंस रॉड पहुंचे। वहाँ रोज की तरह से झगड़ा हो रहा था कि रोटी बनवाने तीन मंजिल उतर के सरदार के तंदूर पर कौन जाए फिर बहां खड़े रह कर कौन रोटी बनवाए फिर तीन मंजिल चढ़ कर कौन आए सब्जी तो महावीर बना लेते थे जब बात ज्यादा बढ़ने लगी तो मेरे मुंह से निकला "छोड़ रोटी यार तू बीड़ी जला।"

रमेश अचानक बोले यह तो ग़ज़ल का मिसरा हो गया बस फिर क्या था मेरे मन में ग़ज़ल चलने लगी :

छोड़ रोटी यार तू बीड़ी जला
चुभ रहे हैं खार तू बीड़ी जला
कल तलक जो रास्ते की ईंट थे
आज वो मीनार तू बीड़ी जला
कर सकेंगे क्या भला अपना इलाज
डॉक्टर बीमार तू बीड़ी जला
एक दिन के बाद जो बेकार हो
हम नहीं अखबार तू बीड़ी जला
चोर को क्या खाक पकड़ेंगे भला
चोर के भरतार तू बीड़ी जला ....

(क्रमशः)

□□□

दीनू काका की हँसी

रामानुज अनुज

"ऐसे कैसे हो सकता है? दीनू काका कैसे हँस सकते हैं? मैं नहीं मान सकता, चाहे जो हो जाये। दीनू काका ब्रह्मचारी हैं और ब्रह्मचारी जो भी प्रण ठान लेता है आजीवन पालन करता है। वह प्रण कभी तोड़ नहीं सकता है।" आश्चर्य से भरे हुये सूर्यदीन पंडित बोले।

"पंडित ये सत्य है। दीनू काका, न हँसने की प्रतिज्ञा लेकर ही धरती में अवतरित हुए थे। वे जब पैदा हुये थे तब वे साल भर रोये थे। उसके बाद रोना-हँसना सब बन्द। बोलते वे बहुत कम थे, महीने में एकाध बार। पण्डित, वे ब्रह्मचारी क्या अपने मन से हुये हैं? उनके घर वालों ने उनकी शादी नहीं कराई तो क्या करते? लेकिन यह भी सत्य है दीनू काका आज नींद में खूब जोर से हँसे हैं।" केमला नाई सर खुजलाते हुये बोला।

"तुम्हें कैसे मालुम हुआ?" पंडित ने पूछा।

"उनके भतीजे कह रहे हैं कि दीनू काका आज रात में जोर-जोर से हँस रहे थे।"

"घोर आश्चर्य! हे भगवान! इस गाँव की रक्षा करना।" पंडित सूर्यदीन आकाश की ओर लंबा मुँह उठाकर बोले।

'आप यह क्या कह रहे हो, पंडित---भला किसी के हँसने से अनर्थ कैसे हो सकता है? वो भी पूरे गांव का। अनर्थ होगा तो उनके परिवार का होगा, गाँव से क्या मतलब?"

"तुम वेद पुराणों में लिखे का मतलब क्या जानो केमला, पढ़े-लिखे तो हो नहीं। चलो दीनू के घर चलते हैं।"

दीनू काका का असली नाम दीनदयाल था। जब वे पाँच साल के थे तभी इनके माता-पिता का निधन हो गया था। इनके चाचा इन्हें पालपोष कर बड़ा किये, दीनू काका अविवाहित हैं, भतीजों के साथ रहते हैं, यही लोग उन्हें खाना-पीना देते हैं।

पंडित सूर्यदीन, केमला नाई को साथ लेकर दीनू के घर पहुँच गये। दीनू के घर में भीड़ जमा हो गई थी। जिसको जैसे मालुम हुआ आता गया जैसे दीनू काका के मरने की खबर मिली हो।

दीनू काका चबूतरे में अकेले मुँह लटकाये हुये बैठे थे। लोग उनसे पूछ-ताछ कर रहे थे। पंडित सूर्यदीन के आते ही सब लोग चुप हो गये। पंडित जी दीनू के बगल में बैठते हुये बोले---

"सुना है, आज तुम रात में हँस रहे थे?"

"मुझे याद नही पंडित भैया---नींद में हँस दिया होगा। दीनू काका सर नीचा किये हुये बोले।"

"आज काका रात में जोर-जोर से हँस रहे थे। इनके हँसने से मेरी नींद खुल गई, मैं इनके कमरे में गया तो देखा---काका बिस्तर में पड़े-पड़े हँस रहे थे।" भतीता मिश्रीलाल ने बताया।

"ये तो घोर संकट के संकेत है।" पंडित जी बोले।

"घोर संकट? ये कैसे?" उपस्थित लोगो ने एक साथ कहा।

"कैसे नहीं---आप लोग वेद पुराण तो कभी सुनते नहीं। महाभारत का युद्ध द्रोपदी के हँसने की वजह से हुआ था। ऐसा युद्ध जिसमे बड़े-बड़े योद्या और वीर मारे गये। कौरव कुल का समूचा नाश हो गया, जिनका उस हँसी से कोई लेना-देना नहीं था, वे भी मारे गये, बेचारे।" पंडित सूर्यदीन ज्ञान की पोटली खोलते हुये बोले।

"लेकिन काका तो न हँसने की कसम खाये थे?" काका के पड़ोसी बिरजू बोले।

"अरे बिरजू, हम क़सम-वोसम नहीं खाये कबौ। बचपन में माँ बाप मर गये तब रोये थे। स्कूल गये तब मास्साब की छड़ी देखकर रोये थे। कित्ते कारण आये के हमे रोना आया है? मैंने नियम बना लिया था कि चाहे जो हो जाय---

मन ही मन रोना किया करूँगा। अब बताओ भैया, मुझे टेम कब मिला हँसने को। इसी को आप लोग मान बैठे---क़सम खा ली है।" दीनू काका बिना किसी की तरफ देखे बोले।

"आप तो बाल ब्रह्मचारी हैं, काका---कहते हैं ऐसे लोग बड़े संयमी होते हैं?"

"भैया! टेम से शादी-व्याह हुआ नहीं, तो क्या करते? कुछ गलत-सलत कर देते को गाँव-समाज की मरजादा जाती, अब आप लोग चाहे जोन मान लो। अब कहते हो काका सोते-सोते नींद में हँस रहे थे। चलो मान लेते हैं, धोखा हो गया--- पर ये बताओ नींद में तो बहुत कुछ घट जाता है। लोग जाने क्या-क्या नींद में कर जाते हैं। कोई हल्ला-गुल्ला नहीं होता। मेरी हँसी पर इतना चिल्ल-पों क्यों मचा है?" काका सर नीचा किये हुये बोले।

"काका तुम्हारी हँसी मामूली हँसी नहीं है। एक ब्रह्मचारी ने अपनी क़सम नींद में सोते हुए तोड़ दी है। इससे कुल खानदान के साथ-साथ पूरे गांव का अनिष्ट सम्भावित है।" लम्बी सांस खींचते हुए पंडित सूर्यदीन बोले।

"पंडित जी कुछ उपाय कीजिये, इस संकट से हमें बचाइये।" मिश्रीलाल की पत्नी हाथ जोड़कर बोली।

"घबराओ नहीं, सबका निदान शास्त्रों में लिखा है। बस इनके हँसने का समय सही-सही पता चल जाये। फिर ऐसी व्यवस्था कर देंगे की दीनू काका दोबारा नही हँस पायेगें।"

"पंडित अब टाइम कैसे बताएं? इतनी ठंडी रात में कब होश रहता है टाइम का।" मिश्रीलाल बोला।

'चलो मान लिए टाइम का अनुमान नहीं है---पर ये बताओ, किस प्रकार से हँस रहे थे?"

"बड़ी भयानक हँसी थी, पंडित जी। घर से सब लोग डर गये थे। बच्चे चिल्लाने लगे थे।"

"किस तरह के स्वर निकल रहे थे---मेरा मतलब किसी जानवर के बोलने या रोने वाले तरीके से हँस रहे थे।" पंडित ने पूछा।

"अरे पंडित गजब करते हो, हँसने और रोने के बोल होते हैं कभी?" साला रोना-हँसना भी संगीत हो गया। अब कल को बोलेंगे---ये फला राग में हँस रहा था और ये फला राग में रो रहा था।" आँख मलता हुआ ऊधो बोला।

"होते क्यों नहीं, तुम क्या जानो? ऊधो! शहर के लफंगों का साथ किये हो। रात बारह बजे पौआ चढाकर घर लौटते हो, तुम्हारे निता तो हँसना-रोना सब बरोबर है।" गाँव का चौकीदार वृजबासी बोला।

"और तुम का करते हो बारह बजे तक? कैसे मालुम, मैं बारह बजे रात दारू पीकर लौटता हूँ।" ऊधो तेज आवाज में बोला।

"मैं गाँव का चौकीदार हूँ---गश्त मारता हूँ रात में।"

"मुझे सब पता है तुम कैसी गश्त मारते हो? कहाँ घुसे रहते हो? कहाँ क्या करते हो?"

ऊधो का साथी जग्गू चिल्लाकर बोला।

"का मतलब तुम्हारा?" बृजवासी भी चीखा।

"मेरा मुँह मत खुलबायो बृजवासी?" जग्गू और जोर से बोला।

"अरे बोल न---दम है तो?"

"बोलना क्या? पूरा गांव जानता है---रधिया काहे फांसी लगाये रही?" जग्गू

चिल्ला कर बोला।

"जबान सम्हाल कर बोल जग्गू !" पूरा दम लगाकर वृजवासी चिल्लाया।

"ऐसे ही बोलूँगा---क्या कर लेगा मेरा?'

तभी एक अनहोनी हो गई। बृजवासी का लड़का जग्गू के सर में डंडा जड़ दिया। सर से खून टपकने लगा---इधर ऊधो भी मौका ताड़कर बृजवासी के पेट में मुक्का हन दिया। दोनों तरफ से मार-पीट शुरू हो गई। गाँव के समझदार लोग घर की तरफ भागने लगे---भीड़ छटने लगी। मिश्री लाल का परिवार भीतर जाकर दरवाज़ा बंद कर लिया था। पंडित सूर्यदीन भी गमछा और खड़ाऊं छोड़कर फूट लिए थे। चबूतरे में बैठे दीनू काका इस बार जोर -जोर से हँस रहे थे। किसी ने पुलिस को फोन कर दिया......पुलिस वेन लेकर पहुँच चुकी थी। पुलिस के पहुँचते ही गांव में अफरा तफ़री मच गई। तमाशबीन अपने-अपने घरों की ओर भागने लगे। जग्गा के सर से लगातार खून बह रहा था---बृजवासी भी अपना पेट पकड़े जमीन में लोट रहा था।

"सभी रुक जाओ---कोई हिला तो गोली मार दूँगा।" दरोगा वीरसिंह हवाई फायर करते हुये जोर से चिल्लाया।

दरोगा की धमकी और हवाई फायर से सभी डर गये। जो जहाँ था वहीं ठहर गया।

"ये झगड़ा कैसे हुआ?" दरोगा ने पूछा।

"ये जग्गू, मुझे बहुत गन्दी बात बोला---तभी किसी ने इसे धक्का दिया है। और इस लफंगे ने मेरे पेट में मुक्का हन दिया। हाय मर गया रे---लगता है, आंते फट गयीं। जल्दी से अस्पताल भिजबायो साब! मर जाऊँगा।" बृजवासी कराहता हुआ बोला।

"साला नाटक कर रहा है---गाड़ी में भरकर थाने ले चलो।" दरोगा सिपाहियों की ओर देखकर बोला।

मिश्रीलाल, ऊधो, जग्गू, बृजवासी और विरजू

सहित गाँव के अन्य लोगो को वेन में भरकर पुलिस थाने ले गयी।

"ये किसका पड़ा है? खड़ाऊं और गमछा देखकर दरोगा ने पूछा।

"पंडित सूर्यदीन का है।" केमला नाई ने बताया।

"इधर को क्यूँ आया? उसे बुलाओ।"

थोड़ी देर में सूर्यदीन पंडित आ गये थे। गाँव के कुछ बुजुर्ग भी पण्डित जी के साथ आये थे। ग्राम प्रधान देववती भी पहुँच गई थी।

"ये खड़ाऊं और गमछा तुम्हारा है पंडित?" दरोगा ने पंडित जी से पूछा।

"हाँ साब मेरा है। मैं इधर ही था। जब देखा की इधर लोग लड़ने-झगड़ने लगे तो मैं अपने घर चला गया था। धोखे से गमछा खड़ाऊं इधर छूट गया।"

"हूँ, धोखे से---यहाँ काहे को आये थे?"

"साब! ये जो बुड्ढा चबूतरे में बैठा हँस रहा है। पूरे फसाद की जड़ यही है। ये कल रात पहली बार सोते हुये हँसा है। तभी से यह लगातार हँस रहा है। शास्त्र के मुताबिक भद्रा काल में इस प्रकार की हँसी अनिष्ट की सूचक है। यही सब तो बताने यहाँ आया था लेकिन मेरी बात पूरी नहीं हो पायी, पहले से ही लड़ाई-झगड़ा शुरू हो गया।"

"यानी दंगा कराने आये थे और लोगो को लड़ा -भिड़ा के फूट लिये। वाह पंडित वाह।"

"आप ये क्या बोल रहें हैं? मैं तो गाँव का भला सोचता हूँ। उल्टे आप मुझ पे इल्जाम लगा रहे है। दीनू काका को कुछ नही कहेंगे, जो पूरे फसाद की जड़ है। हे भगवान!! जाने क्या होने वाला है? सबकी बुद्धि नष्ट हो गई है।" पंडित सूर्यदीन धोती की कांछ ठीक करते हुए बोले।

"आप भी थाने चलिये---वहीं पर सत्संग होगा, पंडित जी।" दरोगा मुस्कुराते हुए बोला।

"ऐसा न करें दरोगा बाबू! पंडित बाबा की बहुत इज्जत है गाँव में। आप इन्हें थाना चौकी जो ले गये तो गजब हो जायेगा। आप यहीं पर उनसे पूँछताछ कर सकते हैं।" गाँव की प्रधान देववती बोली।

"तू कौन है बाई! बीच में टपर-टपर करने लगी।" दरोगा ने पूछा।

"ये गाँव की परधान है, साब, देववती।" केमला नाई ने बताया।

"ज्ञानसिंग! कंट्रोल रूम फोन मिलाओ। अभी सबका दिमाक ठिकाने करता हूँ।"

"हाँ हाँ! खूब फोन मिलाओ, लेकिन पंडित बाबा को थाने नही ले जाओगे।" देववती घूँघट पलट कर बोली।

"क्यों सरकारी काम में टांग उठाती हो बाई? घर जाओ, चूल्हा चक्की देखो।"

"दरोगा, अपनी हद में रहकर बात करो। क्या तुम्हारे घर में माँ-बहन नहीं हैं।"

"अरे! ऐसा क्या कह दिया??" दरोगा ने पूछा।

"भूल गये, अभी-अभी सब के सामने टांग उठाने की बात कहे हो। आपको पता नहीं, महिलाएं टांग कब उठाती हैं? कितनी गंदी बात बोले हो। अरे खिल्ली, जगत, रामकलेश सबको इकट्ठा करो---किसी भी कीमत पर पंडित बाबा को हम थाना नही ले जाने देगें।" रामवती बिफरते हुये बोली।

"ठहरो यहां से कोई कहीं नहीं जायेगा। गोली मार दूँगा।" दरोगा अपनी सर्विस रिवाल्वर हाथ में लेकर गरजा।

"ज्ञान सिंग तुमको बोला न कंट्रोल रूम फोन करो और बड़े साहब को बताओ इस गांव में वलबा हो गया है।"

"जी साब अभी कंट्रोल रूम खबर करता हूँ।" ज्ञान सिंग बोला।

"ठीक है, मैं भी देखती हूँ, अभी पूरा गाँव इकट्ठा करती हूँ। मै भी देखूँ, कैसे गोली चलती है?" इतना कहकर वह वापस होने को मुड़ी।"

"रुक जाओ बाई---गोली मार दूँगा।"

रामवती रुकी नहीं, आगे को बढ़ती गई। इसी बीच दरोगा ने डराने के लिहाज से हवा में गोली दाग दी। दुर्भाग्य से वह गोली एक बुढ़िया के पैर में जा लगी, जो घर के बाहर बैठी धूप ले रही थी। फिर क्या था? सभी गांव वाले इकट्ठे होने लगे।

भीड़ जुटने लगी, तभी रामवती ने ललकारा---"नामर्दो! देखते क्या हो? मारो सालों को?"

भीड़ आक्रामक होकर दरोगा और पुलिस वालों पर टूट पड़ी। सब अपने-अपने हिसाब से मार-पीट में लग गये। पुलिस वालों की वर्दी फाड़ दी। किसी का हाथ तोड़ दिया--किसी का सर फोड़ दिया। दरोगा अपनी रिवाल्वर ख़ाली कर चुका था। फायरिंग से दो तीन लोग घायल पड़े कराह रहे थे। गांव का शांत माहौल जंग के मैदान में तब्दील हो गया था।

तभी सांय-सांय करती हुयी पुलिस की तीन गाड़ियां गांव में पहुँच गयीं। गाँव में जो जहाँ जैसा मिला---सबको मारा पीटा। बूढ़े बच्चे, बीमार किसी को नहीं बख्सा गया। अंततः सबको जानवरों की तरह गाड़ी में भरकर ले गये।

जो गाँव सुबह आबाद था, शाम होते-होते वीरान हो गया। गाँव में कोई नहीं बचा था सिवा दीनू काका और कुछ आवारा कुत्तों के---जो कभी भूँकने लगते कभी रोने लगते। दीनू काका को पागल समझकर छोड़ दिया गया था। काका अब सचमुच पागल हो गये थे---वे जोर-जोर से पंडित की खड़ाऊं को हाथ में लेकर करतार की तरह बजाते हुये नाच-नाच कर गाने लगे थे---"सघन वन में मदनमोहन मधुर वंशी बजाते हैं।"

□□□□□

कविता की खोज

कविता तुम कहां हो
तुम्हें ढूंढता हूं
बताओ कहां हो।
कभी बाग में कभी राग में
कभी फूल में कभी शूल में
ढूंढता हूं तुम्हे सूक्ष्म-स्थूल में,
कविता तुम कहां हो
तुम्हें ढूंढता हूं
बताओ कहां हो।
कभी मंदिरों में
कभी मस्जिदों में
तुम्हें ढूंढता हूं
आयतों औ पदों में
कहां पे छुपी हो
आवाज दो,
कविता तुम कहां हो
तुम्हें ढूंढता हूं
बताओ कहां हो।
मधुमास में,ग्रीष्म अवकाश में
गर्म उच्छवास में
मृग के प्यास में
मैं ढूंढू तुम्हे हास-परिहास में
कहां तुम गई हो
आभास दो,
कविता तुम कहां हो
तुम्हें ढूंढता हूं
बताओ कहां हो।
सृष्टि के लय में कि प्रलय में
जय में हो या कि पराजय में
सिंधु में हो सघन
या कि नील गगन में
वेदों की सूक्ति में
या कि हवन में
है तुम्हारा ठिकाना
कहां ये बताओ,
कविता तुम कहां हो
तुम्हें ढूंढता हूं
बताओ कहां हो।।

योगेंद्र पांडेय

दो कुंडलियाँ

1

पानी की इक बूंद में, है अमृत का वास।
पानी बिन पनपे नहीं , मोती, मानस, घास।।
मोती, मानस, घास, मनुज की जिम्मेदारी।
पानी की इक बूंद, नष्ट कर पड़नी भारी।
कहे जैन कविराय, वे सभी हैं अज्ञानी।
जो न समझकर मूल्य, व्यर्थ ही फेंकें पानी।।

2

वर्षा, ओलावृष्टि से, फसलें हुई खराब।
लेट गए गेहूं चना, टूटे सारे ख़्वाब।।
टूटे सारे ख़्वाब, कृषक को समझ ना आये।
खाली हैं खलिहान, सुता को कैसे ब्याहे।
कहे जैन कविराय, उम्र भर चलती चर्चा।
रहे सुखों को लील, सदा से सूखा- वर्षा।।

अशोक जैन

विदुर फिर कहीं नेपथ्य में श्रृंगाल बोले

शास्त्र सम्मत कर्म की व्याख्या शुरू है
नियति ने तय कर दिया है विदुर होना
सबल के सम्मुख झुके सिद्धान्त सारे
निर्बलों के भाग्य में है मधुर होना

घुटन की सीमा परीक्षा में पड़ी है
ले रहे आकार धीरज में फफोले

आस्था का प्रश्न मुँह बाये खड़ा है
शस्ति या आलोचना आशय नहीं है
शपथ लेनी राष्ट्र हित में है जरूरी
अब किसी भी त्रासदी का भय नहीं है

युद्ध करना धर्म है या पाप कोई
हर सिपाही आज अपना मन टटोले

हर परिस्थिति मौन हो सहते रहेंगे
ये विवशता,बाध्यता या प्रण नहीं है
शास्त्र के रक्षार्थ शस्त्रों का उठाना
राष्ट्र की आराधना है रण नहीं है

चल पड़े माँ भारती के सुत समर्पित
माँ खड़ी है स्नेह का भण्डार खोले

सूर्य प्रकाश मिश्र